काव्य-द्वीपक ओहि पार

(मैथिली कविता-संग्रह)

रमेश

नवारम्भ
पटना

ISBN : 978-93-82013-754

काव्य द्वीपक ओहि पार
(मैथिली कविता-संग्रह)

© समीक्षा सुवर्णा

प्रथम संस्करण : 2017
मूल्य : 200 रु.

प्रकाशक
नवारम्भ
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
मधुबनी : वार्ड न.-2, विवेक पुरम्
Email : navarambhprakashan@gmail.com
lekhakajitazad@gmail.com
मो॰- 9304349384, 08434680149,

मुद्रक
आर.के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

Kavya Dwipak Ohi Par
Maithili Poetries By **Ramesh**
Edition : 2017, Price : Rs 200/-

समर्पण

मिथिलाक दलित-समाजक नव-जागरण-चेतना
आ सामाजिक-सम्मान-संघर्ष
कें
सकारात्मक परिवर्त्तनक आकांक्षाक संग...

रमेश

काव्य-सूची

15 : छिन्नमूल
18 : भविष्यक नव-इतिहास-लेखन
20 : शान्ति-क्रान्ति
22 : अडैठी-मोड़ के तान-वितान
25 : पावर-उत्सव
29 : इजोड़िया मे सलहेस-नाच!
32 : बहुजन-सामाजिक सम्मान-संघर्ष
35 : जाठि पर ताल ठोकैत महादेब मोची
38 : घृणाक आँखि मे धधरा
44 : मानसिकता
50 : मोनक राक्षस
54 : सामूहिक समदाउन
57 : इतिहास-धारा
61 : डिगडिगिया
63 : देसी स्वाद
66 : अकास निंहारैत अन्नदाता
68 : अनचोके मे
71 : मुदा...
74 : ब्रह्म मुहूर्त्त मे बसुलीक धुन
77 : ग्रामोफोनक रेकर्ड पर अटकल सुइया
79 : स्वतंत्रता
81 : ताजीवन हमर नहि
82 : उत्थान-पतन-नियमक प्रक्रिया
84 : ...आ ओ राजनीति मे उतरि गेलाह!
87 : शाश्वत आकांक्षा
89 : तहियो, आइयो
90 : एक असम्भव दिन
91 : विडंबना काव्य
93 : समकालीन साखी
94 : मिथिला आ शंकराचार्य
98 : कालचक्र बनैत विडंबना
102 : नेपाली भुवकंफ 2015
106 : राग नेपाली
108 : तराइ-स्वर
111 : इनार मे भाङ
114 : नव वर्षक वार्षिक कार्य-योजना
119 : सियाचिन मे बर्फ सँ संवाद
124 : ब्रह्म-कुंड मे अस्थि-विसर्जन
128 : वाराणसी, कतऽ अछि मुक्ति-पथ
142 : महा-विस्फोटक महा-प्रयोग
155 : महाकविक संग सीता-गाथा-मंथन
161 : चन्दन-वन मे साँप
169 : क्षत-विक्षत-अस्मिताक महाद्वीप

रमेशक रचनाशीलता

कीर्त्तिनारायण मिश्र

आइ सँ प्रायः दू-अढ़ाइ दशक पूर्व जे पीढ़ी नव त्वरा, नव ऊर्जा, नव आक्रामकता एवं नव सृजनशीलताक सङ मैथिली नव-लेखन मे उभरल छल ओहि मे एक संभावनायुक्त हस्ताक्षर छलाह श्री रमेश।

1980 सँ अद्यावधि ओ अपन सृजन-संकल्प केँ अग्रगति दैत रहलाह अछि। अद्यावधि हुनकर प्रायः दसटा पोथी प्रकाशित भऽ गेल छनि। प्रयोगधर्मिता, जनपक्षीय चेतना, समाज सँ संवेदनात्मक सम्बन्ध, भाषा मे निम्नवर्गीय शब्दोच्चारणक प्रयोग आ गमारू ठेसीक संयोजन, सभ मिलिकए हुनक काव्य-सम्बोधन केँ नवीन रूप दैत छनि। कविता, कथा, निबन्ध, आलोचना सभ मे विधागत वैभिन्यक अछैत, रचनाकारक एहि विशिष्टता सँ साक्षात्कार कएल जा सकैत अछि। प्रत्येक रचनाक महागाथात्मक विस्तार आ शैल्पिक नवीनता, पाठक केँ मुग्ध करैत छैक।

ओ लिखब कथा आरम्भ कैलनि। समाङ, समानान्तर, दखल, तीनू कथा संग्रह वस्तुतः संरचना, शिल्पगत प्रयोग एवं दृष्यांकनक दृष्टि सँ मौलिक एवं विलक्षण छनि। ओ सामाजिक संरचना, राजनीतिक दाओ-पेंच, विषय आ घटनाक अन्तर्वर्ती यथार्थ केँ सूक्ष्मता सँ प्रतिबिंवित कैने छथि।

ओ भाषा आ चयनित विषय-घटनाक बुनाओटक लेल पात्रानुकूल मुहावरा तथा दृष्यानुकूल भाषा गढ़ैत छथि। हुनक भाषा मे ठेठ बोली (भाषा नहि)क ठेठपन भरल रहैत छनि। प्रचलित शब्द केँ फणीश्वरनाथ रेणु वला शैली मे अनपढ़-गँवार आ निम्नवर्गक बाजयवला देशज उच्चारण मे प्रस्तुत करैत छथि।

हमरा दृष्टिजे ओ नीक कथाकार होइतो कविक रूप मे विशेष सफल भेल छथि। कथा सँ बेसी प्रयोग हुनक कविता मे भेटैत अछि। प्रत्येक प्रयोग मे जाहि टटकापन सँ ओ साक्षात्कार करबैत छथि ओहि सँ हुनक वर्णित विषय-वस्तुक संवेदनात्मक संलिप्तता आ कवि-कर्मक सजगता उद्घाटित होइत अछि।

हुनक मान्यता छनि, 'सम्पूर्ण रूपें समाज आ जीवन-सापेक्ष आजुक कविता केँ जनोन्मुखी हैब बाध्यता छैक आ स्वान्तः-सुखाय, तुकबंदी,

मनोरंजनक सोचधर्मिता आदि अवधारणा पर शब्दक अपव्यय बुड़िबकपना थिक। मुक्त-छंद आ अतुकांत सँ आगू बढ़ि कऽ, ओकरा गद्यात्मक वा गद्यमय हैबाक चाही। एकर अर्थ ई नहि, जे काव्यात्मकता वा काव्य-तत्वक ह्रास हो।'

'भारती मंडन'क दशम अंकक संग जारी पुस्तिका 'कोसी घाटी सभ्यता' मे रमेशक कोसी पर सोरह गोट कविताक प्रकाशन 2004 मे भेल छल। ताधरि मैथिली मे कोसीक विभीषिका आ ओहि सँ उत्पन्न त्रासदी पर अनेक कविक कविता छपि चुकल छल। दुश्चक्र मे फँसल विस्थापित जनताक भूख-प्यास, रोगजनित यंत्रणा, सरकारी उपेक्षाक प्रति आक्रोश आदिक मर्मान्तक काव्यांकन ओहि समय मे भेल छल। रमेश सामूहिक आर्तनादक ओहि कोरस सँ फराक, एहि पुस्तिकाक माध्यम सँ कोसीक एकटा दहकैत दस्तावेज प्रस्तुत करैत, ओहि समय केर हृदय विदारक दृष्यांकन प्रस्तुत कैलनि। विभिन्न शीर्षक सँ हुनक कोसीक भावनात्मक यात्रा, दंश बोध, आत्मवेदना हुनका कोशीक प्राकृतिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि मे लऽ जा केँ ओकर अंतर्विस्फोटी राजनीति सँ साक्षात्कार करबैत छनि। ओ कोसी कथा केँ बिम्ब, प्रतीक आ फेन्टेसीक आश्रय लए ओकरा महागाथात्मक स्वरूप दैत छथि। हुनक चेतना कोसीक अन्धकार मे विद्युत्जिह्व राजनीति केँ रात्रि-यात्रा करैत देखैत छनि। ओ देखैत छथि लुटेरा-गुण्डा, भ्रष्ट अफसर आ सत्तासीन राजनेता केँ हवाइ निरीक्षण, नौका-विहार कए आनन्दोत्सव मनबैत आओर राहत कैम्पक नेपथ्य मे विस्थापित तथा सर्वहाराक दारुण विलाप होइत। ओ भीतरघाती राहतिया नेता तथा प्रशासनक दुश्चक्र मे फँसल लोक केँ मरसिया गायब छोड़ि प्रतिरोध मे बज्रदंड उठा प्रतिकार करैत देखबैत छथि। ई कविता समूह रमेशक कवि-व्यक्तित्वक रचनात्मक उपलब्धि थिक। रमेशक कविता मे वैश्विकताक संग-संग आञ्चलिकताक विस्मयकारी उपस्थिति अछि। पारस्परिक बिंब, प्रतीक, रूपकक अर्थ हिनका लग बदलि जाइत अछि। ओ भाषिक ऋजुता शब्दक गमैया उच्चारण आ वक्रोक्ति सँ संस्कारित भऽ नव भाषा गढ़ैत छथि। हुनक प्रत्येक कविताक वस्तु-विधान, रूप-विधान आ शिल्प-विधान एकटा नाटकीयता एवं वक्रोक्तिपूर्ण लाक्षणिकता लेने रहैत छनि।

हिनक गद्यात्मक कविता सभ चित्रात्मकताक कारण आकर्षक भऽ

जाइत अछि। ओ 'सदानीरा-तट पर किलोल करैत पंछीक झुंड' केँ देखैत छथि आ कलाक माटि मे विहानक बीज केँ अँकुरा दैत छथि। 'सिंगरहारक कोखि मे भारहीन स्वभावक हाइड्रोजन सँ निर्माण भऽ रहल अछि/अनगिनत सूर्यक/तीरा आ गेना समाजक तानी-भरनी मे/अन्तर्निहित तनावक संलयन भऽ रहल अछि, हीलियम जकाँ।'

प्रकृतिक कोखि सँ विज्ञानक निःसृति देखा, रमेश एकदिस सौन्दर्यबोधक रूपक ठाढ़ करैत छथि, तऽ दोसर दिस मानव, प्रकृति एवं विज्ञानक सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व स्थापित करैत छथि। एहि सामंजस्यक संग प्रकृतिक पुरुष-रूपान्तरण करैत छथि– 'प्रकृतिक प्राकृतिकरणक उपरान्त, मनुक्ख बनाओत पुरुषक प्रतिरूप आ तकर प्राण-प्रतिष्ठा, दिन-राति एक कऽ देत साहित्य, विश्वकर्मा जकाँ... ई पुरुष रूसो जकाँ प्रकृति-प्रेमी हेताह/हिनका भूख लगतनि मार्क्स जकाँ आ कामेच्छा फ्रायड जकाँ/हिनक संत-स्वभाव बुद्धक सीमा टपत... ई पुरुष समताक स्तर पर दाम्पत्य भोगताह आ प्रकृति-कामायनीक संवेदना सँ सराबोर रहताह।'

रमेशजी द्वारा निर्मित ई 'क्लोन' पुरुष जँ रूपाकार ग्रहण करत तऽ ओ काल्पनिक संरचनाक जाहि मनोमय संसारक रचना करत ओ (जैविक-विकास) फेन्टेसी अथवा स्वप्न लोकक वस्तु हैत आ कि वास्तविक जगतक यथार्थ हैत? मानव विकासक जीवन परम्परा केँ ओ कोन रूप देतैक?

हमरा जनैत कविक ई 'नोस्टेलजिक एप्रोच' वर्तमानक प्रति असंतोष एवं आत्मविभाजन सँ उत्पन्न घृणा-जुगुप्साक प्रतिक्रिया थिक। कवि अपन स्वप्नक अनुरूप उपादान जोहि, एकटा 'दिव्य पुरुष' सृजित कैलनि अछि। एहि कविता केँ हम 'स्वप्न'क रूप मे महत्व देब उचित बुझैत छी।

रमेश मानवीय संवेदना आ वैज्ञानिक सोचक कवि छथि। आक्रोश प्रतिवाद तथा प्रतिरोधक कवि। विषय खाहे जे, जीवन-संघर्ष गाम-घरक हो अथवा कस्बा-शहरक, महानगरीय हो अथवा ग्लोबल ओकर अन्तर्क्रिया एवं अन्तिम परिणति पर हुनक दृष्टि रहैत छनि। अभिव्यक्तिक लेल हुनका अपन शैली, अपन फॉर्मेट, अपन सम्प्रेषण कला छनि। सम्पूर्ण विश्व केँ ओ मैथिल दृष्टि सँ देखैत छथि। पारंपरिक कृषि व्यवस्था एवं मनुष्यक प्रति प्रकृतिक स्नेह-वात्सल्य पर मशीनी विकासक प्रभाव कोन तरहें पड़तैक, तकर ओ वर्णन करैत छथि–

'गहूँमक हरियरी आ ठोर परहक मुस्की हेरा जैत/कारी खकसियाह जहरदानाक संताप सँ/पुबारि बाधक चरिकठबा मे ठाढ़ धू पर बीट करत चहड़ा चिड़ै/रामनरैनक टी. भी. सँ निकलल मनुक्ख, जजात केँ करत लसौना-लसौना।... लोहक मनुक्ख बनि जायत सबसँ बेसी बुधियार पूत/बतहा हाथी जकाँ झूमि कऽ ओ घोषणा करत/ब्रह्माण्डक निस्सीमताक अंतक/प्रकृतिक स्नेह-वात्सल्य आ सृजनधर्मिताक अंतक... फूको शैली मे, पाँचजन्य फूँकि कऽ!

'बाबागीत' शीर्षक कविता मे 'यात्री' जी पर हुनक शब्द-चित्र यात्रीजीक सम्पूर्ण व्यक्तित्व केँ पाठकक दृश्य पटल पर आनि दैत छैक। मिथिला मे बीसम शताब्दी, गाम, बजार आदि कविता मे ओ विविध विषय केँ अपन विलक्षण शैली मे, जनग्राह्य तथा बहुअर्थी बनबैत छथि।

हुनक गद्य कविता मे, चमत्कारिक प्रयोग, नष्टेलजिक एप्रोच (उदाहरण-कीड़ी, आदिम राग आदि कविता) पारम्परिक प्रतीकक देशज रूपान्तरण, समाज-सापेक्ष दृष्टिकोण, जनपदीय विडम्बनाक चित्रांकन कए, गद्य केँ आस्वाद्य एवं प्राणवन्त बनबैत छथि। गद्य कविताक विकास मे हुनक योगदान महत्वपूर्ण छनि। 'समवेत स्वरक आगू'क प्रायः सभ कविता, पारम्परिक तथा समकालीन कविताक समक्ष विषय-वस्तु, शैली आओर अभिव्यक्तिगत चुनौती ठाढ़ करैत अछि, हुनका प्रयोगधर्मी, प्रतिभावान एवं परिपक्व रचनाकारक रूप मे उल्लेखनीय बनबैत अछि।

सौजन्य : मिथिला-दर्शन

कोलकाता

अंक : मार्च-अप्रील 2015

रचनाकार रमेश

केदार कानन

रमेशक चर्चा होइते हमरा कथाकार ललित मोन पड़ैत छथि? अपना भीतर तकैत छी तऽ लगैत अछि जे हमर स्मृति मे बसल ललितक फोटो आ रमेशक चेहरा मे बहुत साम्य अछि। वैह औंठिया सन केश, पतरकी ठोर पर विराजित मुस्की। चेहराक बान्ह-काट सेहो मिलैत जुलैत...। रमेश केँ जखन पहिले बेर देखने रही, तखन अनायासे हमरा भीतर ललितक फोटो उगि आयल छल...।

इतिहासक गंभीर छात्र रमेश अथक संघर्ष सँ अपन पढ़ाई पूरा कयलनि, बेरोजगारीक दंश भोगलनि, किछु दिन व्याख्याता रहलाह आ दरभंगा-मधुबनी-पटना-बोकारो-धनबादक सांस्कृतिक मंच पर देखाइत रहलाह। अनवरत... अपन यात्रा पथ पर एकाकी, मुदा सदैव आगू मुहेँ... सदैव आगाँ बढ़ैत...।

समय बदलल, करौट फेरलक आ ओ व्याख्याताक बाद बिहार प्रशासनिक सेवा मे अयलाह, जीवनक एक निश्चित महार पर। मुदा संघर्ष पथ एखनो ओहिना कंटकाकीर्ण...। जेहन सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था अछि, ताहि मे सुख शान्ति कतय? झोंकाइत रहू हे मोन, हमर अहाँक, हुनक आ रमेशक... दुनियाँ एहिना चलि रहल अछि, चलैत रहत...। अपन सम्वेदना केँ भोथ करैत रहू आ सौंसे दुनियाँक रोग-भोग, शोक-दुख, चिन्ता-व्यथा आ झंझटिक बीच पड़ल छटपटाइत रहू...।

किछु नव करबाक, नव ढंगे सोचबाक आग्रही रमेशक मोन मे अनेक-अनेक योजनाक टूसी पनुगैत रहैत छनि आ से पल्लवित-पुष्पित होइत रहैत अछि, आकार ग्रहण करैत रहैत अछि– योजनाकेँ जावत ओ बहस धरि पहुँचा नहि देताह, हुनका चैन कहाँ? सदति बेचैन रमेश किछु सार्थक करबा मे विश्वास रखैत छथि...।

सभक खोज-पुछारि, सभ सँ नेह-छोह... मुदा परम्परावादीक प्रति, पुरने गीत केँ गबैत रहयबलाक प्रति रमेश विद्रोही छथि, आदिविद्रोही...। एहि मे कोनो समझौता नहि, एहन कोनो प्रकारक समझौता मे हुनका

विश्वास नहि छनि...। ओ अपन देह झाड़ि लेताह, अहूँकेँ झाड़ि देताह, समझौताक प्रश्न पर...।

मेंहथ सँ अपन अनथक यात्रा शुरू कयनिहार रमेश कोशी-अंचल मे बहुत दिन रहलाह। जा रहलाह, सौंसे कमिश्नरी केँ अपन सक्रियता सँ अपन योजनादि सँ आन्दोलित कयने रहलाह... खोंचाड़ैत रहलाह, सूतल अग्रज लेखक सभ केँ फौज तैयार करैत रहलाह। नव-नव लेखकक, से, के नहि स्वीकारत? हुनक उपस्थिति मात्र सँ कतेक रास बात सहजहिं भऽ जाइ। बेरोक-टोक, बिना झंझटिक... रमेशक व्यक्तित्वक ई एक महत्वपूर्ण पक्ष थिक...

एखन मोन पड़ैत अछि, कतेक-कतेक रातिक जगरना, गरमा-गरम बहस, बहस मे जुटल कोशी क्षेत्रक लेखक सभ केँ संगोर कऽ चलयबला रमेश एहि सभ गोष्ठी आ बहसक केन्द्र मे रहैत छलाह आ बैसार केँ एकटा सार्थकता प्रदान करैत छलाह... मोन तऽ बहुत रास चीज पड़ैत अछि मुदा...!

मुदा, ई हम की सभ लिखि रहल छी? हमरा तँ हुनक रचना आ रचनात्मकता पर गप करबाक छल...। हमरो लेल जरूरी वैह गप थिक, कारण रमेश व्यक्ति-केन्द्रित गप पसिन्न करयबला लेखक मे सँ नहि छथि. ..।

कमे समय मे, रमेशक अनेक संग्रह अयलनि-कथाक, कविताक, समीक्षाक। ओ अनेक सम्पादन कार्य सेहो कयलनि, आ से अपन-अपन क्षेत्रक मानक काज सभ थिक। सभक अपन महत्व अछि। मैथिली कथा-साहित्यक विलक्षण संग्रह कयलनि। 'एक्कैसम शताब्दीक घोषणापत्र' के नामे, 'मंडन मिश्रः मीमांसा अद्वैत समागम', सन पोथीक सम्पादन सेहो केलनि, 'ईजोड़ियाक अड़ैठीमोड़' सन मैथिली कवयित्रीगणक कविताक संकलन नहि आयल छल। तकरा पृष्ठभूमि मे रमेशे छथि– एहि आवश्यकताक अनुभव करैत, जे मैथिली मे एखनधरि एहि प्रकारक काज नहि भेल छल. .. ई सभ हुनके उर्वर दिमागक उपजा थिक।

हुनक कविता पर विचार करैत डॉ. सुभाषचन्द्र यादव कहैत छथि– 'रमेश मैथिलीक सर्वाधिक प्रयोगशील रचनाकार छथि। कथा आ कविता दुनू विधा मे ओ निरन्तर नव-नव प्रयोग करैत छथि...। नितान्त नव प्रयोग मे दुर्बोधता आ सम्प्रेषणहीनताक जे जोखिम रहैत छैक, रमेश तकर परवाहि नहि करैत

छथि आ भविष्यक प्रति पूर्ण आस्थाक संग प्रयोग मे रत रहैत छथि...। रमेश मे आक्रोश आ आक्रामकता अछि, विरोध आ व्यंग्य अछि, उपहास आ विडम्बना अछि, विवेकशीलता आ मनुष्यता केँ बचयबाक प्रयत्न अछि आ मानवक लेल उज्ज्वल भविष्यक एकटा सपना अछि। नितान्त ठेंठ आ ग्रामीण शब्दावली संगे रमेशक कविता मे मिथिलाक गाम घर लपटायल चल अबैत अछि। काव्यात्मक बिम्ब गढ़बाक प्रक्रिया मे रमेशे मैथिली केँ अनेक नव मुहावरा प्रदान करैत छथि आ ओकर व्यंजनात्मक सामर्थ्य मे वृद्धि करैत छथि।'

तहिना डॉ. शिवेन्द्र दास हुनक कविताक प्रसंग कहैत छथि– 'रमेशक कविता पहिने चमत्कृत करैत अछि, तखन प्रभावित। चमत्कारी प्रयोग पढ़बाक लेल आकृष्ट करैत अछि आ फेर धीरे-धीरे काव्य-कथ्य अपन अर्थ बुझबैत अछि। रमेश एकटा सूक्ष्म 'आब्जर्वर' छथि, मुदा ओ ओहि 'आब्जर्वेशन्स' केँ तत्काल 'रिप्रोड्यूस' नहि करैत छथि। अपन समाज, अपन संस्कृति केँ बचा लऽ सकबाक बेचैनी रमेशक कविता केँ, रचनात्मक गति दैत अछि।'

रमेशक कविता पर एहि प्रकारक अनेक टिप्पणी भेटि सकैछ जे हुनक कविता केँ बुझबाक अवगति दैत अछि। कविता हो वा कथा ओ निरन्तर नव प्रयोग करैत रहबा मे विश्वास रखैत छथि। प्रयोगक स्तर पर ओ मैथिली मे अद्वितीय छथि। कविता कोना जीवन भऽ जाइत अछि, कविता कोना अपन यंत्रणा आ आन्तरिक छटपटाहटि सँ मुक्तिक बाट तकैत अछि, कविता कोना सृजनेच्छाक उत्फुल्लता सँ डबडबाइत अछि– से बुझबाक लेल रमेशक कविताक अवगाहन करय पड़त। मुदा रमेशक कविता मे मात्र यैह टा नहि छनि, हुनक कविता मे अन्य अनेक एहन दुर्लभ वस्तुजात भेटत, जे मैथिली मे तत्काल हुनकहि टा कविता मे भेटि सकैछ।

उपभोक्तावाद, बाजारवादक निरन्तर बढ़ैत प्रभाव जीवन मे धीरे-धीरे प्रवेश करैत आ जीवन केँ माहुर बनबैत गाम-घर सँ चुल्हि-चिनबार आ खेत-खरिहान धरिक लेखा-जोखा, जीवनक ओहेन सभपक्ष सँ जूझैत, जे मनुष्य विरोधी होइत अछि, वैज्ञानिकता आ भौतिकता केँ आपस मे विलक्षण तालमेल बैसबैत, मानवीय जीवनक जटिलता आ दून्दु केँ अपन तार्किक अन्विति सँ सोझरबैत, अपन जीवनानुभव सँ विरल-विलक्षण कथ्य

सभकेँ ताकि-ताकि मैथिली कथा केँ समृद्ध आ आधुनिक बनयबा मे रमेशक योगदान रेखांकित करबाक योग्य अछि। मनुक्खक जीवन केहन संकटापन्न स्थिति सभ सँ जूझि रहल अछि, राजनीति आ ओकर षड्यंत्र कोना मनुक्ख केँ खेलौना बूझि खेलैत रहैत अछि, मानवीय मूल्यक निरन्तर होइत ह्रास अपराधीकरण आ ओहि सँ जुझैत ग्रामीण आ नागरिक जीवन एहि सभ कथा-व्यथाक अभिव्यक्ति, रमेश अत्यन्त सतर्क आ जागरूक ढंग सँ करैत छथि।

हुनक कथा साहित्य पर अपन अभिमत प्रकट करैत कथाकार अशोक कहैत छथि– 'नवम दशकक मैथिली रचनाकार मध्य ऊर्जा सँ कनकन करैत, स्नेह रखनिहार रमेश कोनो प्रकारक आडम्बर, जटिलता आ प्रदूषणक बढ़ैत हिंसा, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, कट्टरता केँ उकन्नन करबाक रमेशक सदिच्छा हुनका आकुल-व्याकुल करैए। एहि अनुष्ठान मे रमेश रचनाक पारम्परिक फ्रेम, शिल्प कसीदा कें उधेसबाक लेल विवश होइत रहैत छथि।,

ई उधेसब, ई तोड़-फोड़ हुनक रचनाक निजी पहचान बनि गेल छनि। मैथिली मे अपना ढंगक एकसर रचनाकार छथि जे आधुनिकता केँ अपन रचना संसार मे रचबैत पचबैत छथि। सुहृदय मोने पाठकक आगाँ बिलहैत छथि। ई बिलहब हमरा लेल प्रिय अछि, जखन ओ विश्वग्राम आ उपभोक्तावादक तमाम स्रोत सभक तंतु केँ अपन कविता आ कथा मे सिझबैत-पकबैत छथि आ पाठकक आगाँ विन्यास सँ भरल, बहुरंगी रूप मे परसि दैत छथि।

छिन्नमूल

अनलनिहें बेटी-रानी, सामक चाउर-खुद्दी
आ चिक्कस मड़ुआ के
बिग-बजार सँ!
अल्हुआ आ सुथनी, भेटलनिहें सिटी-मॉल मे
से सुआदि रहल छी बेंगलुरू मे,
मिथिला केँ!
दूध-अल्हुआ गूड़ि-गूड़ि
चम्मच सँ लपालप बाबाक दुलार...
जा रहल छी गिड़ने, स्मृति-मातल!
मैयाँक आवेस, लपालप!...
चम्मच सँ सामक खीर!
सोहल-सुथनी मे काँटा भेंसि,
लपालप... नानीक सिनेह-युग केँ।
सुरपेटने जा रहल छी, बैंगलोर मे–
...सामक खुद्दीक खीर!
मुदा आहिरेबा!
बैंगलोर मे हम साम केँ,
गिरने जा रहल छी
कि अपन गाम केँ
गिरने जा रहल छी?
ई पेंट मे गाँथल बेल्ट केँ
हम धोतीक ढट्ठा जकाँ,
किए बान्हि रहल छी, चौड़ कऽ
डँड़कस-स्मृति-मातल, बैंगलोर मे?

जा...रे जा...!
पहिरने छी, ब्रान्डेड कम्पनी के टोपी?

आ उड़ा रहल छी, पाग पर बैसल माँछी?
हे भगवान्! ई की भऽ रहल अछि हमरा?
हे ग्राम-देवता! हे स्थान-देवता!
हे कुलदेवता!
हम किए छिछिया रहल छी–
कोरमंगला-बोमनाहल्ली मे
तिलकोरक पातक खोज मे?
अरिकोंछक पातक खोज मे हम–
पार्के-पार्के किए बौआ रहल छी
मंगलमपल्ली-बनरघट्टा रोड मे?
रंग-विरंगक घास आ
फूलक बगान मे, भेटत हमरा–
थोड़बे करमीक साग?
बेंगलोरक चिकेनवला 'मोड्यूलर
किचेन' मे– अरिकोंछक चक्काक मोह?
एखन हम 'मोड्यूलर किचेन' मे छी
कि भनसा-घर मे भाइ?
हम पटुआक साग मे जमाइनक छौंक
मारि रहल छी
कि लगा रहल छी 'तड़का'
'दाल-मखानी' मे?
हे राम!
हम तऽ 'डालनाक' मोह मे–
'मिक्स-भेज' केँ किदन बना देलिऐ?
हे कुलदेवी माता, दक्षिणेश्वरी-काली!
ई हमर स्मृति-चेतना छी?
कि छी स्मृति-दोष?
ई हमर संस्कृति-चेतना छी?
कि छी जड़-संस्कारक व्यामोह?
स्मृति आ अवसादक 'मिक्स-भेज' खा कऽ

हम कोना बिसरि सकै छी—
दियाद द्वारा बाँसक बीट उकन्नन?
बिसरब कोना, औछन-मॉल मे?
इसकुल परहक पंचैती,
जे पठा देलक बंगलुरू?
एकटा 'वन बी.एच.के.' मे बन्द
असगर
हम कऽ रहल छी लुरू-खुरू!
आ बैंगलोरक सामक खीर
पठा देलक अछि गाम?
हमर अप्पन कोन छी ठाम?
हम छी कतय एखन भाइ?
कने ठीकम-ठीक हिया कऽ
कहू तऽ हमरा भाइ?
हम एखन स्मृतिक दर्द केँ
सुआदि रहल छी?
कि सुना रहल छी अहाँ केँ—
अपन मूलोछिन्न हेबाक, दर्द-कविता?
हम अपन नातिनक सोहर गयबा लेल
आयल छी बेंगलोर?
कि गामक समदाउन गयबा लेल?
कने ठीक-ठीक कहू तऽ हमरा भाइ?

•

भविष्यक नव-इतिहास-लेखन

संथाल-टोली बनि गेल अछि
शबरी टोल, कि बिरसा-मुंडा टोल!
मुशहरी, बनि गेल अछि कतहु
दीना-भदरी टोल
तऽ कतहु गहील-टोल!
चमरटोली, बनि गेल अछि
कतहु रविदास-टोल
अथवा कतहु संत रैदास टोल!
दुसधटोली बनि गेल अछि
राजाजी टोल, सलहेस टोल कतहु!
गुअरटोली बनि गेल अछि, लोरिक टोल!
मालि केँ टोल बनि गेल अछि
कुसुमा मालिन टोल! जोलह-टोली बनि गेल
अछि कबीर सैहैब टोल! तक्थी लागल कतहु
आल्हा-रूदल टोलक
तऽ कतहु मियाँटोल बनल
नवी टोल, अली टोला आ हुसैन-टोली!
हजामटोली बनि गेल अछि
अम्बेदकर कि कर्पूरी-टोल!
कतहु महात्मा-गाँधी टोल
तऽ कतहु डॉ. लोहिया-टोल!
हजारो टोल-गाम केँ एखनहुँ
लागल अछि छटपट्टी!
इतिहासक भूल-सुधार
कि सामाजिक मान-सम्मानक
आकांक्षा सँ गरम माथ

गरम, गाम-गामक कनपट्टी!

नव-नव मौजा, नव-नव नाम!
नव-नव टोल, नव-नव गाम!
मान-सम्मान प्रक्रिया आब
कछमछी सँ निर्णय धरिक–
तय कऽ रहल अछि दूरी!
जे भऽ चुकल छै
नव-इतिहास-लेखनक
वर्त्तमानक मजबूरी!

•

शान्ति-क्रान्ति

पहिने मैयाँ केँ छोड़ौलक हुक्का-पिन्नी!
आ माय केँ बीड़ी, सप्पत दऽ कऽ!
तखन पिता केँ छोड़ौलक खैनी–
चुनौटी फेकि कऽ, पूजा राम!
बेटा सभ सँ ताजीवन 'बाउ हौ'
सुनैत जीतन राम केँ जखन
'बाबूजी' कहि, सोर पारऽ लगलनि
दसमाक विद्यार्थी पूजा राम!
तऽ गमकऽ लगलनि रामटोली, अपन गाम!
रमकऽ लगलनि मोन, सुनि कऽ बदलल नाम!
जीतन रामक जीवन 'धन्य-धन्य'
भऽ गेलनि! जेना ओ होथि राजा जनक
आ पूजा होइनि, हुनकर जानकी!
ओ निंहारि रहल छथि
सरकारी डिरेस पहिरने,
इसकुल जाइत अपन पुतरी, पूजा राम केँ!

...जे कऽ रहल छनि फस्ट!
साले-साल अपन किलास मे!
इसकुल सँ घुरैत मास्टर सैहैब
साइकिल रोकि कऽ, कहैत छथिन रिजल्ट
तऽ दीयऽमान सँ, गुमाने फटैत छथि,
जीतन राम! आ घरवालीक छाती
सूप सन भऽ जाइत छनि चाकर!

फीसो छै माफ आ
भेटितो छै, एसकलौरशिप!

एहेन चन्सगर, रेजी-चक्कू!
एकटा आर बेटीए दितथि
बेटाक बदला, बरू भगवान!
से बजै छथि, जीतन राम!
...आ देखैत रहै छथि
पूजा राम केँ निर्निमेष
बड़ी-बड़ी काल धरि
इसकुल सँ भेटल–
लैड़कीवला साइकिल पर,
तड़ातड़ि-तड़ातड़ि पाइडिल मारैत
तितली जकाँ इसकुल दिस उड़ैत!
एक्कहि क्षण मे उर्र!
फुद्दी जकाँ फुर्र!
जेना बिसवासे ने होइ छनि–
जे अही जिनगी मे ईहो दिन–
अपने आँखिएँ देखि रहल छथि?

...इसकुल जाइत पूजाक–
साइकिल आ ओढ़नी
उड़ैत रहै छै– एक्के रंग, हवा के संग!
वार्षिक परीक्षाक, सबसाला रिजल्ट जकाँ!
...आ जीतन राम, अपन नव इन्दिरा आवासक
सामने मे मनरेगा वला
खड़ंजा पर ठाढ़
सरकारी चापाकल के पकड़ने हैंडिल
टकाटक निंहारैत
आँखि सँ ओझल होइत
साइकिल पर उड़ैत तितली रानी
जेना मारैत पाइडिल, हवाइ जहाज मे
अपन पुतरी पूजा राम केँ... •

अडैठी-मोड़ के तान-वितान

लऽ रहल टोलक-टोल
गामक गाम, अडैठी-मोड़!
जकरा मानल गेल छल बौका,
मनभौका आ अलाय-बलाय लोकक
तथाकथित 'छोटकाक' टोल!

से जागन्त, स्वाभिमानी, परहेज करैत
बिना नोतक भोजघाड़ा सँ!

बरमहल एकादशीक प्रात भेने
पारण करैत, सरकारी अनाज सँ
रक्षा करैत, जागन्त स्वाभिमानक
लऽ रहल 'छोटकाक'
टोल आ गाम
अडैठी-मोड़!
बिहाड़ि बहुत सहजोर!
पुरुखा सबहक संघर्ष-प्रसाद
हरिजन प्राथमिक विद्यालय!
निर्भय, भोट खसाबैत
छथि, गनेसी राम!
सामाजिक स्वतंत्रताक स्वाद!
अनगनित पीढ़ीक बाद!
इसकुले पर साँझ कऽ
चलैत जन-शिक्षा-केन्द्र!
पढ़ैत धनेसरी, पढ़बैत कुशेस्सर पासवान!
खिच्चड़ि खुआबैत राधा मिसराइन!
निच्चाँ धरती मुसुकाइत,

ऊपर हँसैत आसमान!
दैत सुइया, बँटैत मङनियाँ दवाइ
आशा दीदी, संध्या झा
मुक्त करैत प्रसव-दायित्व सँ!
पंचकौड़ी रामक माय केँ
तकरे कनियाँ बिलटी राम केँ
प्रसव करबैत, पाइ दियाबैत,
सरकारी अस्पताल मे
आशा दीदी, संध्या झा, बेहाल!
बिलटी आ पँचकौड़ी राम, नेहाल!

रामटोलीक इसकुल मे पढ़ाबैत–
'छोटका लोकक' बच्चा केँ
पंचायत शिक्षिका उषा मिश्रा!
धन्य संविधानक नियम-कानून-विधान!
टूटैत वर्ण-व्यवस्थाक तान-वितान!
कनियें जे बदलल गाम!
पँचकौड़िया सँ भेल-पँचकौड़ी राम!
जहिया बनताह श्री पँचकौड़ी राम!
तहिया सामाजिक न्याय पर
ताल ठोकत गाम!
लऽ रहलै अङैठी-मोड़
'छोटका लोकक' टोल!
तऽ मचबे करत, चारू भाग अनघोल!

ठकहारा चरवाहा विद्यालय!
ठकहारा महादलित-योजना!
ने टी.भी.-रेडियो कतहु
ने वासगीत जमीन के अनमना!
ठकहारा शासन केँ

अखबारी
सामाजिक न्याय!
अपने बदौलत, आस्ते-आस्ते!
टूटैत समाज मे अन्याय!
'कोटाक' सोलर-लाइट
चकाचक गरीबक गाम!
'कोटा' के मुखियाइन!
परोपट्टा मे तेतरी देवीक नाम!
बभनटोली चौक अबर्जात
नीड़ा-चाह-दोकान,
कोनो जातिक लोकक
परचून-पान-दोकान!
तिलकोरक स्थान लैत
मुरगी, हांस केँ अंडा,
'छोटका' हाथक गटागटि पीबय
बर्फ मे राखल 'ठंडा'!

आश्रम-परम्परा, टूटैत
मुरइ टन-टन!
'बिगड़ल लोकक' पावर घटैत
तैओ ऐंठी सन-सन!
सुधरैत 'समाज' मजबूरी मे! आस्ते-आस्ते!
जागन्त स्वाभिमान, टोले-टोल!
'जड़-व्यवस्था', गर्दम-गोल!

चलू, ओइ लोकक टोल मे,
अङैठी-मोड़क हो स्वागत!
जकरा मुँह मे बोल नहि
तकरा ले होइ, करुणागत!

•

पावर-उत्सव

आँखि देखाबैत अछि–
तथाकथित 'छोटका टोलक'
करिकबी बिलाइ!
'बड़का टोलक' भुल्ली-चितकाबर
बिलाइ आ वन-बिलाड़ सभ केँ!

करिकी बिलाइ आब
नहि करैत अछि 'म्याउँ-म्याउँ!'
अपना कुल-मूलक बाघिन जकाँ,
दहाड़ैत अछि! बघनक्खा सँ छोट
नहि छै, ओकर य्यों-य्यों नह!

भुल्ली-चितकाबर बिलाइ तऽ 'आब'
गमि गेल अछि, परिस्थितिक गंभीरता!
तेँ करिकी केँ देखिते देरी
अपन प्राकृतिक 'म्याउँ-म्याउँ' करैत,
एक डेग पाछुए हँटैत
नांगरि हिलबैत
सोझे लाइन दऽ दैत अछि!

करिकी बिलाइ केँ आब
'बड़काक टोलक' केहनो-केहनो
वन-बिलाड़ सभक
नहि रहलै कोनो डर-भर!
ओकरा हरदम ध्यान रहै छै
अपन 'स्त्री-ब्रह्मास्त्र आ
सुरक्षा अधिनियमक आरक्षणक!

ओइ टोलक दू-टा वन-बिलाड़ केँ ओ
अइ बेरूका पंचायत निर्वाचन मे
छोड़ा देलक छक्का, चटा देलक धूरा!
बनि गेल अछि मुखियाइन!
आरक्षण-कोटा मे अइ बेर!
तेँ सीना तानि कऽ चलैत अछि
करिकी बिलाइ-गाम सँ बलौक धरि!
नऽ आगाँ नऽ पाछाँ
चओर डोलैत, माणिक जरैत!
लिपिस्टिक चोपकारल ठोर मे।
प्रभामण्डल सँ घेरायल
रानी मधुमाँछी बनल!

जकरा 'करिलुठबी बिलाइ'
कहै छलै, 'ओइ टोलक' लोक?
सैह आब 'ब्लैक ब्यूटी' कहि–
ठिकेदारी-नांगरि हिलबैए, ओकरा आगू!

'चें-भों' करैत ओइ टोलक
दू-दू टा दूध बिलाड़ सिंह
आ धर्म-धकेल सिंह केँ
ओ महिला-ब्रह्मास्त्र आ
सुरक्षा-अधिनियमक बदौलत
कऽ देलकनि-सइर!
पठा कऽ लाल-कोठी!
एकबाल बरै छै ओकर,
कएटा कलामी, भकसी झोंका गेलाह!
कएटा, नकली बलात्कार-काण्ड मे
हड़ी मे ठोका गेलाह!

आब ओकरा इलाका मे, दुरुस्त छै कील-काँटा!
अंगद के पैर सभ
बनल छथि, मुरइ-भाँटा!
ओइ टोलक भुल्ली-चितकबरी
बिलाइ सभ, जे उड़ैत छलि
फटफटिया-जेलो सँ नित्तह
सिनेमा-हॉल आ बजार,
तकर पेट्रोलक टंकीए, सुखा गेलै आब!
तेँ आब नै अल, नै दल,
लौड़ी लागल, बीहक टारल,
माँछी भनकैत आबै छै!
'एलेभन अप' पसिंजर सँ
दुर्गाथान!
जकर पूजा-समितिक अध्यक्षे
अछि करिकी बिलाइ
मुखियाइन!
जे मुसुकाइत तिरछी नजरि फेकैत,
बढ़ि जाइत अछि, मग सँ आगू!
ओकरा बूझल छै, बदलि चुकल छै कालचक्र!
ओकरे छै ई समय!
ओकरा कए कल्पक
'सत्ता-सुख' लेबाक
ओकर
ठानल छै पलोगराम!
कए पीढ़ीक हिसाब
केनाइ छै ओकरा बरोबरि!

तेँ आइ-काल्हि ओ
ताड़ि रहल अछि, अपना भोटर केँ!
आ क्यो 'चें' नहि करैत अछि!

अलगतै ककर कल्ला?
झीक देने अछि मुँह मे सभ क्यो!
वस्तुतः ओ की गलती करैत अछि?
ओकर सभ भोटर तऽ
गामे आ पंचायते के छै?
सभ तँ सैह केलक अछि
आइ धरि, अपना-अपनी कऽ?
तेँ, आइ-काल्हि आब...
करिकी बिलाइ आ ओकर प्रभामंडल अछि!
...आ अछि, ओकर उत्सवधर्मिता!

•

इजोड़िया मे सलहेस-नाच!

भऽ रहल अछि इजोड़िया मे,
सलहेस-नाच, सलहेस-थान मे!
मगन अछि, बारहो वरण
सराबोर अछि मंच! बड़का-बड़का एल.ई.डी.
मरकरी के दुधिया इंजोत सँ!

पूरा शुकुलपच्छे-शुकुलपच्छ
अछि, सलहेस-टोल मे!

असल मे पहिलुका पासवान-टोली
माँझ गाम के मालिकक डीह पर सँ
उपटि कऽ आबि गेल अछि–
फोरलेन एन.एच. कातक जमीन पर!
पंजाबी कमाइक परतापें,
'सलहेस-टोल' बनि कऽ!
राजाजी आ घोड़ाक संग
सलहेस-थान बना कऽ!

...से 'बड़काक' गोठ सँ निकलि
स्वतंत्र भऽ जेबाक, अछि उत्साह चरम पर!
भऽ रहल छै, पहिले-पहिल देखल सपनाक साकार
अनुभूति
सामाजिक स्वतंत्रताक!
'सलहेस-टोलक' आबाल-वृद्ध-वनिता केँ!
...से जहिना सलहेस, तहिना कुसुमा
...आ तहिना आन-आन पात्र!

मंचक कंपन! मरकरीक दुधिया इजोत एल.ई.डी.!
आ संगीतमय सलहेस-गाथा
पर बजैत थोपड़ी सँ,
धमगिज्जर चौकी-तोड़ जमि रहल अछि
इजोड़िया मे सलहेस-नाच!
...आ सलहेस-टोलक उत्साह सँ
माइक आ इलाका, गनगना रहल अछि!
देखत लोक अछिनरे नाच!
काल्हि दस बजे दिन धरि
आब कक्कर छै मजाल टोक देबाक?

...आ आइ तऽ डब्बल भऽ गेल, टोलक उत्साह!
रामजी पासवान कमीशन पास कऽ
बनि गेलाह डिप्टी-कलक्टर,
ओही टोल मे!
भोरे रिजल्ट अखबार मे निकलल,
से भरोदिन टोल मे मचल अछि अनघोल!

रामजी केँ पिता शंभू पासवान,
दिन मे देने छलाह राजा सलहेस केँ पूजा!
खुऔने छलाह जनाड़!
राजाजी केँ चढ़ौलनि, घोड़ा,
घुनेस, माला आ आवरण!
बाँटलनि बारहो वरण केँ गूआ-पान!
सौंस असामी छलिया-सुपारी!

धनि राजा सलहेस जे
टोल देखलक ई दिन!

काल्हि धरि बेरोजगार

रामजी पासवानक भेलू
पहुँचि गेल अछि, रातिये-राति,
सातम आसमान पर!

काल्हि-धरि, जे दोस-महीम
कन्छी कटै छल देखि कऽ!
से सभ आइ गुरुप बना कऽ,
रामजी केँ घेरने अछि बैसल नीचाँ मे!
...आ रामजी केँ बैसौने अछि
कुर्सी पर बलजोरी!
पूछ बढ़ि गेल अछि, रामजीक माता-पिताक!
रस तूबैए दीयऽमान सँ
रामजीक मायक मुँह सँ!
मह-मह मोहुक फूल जकाँ!
धनि राजा सलहेस!
ई सभ भऽ रहल अछि
सलहेस-टोलक, सलहेस-थान मे
सलहेस-थानक, सलहेस-टोल मे!
इजोड़िया मे होइत, सलहेस-नाचक संग!
नेहाल, रामजीक परिवार!
नेहाल, सर-समाज!
हित, दोस, महीम!
नेहाल, सलहेस-टोलक
'दोसर स्वतंत्रता'क उत्साह!
सलहेस-नाचक उत्सवधर्मिता नेहाल!
परिवर्त्तन सँ नेहाल-नेहाल!
सलहेस-टोल मे
इजोड़िया मे होइत, सलहेस-नाच!

•

बहुजन-सामाजिक सम्मान-संघर्ष

किच्छु केलनि, कतबो केलनि,
बनलाह नीक लोक कतबो
बुझलकनि तैओ सभ 'छोटके'
हुनका, अपना गाम मे!
कहै छनि 'तुलसीदास' केँ
'तुलसीया' हरदम गाम!
नहिएँ बूझय, गुण-अवगुण
धरैए पछिले नाम!
सोचलनि-शहरक समतामूलक
परिवेश मे अछि आसान!
अर्थ-सत्ता सँ भेटैत
सामाजिक मान-सम्मान!
सोचक छल, तर्क-संगत आधार!
कर्म भेल आगू-आगू,
नेपथ्य मे गेल कपार!
सोचलनि-सामाजिक सम्मानक
थिक आधार, राजनैतिक सत्ता!
आओत ओ दिन जल्दीए, जे
बान्ह सँ ऊँच हएत खत्ता!
थिक अलंकार पद, संग अबैछ सम्मान!
महत्वाकांक्षा-जन्मसिद्ध अधिकार
थिक जखन सबहक!
'छोट सँ छोट' मनुक्खक
क्यो किए करत अपमान?
सोचलनि-नागर समाजक
सम्मान पर आधिपत्य हृदयक
थिक मात्र एकटा उपादान!
एक अंश, सामाजिक-सम्मान-संघर्षक!
कचकैत खैंक निकालबाक

बात एकटा हर्षक!
सोचलनि-सम्मान-यात्रा मे,
साहित्यो, एकटा सीढ़ी!
कर्म केँ धारय, बहु-वचन!
वा समास, बहु-ब्रीहि!
थिक जकर, आदर्श-नीति,
संघर्षशीलता जड़ि प्रगतिवादक!
सत्ता-हस्तांतरण नहि थिक पर्याय
व्यवस्था-परिवर्त्तनक
से मूल-तत्व-प्रतिपादक!
सोचलनि-अपूर्ण अछि,
सामाजिक-सम्मान-संघर्ष!
भेटय जँ सामाजिक स्वीकृति
मूक-वर्ग केँ हर्ष!
हो क्षेत्रक अनुसंधान
अस्त्र, सामाजिक-शस्त्रक!
कए पीढ़ीक संघर्ष
अन्न आ वस्त्रक?
सोचलनि-धार्मिकता, जीति सकैछ हृदय
स्नेह-सौजन्य सवर्णक!
समरसताक भाव शाश्वत हो!
अपन-पराड़क भाव
ने वर्णक!
क्षमाशीलता थिक
बड़प्पन सक्षमता, पुरुषार्थ!
पवित्रीकरण मानसिकता केर
दुनू दिसका अर्थ!
सोचलनि-जाति-विषमता-उपनाम,
सवर्ण-अवर्ण
थिक विभेद केर मूल!
'वर्ण-व्यवस्था' थिक, अस्पृश्य!
आरक्षण, मोहक फूल!

मुदा चाही 'बैसाखी' एखनहुँ!
गामक-गाम -'दिव्यांग'!
सामाजिक न्यायो त' थिक
प्राकृतिक न्यायक अंग!
सोचलनि-जराओल जाय
कारी धर्म शास्त्र-इतिहास!
मुदा, प्रतिक्रिया, सृजन प्रतिक्रिया!
शृंखला, कारी इतिहास!
मानसिकता-बदली समाजक
कानून सँ नहिएँ संभव!
'नव सामाजिक शास्त्र' गढ़ब
कत्तहु सँ नहिएँ असम्भव!
गाम
सवर्णक उच्च भावना,
थिक वस्तुतः हीन-भावना!
भुखलो पेट मे, ऐंठि कऽ चलबे
जातिक, अनुचित थिक, 'अनमना'!

'वर्ण' बदलि कऽ 'वर्ग' होअय
हो चिन्तन-अनुसंधान!
लाख-कोटि वेद-व्यास-वाल्मीकि
हो, 'नव-शास्त्र-सृजन', वरदान!
जन-नायक हो, धर्म-समाजक
नायक और प्रणेता!
सबसँ निच्चाँ ठाढ़ मनुक्खक
गायक, असली नेता!
चिन्तन जीबय, चेतना जीबय,
जीबय सम्मान-संघर्ष!
अर्थ, धर्म, सत्ता सँ ऊपर
अन्त्यज-सम्मान-उत्कर्ष!

•

जाठि पर ताल ठोकैत महादेब मोची

बदलि गेल अछि,
जड़ मोहविराक अर्थ!
ठीके भऽ रहल छथि-
'बाभनक गाम' मे
'राड़ पंजियार'!
आब गोनड़ि ले' खढ़
नहि कटैत छथि 'राड़'!
बरू कतबो निकलय-
हथिया-पेट सँ जाड़!
लड़ि कऽ अनैत छथि-
बलौक सँ जनता-कम्बल!
आ रहैत छथि छाती ठोकि कऽ
जाड़क सन्मुख ठाढ़!
खाहे कतबो कंपाबय हाड़!
पूसी-मघ्घा ठाढ़!
महादेव मोची 'उधोग करैत छथि
आ अण्डायल पोठी खाइत छथि!'
बैंक सँ निकालल टेंपू उड़ाबैत छथि!
बीपीएलवला गैस-चुल्हा लेसैत छथि!
आ भुक् सँ एल.ई.डी. वला बलब
बारैत छथि अपन इन्दिरा आवास मे!
त' पिता रघुनी मोची केँ
लागि जाइत छनि, चकविदोर!
कनियाँ बिजली रानी
कतबो छनि मुँहजोर!
कहियो नहि होइ छनि इनहोर!
आब घर मे क्यो नहि छनि मुँहचोर!
मुसुकी, पचीसीक कौड़ी बनि

छिड़ियाइत रहैए
पोखरी मोहार परहक,
इन्दिरा आवास मे!
जखन गामक सवारी लऽ कऽ
मधुबनी सँ घुरैत छनि महादेव मोची
त' मारैत छथि बड़का पोखरि मे
उत्साहक पनिडुब्बा सुरकुनियाँ!
आ एक्के सुरकुनियाँ मे पहुँचि
जाइत छथि, माँझ पोखरि मे, जाठि लग!

हुनका तराटक तकैत रहै छथि,
हुनकर 'दोस'
बतहू झाक पौत्र, कारी झा!
गुटखा चिबाबैत
मुँह भभकैत!
'आउँ-आउँ! चपर-चपर' करैत!
कारी झा चकविदोर!
'जकर भाग्य मे हैत, से
अण्डायल पोठी खैत',
सोचैत, कारी झा इनहोर!
माय अङना मे तामसे अङोर!
कनियाँक आँखि मे डबडब
गौरी-पार्वती वला नोर!

महादेव मोचीक ऊर्जा सँ
कन-कन करैत
सर्वाङु शरीर,
बीते-बीत, पोरे-पोर!
ताल ठोकैत छथि, महादेव मोची
बड़का पोखरिक जाठि पर ठाढ़!
नहि छूअल जाइत अछि,
आब पोखरिक पानि!
बतहू झाक वर्जना सँ!

'धन्य-धन्य!' भेल छथि
मोहार परहक मंडिल के महादेव!
महादेव माचीक अर्चना सँ!

छाती ठोकि बजैत छथि
कारी झा सँ, महादेव मोची-
दोस! तास फेंट' मे आ देह मे
माटि लगावब' मे, छै बहुत अंतर!
दलाली सुतारऽ मे आ
पसेना चुआबऽ मे
छै बहुत अंतर!
पानि सँ पानि मे
मारि कऽ छड़पान
कूदि नहि सकैत छी!
पानि मे कूदवाक आनन्द लेल
जाठि पर चढ़ऽ पड़ैत छै!

आल्हा-रूदल जकाँ-
बजैत छथि, ताल ठोकि कऽ
माँझ पोखरि मे जाठि पर
ठाढ़ महादेव मोची!
चकचोन्ही छनि लागल
कारी झा केँ!
जेना मरि गेल होनि-
हुनकर 'बादशाह' हठात्!
महादेव मोचीक 'एक्का' सँ!
जेना टूटि गेल होनि दाँत
शिखर गुटखा के 'धक्का' सँ!
कि महादेव मोचीक
ताल ठोकवाक प्रतिध्वनि सँ!

•

घृणाक आँखि मे धधरा

घृणाक आँखिक धधरा,
कतहु होइत अछि विदेसी
आ कतहु खाँटी देसी।
आदमी नहि होइत अछि खुनियाँ।
नस्लीय आ रक्त पिपान्सु भऽ गेलए-
कट्टर घार्मिक विचारक दुनियाँ!
एकटा समुदाय दोसर केँ जीड़ैत अछि!
फेर चिरान बनि, अपनो केँ चीड़ैत अछि!

'खुनियाँ घरेन' खुनामनि केने फिरैत अछि!
घर्मक नाम पर भंजैत तलवार!
ठोकैत गोली! अपन निजी ईश्वरक।
चिचियाइत विरूदावली!
वनैया सुग्गर जकाँ आसमर्द मचबैत।
हुल्ल सँ आबैत अछि घृणा!
मनुक्ख केँ घिसियाबैत अछि!
यजीदी जकाँ! आ छकरैत-उड़ाबैत
अछि म्याँमार के हिन्दू जकाँ।
आ गाड़ैत अछि-'कब्बर' मे
मुस्लिम जकाँ, हुकहुक्की रहैत!
मनुक्ख केँ मनुक्ख नहि बुझैत अछि!
मनुक्ख केँ 'कश्मीरी पंडित' बना
मारि-खेहाड़ि कऽ छिछिया दैत अछि-
श्रीनगर सँ दिल्ली! पाकिस्तान सँ
हिन्दूस्तान! म्याँमार सँ बंगला-देस!

आततायी देसे-विदेसे

डिरियाइत अछि!
कट्टरता 'धर्मयुद्ध-धर्मयुद्ध'
चिचियाइत अछि!
कऽरे कऽरे, एक-एक समुदाय
केँ खाइत अछि!
क्यो मध्यकालीन 'जेहाद'।
थोपऽ चाहैत अछि!
क्यो पाञ्चजन्य-शंखनाद सँ।
शान्ति केँ चिर्रीचोंत करए चाहैत अछि!
एहि दुनू सँ फराक।
जे बेरोजगार, आत्महत्या करए चाहैत अछि!
तकरा जेहादी-शंखनादी, लालच देखा,
आत्म हंता-मानव-बम-जत्था मे।
भर्ती करए चाहैत अछि।
आ से केने जा रहल अछि!
समुदाय केँ समुदाय
उड़ेने जा रहल अछि!

एम्हर आस्था-धर्म-निरपेक्षतांक
वाना घेने 'भोट-बैक'
सहनशीलता केँ फुकि कऽ
उड़ौने जा रहल अछि!
वस्तुतः एक्के रंगक
होइत अछि, मानव-समाजक पीड़ा!
एक्के रंगक होइत अछि
'घृणित नजरिक' कीड़ा!
जखन कोनो परिभाषा भऽ जाय 'जड़'
लोप भऽ जाय गतिशीलताक
कमाइ केँजरिया बनि जाय, कोनो पंथ
तखन, ओकर घरसूड़क भैल छोड़ेवाक लेल,

रगड़ल जेवाक चाही झाम सँ!
भटकि जाय कोनो 'आदर्श' जखन
मानव-कल्याण-पथ सँ
ओकर कान पकड़ि
सुपथ धराओल जेवाक चाही!
धधरा 'गोघरा' सँ उठय
कि
'साबरमती एक्सप्रेस सँ!
मुजफ्फरनगर वा श्रीनगर सँ!
'कश्मीरी पंडित केँ देह सँ!
वा म्याँमारक हिन्दू के 'कब्र' सँ!
धधरा होइते अछि
जड़-आस्था आ उन्माद-प्रेरित!
सत्ताक-चपर-चपर स्वाद-प्रेरित!
दैतहिं अछि, ताप आ दाह
भितरिया अंग केँ
संवेदना केँ भाफ बना
उड़ा दैत अछि, कार्बाइन के बारूदी-
धधरा सँ! वस्तुतः घृणा के धधरा,
देसी आ विदेशी भऽ सकैत अछि
मुदा नीक आ खराब दुनू
नहि भऽ सकैत अछि!
उग्र-विचार-निःसृत धधरा
होइतहिं टा अछि खराब!
धधरा तिमूर लंग केँ तलवार सँ उठय
कि उठय, चंगेज खाँक भाला सँ
कि चीनक चीनी फँकैत-
देसी नक्सली आँखि सँ
पीड़ित हरदम होइत अछि जनसामान्य!
मनुक्खक जाति भलें साड़ी-धोती हों,

वा हो बुर्का-लुंगी
जरैत अछि धधरा सँ
उदारता!
ठठाइत अछि
कट्टरता!
वीर हो, 'फल्लां-सेना' के वा
सेनानी हो, चिल्लां-सेना के!
रक्तबीज आतंकी आ सीमा-पारक दुश्मन सँ
क्यो कहाँ करैत अछि
युद्ध?
सभ पोने पर पिटैत अछि
तबला!
अपना सीमा परहक
वीर-बताह
कुकूर जकाँ
करैए प्रतिद्वन्दीक हत्या!

खेल तुष्टिकरणक हो, कि प्रतिक्रियाक
भोट-बैंकक हो, कि चुनावी वा वैचारिक हत्याक
कोनो स्थायी डाँढ़ि नहि होइछ, मध्य मे!
मेंही डिरीर, कखनो मेटा जाइछ
अवसरवादी द्वारा, अवसर अनुकूल!
डाँढ़ि पाड़ले आ मेटाओले जाइछ
सुविधावादी-सुविधा-भोगी राजनीति द्वारा
पंचसाला नरमेघ-यज्ञ हेतु!
आ एहेन लोक सभ तं 'हमाम' मे
रहैत अछि ओहिना?
त' गाड़त कोन भीजल वस्त्र?
की मध्यमार्गी, की दहिन
आ की वाम-दल?

सभ अवसर-अनुकूल उदारवादी!
अवसर-अनुकूल अवसरवादी!
सत्य सँ त' केनाइ छै साक्षात्कार
पीड़ित आ बुद्धिवादी केँ!
राजनीतिक-संवर्ग त' होइत अछि,
फराक
एहि दुनू सँ!
ओ सत्ता भोगैत अछि आ
विषाह हवा छोड़ैत अछि!
सुपारी लैत आ दैत अछि
आतंकी-दंगा-ब्रिगैड पोसैत अछि!
आगि लहकाबैत अछि
ट्रेन उड़बाबैत अछि!
देसक सभसँ पैघ ओ-दुश्मन
मनुक्ख नहि, चरमपंथ थिक,
जकर राजनीतिक चोला
छैक उज्जर दप-दप!
ओ अजाति आ अधर्मी,
होइत अछि, रोबोट-धर्मी!
अवसरवादी आ वैचारिक विहवंसवाद
माथ चुनिकऽ निवासैत अछि!
विध्वंस लेल, विध्वंस करैत अछि!
नव-सृजन लेल, नहि करैछ, विध्वंस!
ओकर संक्रमण, वायरस जकाँ
गुणा टा जनैत अछि!
संक्रमण नहि काटल जा सकैछ, ?
तलवार सँ
नहि उड़ाओल जा सकैछ,
गोली सँ
मायावी मच्छड़, नहि भगैत

अछि, नारा आ बोली सँ!
संक्रमण केँ चाही, अपलेशन आ एन्टीबायोटिक्स!
हम सभ, रक्तवीज-उड़ीसक बाना धेने,
छद्म-चरम-वैचारिकता केँ
जनमानसक अखड़ाहा पर
सवारी कसिकऽ वा 'धोबिया-पाट' सँ
करए चाहैत छी चिन्त!
आँखि मे निवासैत घृणाक धधरा केँ
मिझाबऽ चाहैत छी
बाल्टीनक-बाल्टीन पानि सँ!
दैता-पोखरिक अगम जल मे
बजाबऽ चाहैत छी हरदा!
हरी मे ठोकऽ चाहैत छी
तगबा साँप केँ!
डेंगूक मच्छड़ केँ, तलवार सँ
नहि मारल जा सकैछ!
जोंक लेल तोपक नहि
चूनक जरूरति होइ छै!
विचारक आदंक भगेवाक लेल,
ए.सी.क ब्योंत बेकार थिक!
कलम-निर्माण-फैक्ट्रीक 'स्टार्ट-अप'
थिक, आजुक समयक मांग!

•

मानसिकता

केलकनि-हेँ प्रेम-विवाह
दिल्ली मे डाक्टर-पूत
मंदिर, प्रीत-बिहार मे!
...मचल छनि संग्राम
माघव झाक, संसार मे!
दूर्वाक्षत-वंचित वर कनियाँ!
कटै छनि उदासी, परिवार मे!

छनि अबिनखेद मुहेंठ परः
निकलल बेटा, हाथ सँ!
भऽ गेल 'अजाति'
हैत जलदाता जाट-गुज्जर! (?)
'वंशबतौड़क' बनि गेल परिभाषा! (?)
माघव, हम परिणाम निराशा! (?)

दिल्लीक डाक्टरी पढ़ाई मे
नहि छै एतबा ज्ञान?
जे ठकाइ नहि मंगनी मे?
जवानी मे कएटा सँ होइ छै अहिना!
तें की लोक नहि देखत, वामा-दहिना?
सिद्दान्त पर चलत त', दुर्घटने टा हेतै!
व्यावहारिक नहि बनत, त' आने धन' खेतै!
केनाइए छलै प्रेम-विवाह कदाच्
त' करितय कोनो बड़का जाति मे! (?)
वा टेबितय कोनो तेहेन पाटी
जाट-गुज्जर 'अजाति' मे! (?)
गनबितय कसिकऽ क्लीनिक लेल! (?)

हमर बेटा कतौ एहेन बकलेल?
जैतुक के लेत, वरे बुड़िलेल?
नाढ़रो की बदललनि?
बरोबरि के बरोबरि?

वरक मायक शिकाइतः
जोगिनियाँ मनोरथ डाहि
कऽ देलक खकसियाह!
लोकलक डाक्टर-पूत केँ!
गहूम मे मड़ुआ चितकाबर
जाटिन कारी सियाह!
के जन, जाटिन छी
कि छी जट्टिन?
नटबा नाच नचौलक
ओ छीहे नट्टिन!
कि देलक दिठिया-
हिरदे मे ललका तीर?
कतऽ भेटितै,
सोनमा सन गोर शरीर?
कोजगराक डाला, घर-भड़ी सपना!
अहिबक फड़, भड़फोड़ी सपना!
तोड़लक पलिवार, जिन्स-पेंटवाली!
कनियाँ ठुमकितय, बनारसी साड़ीवाली?
झनकबितय पायल,
चतुर्थी-घर सँ, भनसा-घर खाली!
छाबा-उधार, हाफ-पेंटवाली!
नचैए कहाँदन, डी.जे.पर डिस्को!
भगवती बचाबथि,
बच्चा जाय 'टिस्को'!

अनुजक आपसोचः
दुनू बेकती एक्के रंग डॉक्टर!
मोजर की देतनि?
बुझतनि कम्पोटर!
ऊठ त' ऊठ बैस त' बैस!
हम चली बाहर
तों किचेन मे पैस!
'भौजी' कहबनि त',
'भाभीजी' कहऽ कहती!
बॉब्ड-हेयर, ब्वाय-कटवाली
'बैकवार्डे' बुझती!
भाइ केँ ने कहियो
पयर मे तेल लगतनि!
माय केँ बेटा ले'
हरदम मोन छनगतनि!

वर-बाबूक मनो-यंत्रणाः
एकैसमो सदी मे वर्ण-व्यवस्था?
तिलक-दहेज पकड़ने
छथि बैसल बाबूजी! (?)
डाक्टरनी पुतोहु भेलनि
कोनो टा नहि माख?
धोकड़ा खाली रहवाक
रहलनि मोन मे काँट!
गोराइ-सौन्दर्य-मथने छनि, रही जकाँ
जीवनक' परिभाषा
अम्मत चुक्क, दही जकाँ
बिनु देखने पूर्वाग्रह-
साड़ीवाली नीके?
लेग्गिंग्स-बरमूडावाली खराबे?

मंदिर-विवाह फालतू?
पुरहित-बाबाक पद्धति, पालतू?
वर-कनियाँक जीवन-निर्णय केँ
खाता ने बही?
जे कहथि पुरहित बाबा
सैह टा सही?
असल बात पारिवारिक
दायित्व-प्रेम-स्वीकार!
बेटा-पुतोहु गाम आ
परिवार ले तैयार!
तखन ओकर निर्णय
अछि किए अस्वीकार?
दायित्व-स्वीकार मे नहि हो कमी,
कखनो कोनो बातों केँ
कनियों त' गमी...?
नव-कनियाँक सोचनामाः
सासुरक पंछीयो, नदारद विआह मे (?)
कुलदेवीयो केँ प्रणाम
करऽ ले' कोना जाउ?
लागत अनोन-विषनोन!
नहियों कोना जाउ?
छथि कुमार आर कुमारि
दीयर-ननदि, गाम मे।
पूरा गामक मङनियाँ करितौ इलाज!
ब्राहमणक गाम मे राखितौं घर के लाज!
करितौं कुलदेवी-पूजन
पितृऋण अंगीकार!
गोसाउनिक सिनुरहार
सोहाग गिरमलहार!
वरगामक नजरि मे, अतत्तह भऽ गेल!
नव-पीढ़ी कहाँदन जाति-पाँजि
धर्म-भ्रष्ट भऽ गेल!

कोना बाहर पढ़ाओत लोक बच्चा ?
भाभट समटै जाउ, समाप्त टाका-खेल!
घटक अभावें, बेटा सभ लेल्ह!
पड़बा केँ गेल्ह!
हाथ सँ निकलि गेल!

नव-कनियाँक नैहरक, तेसरे मानसिकता!
मैथिल-ब्राहमण-परिवार!
मुदा नहि उदार!
कट्टर संस्कार!
पूर्णअस्वीकार!
डाक्टरनी बनिकऽ, सुठाम नहि गेल!
एक्को बेर सासुर के गाम नहि गेल!
डाक्टरनी पुतोहु, दहेज के मांग?
पिछड़ल मानसिकता, इनारे मे भाङ?
उच्च जाति लऽ कऽ
धो-धो लोक चाटत?
महिला खेती ने करय-
फसल कोना काटत?
एक कमौआ, तेरह खौआ! (?)
मेहनति के ने मोल!
बैसथूड़ी मिथिला मे लागल?
ढ़िल्ला-हेरी, ओल-झोल?
खोलथि क्लीनिक दुनू बेकति
दरभंगा कि दिल्ली मे!
फंसली बेटी, संस्कृति-संकट
मिथिला केँ गुड़किल्ली मे!

दिल्ली मे, मैथिलक प्रेम-विवाह,
तेसर सहस्त्राबदी मे
काटर? वर्ण-विभेद?
एकैसम शताब्दी मे

तकर अबिनखेद?
सोच-मानसिकता एहेन?
तकरा की कहल जाय?
विवाहक एहेन परिणति?
उदासीन मनोभाव?
मानवीय सद्भावनाक
अनेरो एतेक अभाव?
एहेन परिस्थिति मे
समाज मे कोना रहल जाय?
सम्यताक एहि तरहक
विकास केँ की कहल जाय?
एहेन जीवन-काण्य-विडंबना,
केँ। कोना कऽ सहल जाय?
एकरा वक्रोक्ति कहल जाय?
रसदोष-विरोधाभास, कहल जाय?
सेहो त' काण्य-रस-अलंकार?
जीवन-रस-परिपाक
कोना नहि अंगीकार?
एहना स्थिति मे-
सहज काल-प्रवाह मे
कतबा उचित अछि, सदी-सदी
जड़-परंपरा-परिवहन के अनुप्रास?
सदी-सदी, दम्मा के
इलाज, खाली च्यवनप्राश?
होइत रहय, होइत रहय...?
कहुना चलैत रहय, बैलगाड़ीक पहिया?
बनल रहय मनुक्ख
जड़-व्यवस्थाक बहिया?

•

मोनक राक्षस

ने कलम-गाछी मे
ने बाध-बोन मे!
रछस्सा बसैए-
आदमीक मोन मे!
चिक्कन आङन,
घर-दुआरि मे-
नजरि तेरेड़ैत रहैए!
नवगछुली तकैत रहैए!

तोड़ैत समस्त रक्त-बन्ध केँ!
मनुक्खत केँ करैत
चिर्री-चोंत!

भावना केँ बहन्ना बना,
कुभावना रोपैत
विकृत वासना, उपजैए अपना मोन मे
आ अनकर घर पैसऽ चाहैए!

फट्टक-केवाड़ी-पर्दा-वाड़ी-झाड़ी...
रछस्सा केँ कत्तहु परहेज नहि!
हहाइत-फिफियाइत सभतरि-
पहुँचि जाइए
जत्तहि मादा-गंध,
लागि गेल!
मोन, सारि-सरहोजिक हथरस लेल
उताहुल! गप्प-रस लेल ललायल!
ननदोसिक मोन मे फेंच काढ़ने!

बहिनिक ननदि आ
भौजीक बहिनिक प्रति
लक् लगौने!
रगड़घस्स करैत, लोल अजबारने
मांसाहारी बगुला जकाँ हरदम-
हड़बड़ायल आ भुक्खल
अकाली कौआ जकाँ-तड़तड़ायल!
साहिल सँ-
दिठिऐल देहक, नपैत भूगोल!
छीलैत इतिहास
लोलक बसिला सँ

मोनक राक्षस ले किच्छु नहि—
भावहु-पुतोहु-मामी-भगिनी...
मित्तिन-प्रेमिका-गर्ल-फ्रेन्ड...
क्यो किच्छु नहि...
मर्यादाक साड़ा पर
करैत आसमर्द!

टी.भी घारावाहिकक खलनायक सन,
चतुर सियान
छोड़ैत चंठ मुसकान...
लाल डिम्हा नुकायल
बारूदी सुरंग जकाँ!
नक्सली जकाँ, लक्ष्य-संधान करैत
मोने-मोन मसुआइ सुआदैत
लक्षित देहक!

ऐंचाताना नजरि, झपट्टा मारैत
राहड़ि-कुसियारक खेत मे!

नव कलम केर कोमल किसलय
भकोसैत हेड़ बान्हि कऽ!
गुलाबक कोंढ़ी खोटैत,
चारि बजे भोर मे!

आब असगर नहि चलैत अछि
मोनक राक्षस! संगी छिऐ ओकर-
तामस, अहंकार, मुर्गा-दारू...
जेड़क-जेड़ शिकारी देलवंस चलबैत
महमहाइत मोहुक फूल पर!
रस सँ सराबोर
आमक मज्जर पर!
दिनों दिन बेसी खतरनाक होइत जाइत
मोनक रद्दस्सा, दाँत गड़बैत
मोलही सौफक छत्ता मे
भकोसैत परागकण,
अड़णा पाड़ा!
नीड़ा सँ मत्त, ताड़ी सँ बेमत्त
रंगदारी रिवाल्वर सँ
ठिकेदारी बाइक पर
निन्दायल सूर्यमुखी फूलक छता केँ
सुतली राति मे घिसिया कऽ
उड़ि जाइत अछि लकड़बध्धा!
रड़धुम्मस मचबैत!
चनरा लागल रहि जाइ छै, टोल केँ!
दाँतीए लागल मे, सूर्यमुखीक मर्यादा
दाउन-दाउन भऽ जाइत अछि
मकइक खेत मे! सिसोहल संवेदना,
निष्प्राण भेल भेटए, भोर मे!

तुलसी-पात आब कखनो
खोंटा जाइत अछि, असमय-कुसमय!
नियति बनि गेल अछि, प्रेम-प्रतीकक
निंधेस बनब!
वस्तुतः असंख्य भूआ
सोहरि गेल अछि, परिवेशक सर्वाङु मे!
के काटत जिम्मर आ मुनिगाक गाछ?
के ढूकत पटुआक खेत मे, हाँसू लऽ कऽ?

असल मे, मोनक राक्षस बनि गेल अछि
मानव-बम! परिवार आ समाज मे!
रस-दोषक रसाधिक्य
बनल जा रहल,
आत्म-विस्फोटक श्रृंखला!
परिवेश-हंता बनवाक लेल
रछस्साक आङुर-
रहैत अछि हरदम
जेबी मे नुकायल रिमोटक
बटन पर तैयार!
परिवेशक कोनो टा चिन्ता नहि सामूहिक!
जे फूल चढ़ल, ऐंचातानाक
नजरि पर
से गेल! लसौना-लसौना,
भऽ गेल!

•

सामूहिक समदाउन

जिनगी आ परिवार-संचालन,
टन्न बाजि गेल!
आत्म-नियंत्रण,
परिवार-नियंत्रण, टायँ-टायँ फिस्स!
व्यवस्था-नियंत्रण,
अ-व्यवस्था-नियंत्रण, टन्न बाजि गेल!
समाज आ
सरकार-नियंत्रण, टायँ-टायँ फिस्स!
जीविका आ संस्कार-नियंत्रण, टन्न बाजि गेल!
जुड़-बन्हन सँ दाम्पत्य-नियंत्रण, टायँ-टायँ फिस्स!
सच्चड़ नहि साबित भेलहुँ कत्तहु
दुर्घटना भइये गेल सभतरि!
चण्ठपना-धूर्त्तता साबित करैछ पटुता!
परिवार मे, समाज मे, सरकार मे...
जीविका-व्यवसाय-संस्कार मे...
सभतरि भइये गेल दुर्घटना!
धोइत अछि सफलता, सभ कलंक केँ कहाँदन!
सेहो नहि भेल! :भरि जीवन भेल!
चोर-सिपाही-राजा-मंत्रीक खेल!
भरि जीवनः
मूस-बिलाइ केँ चोरबा-नुक्की खेल!
भरि जीवनः
कतरा-झाड़ सँ निकलल
आप-स्वाथी-सम्बन्धीक
कादो-धुरखेल आ फुचुक्का-फुचुक्कीवला
खेल!
व्यंग्यक चौतावर गबैत!

भरि जीवनः
वर-कनियाँक भाँति-भाँतिक रंगखेल
आ झगड़ा-रगड़ावला रगड़घस्स-खेल!
भरि जीवन झगड़ा, भरि जीवन मेल!
भरि जीवनः
ओकील-जज-पुलिस
कानून केँ मोटका-मोटका पोथीवला खेल!
भरि जीवनः
कारा-योग
कालचक्रवला खेल!
ग्रह-शान्ति-औठी
कालसर्पयोग
चन्द्र-चाण्डाल-योगवला खेल!
भोग अछैत, उताने खूड़े अभोग
जाइवला खेल!

स्वतंत्रता-बचाव! दाम्पत्य बचाव!
परिवार-बचाव! समाज बचाव!
सम्बन्ध बचाव! संस्कार बचाव!
विचार बचाव! जीविका बचाव!
दुर्घटना बचाव!
राशि-राशि के लग्न-बचाव!
बचाव! बचाव! बचाव!

प्रबंधन! प्रबंधन! प्रबंधन!
दुर्घटना-प्रबंधन! बचाव-प्रबंधन!
निराकरण-प्रबंधन! भरि जीवन!

ई जीवन छल
कि साहुजीक दोकान?

ई घर छल? कि चट्ट खसैत, इन्दिरा आवासवला
सुगरक खोभाड़?
ई ओकालतिखाना छल
कि छल हमर परिवार?
ई दाम्पत्य छल?
कि छल उसरल बजार?
ई समाज छल
कि छल उथड़ा-भराड़?
ई हमर गाम छल
कि छल उपटल बिराड़?

ई जीवन अंततः छल कि भाइ?
सातो रंगक कोलाज?
'सैनिआह पिनाला' केँ मानी, यथार्थ?
कि भखरल, भट्टरंग
फीका-फीका उदासी केँ?
उदासी, रेघा-रेघा क'गाउ भाइ?
कि कानू समदाउन
हिचुकि-हिचुकि कऽ?
हम की करू भाइ?
करू त' की करू?

•

इतिहास-धारा

पवित्रा रही, सभ धाराक
करैत रही समावेश,
काल-प्रवाहा रही
बहैत रही, समयक संग!
मुकुट बनि रहैत रही
आर्यावर्त्तक भाल पर,
हिमालय आ हिन्द-महासागरक बीच!
निश्छल... कल-कल... प्रवहमान... निरंतर...

सिन्धु-घाटी सँ
देखलहुँ गंगा-घाटी धरि
एक-एक कालखण्डक सौन्दर्य आ विकृति!
न्यों पड़ैत, भू-लुंठित होइत
महान-महान साम्राज्य!
तरेगन गनैत, हा नारायण' करैत,
महा-विलास भवनक भग्नावशेष!
उत्थान-पतनक उत्कीर्ण चित्रावली!
रंगायल माटि आ तलवार!
साम्राज्यवादक शोणित भरल कलम मे!
लीखल गेल रक्त-रंजित
अनगनित महाभारतक युद्ध-पर्व
आ शान्ति-पर्व देसी-विदेसी कलम सँ!

कहियो धारा राष्ट्रवादक
साम्राज्यवादक विरुद्ध! रंगाइत पन्ना,
लाल इंक सँ! शहादत के कलम सँ!
पवित्रा रही तहिया!

करैत रही यथावत, सभ धाराक समावेशन!
कोनो समुदाय अपना मे,
कतबो रहय सशंक!
गंग-जमुन-धाराक संगम सँ
सदा सभ रहय निःशंक!
नहि उठल आङुर कहियो ककरो!
जड़िआयल कतेक सभ्यता,
कतेक संस्कृति कोकड़िआयल!
उफनायल कतेक फेन
कतेक 'धर्मयुद्ध' सेरायल!
धारा बनल उप-धारा
बान्ह सँ खत्ता ऊँच कहियो
अभिजात कहियो, दिशाहारा!
कतेक कट्टरता पचाओल,
कतेक उदारता बचाओल!

सबहक रही, काल-प्रवाहा रही!
कल-कल-निश्छल... बहैत...
आर्यावर्त्तक बस्ती-बस्ती...
लिखैत दानवी-पतन, मानवी उत्थान-कथा!
पतन राजवंशक, जनजीवनक संघर्ष-गाथा!
उत्थान गणराज्यक, गणनायकक पतन!
गबैत लोकगाथाक करुणा,
लिखैत लोक-साहित्यक संगीत!
पसेनाक आख्यान, लोक-रस निष्कलंक!

पचाओल जाति-संप्रदाय-पंथ
रीति-रेवाज-शैली आ तंत्र!
सर्वसमावेशी-परम्परा, छल मूल-मंत्र!
मुदा, जहिया 'कृत्रिम आपात-स्थिति' मे

फँसल गणतंत्र! व्यक्तिगत-स्तवन बनल,
तंत्रक मूल-मंत्र! नकली विरुदावली
उपलब्धिक गुणगान, गड़ा गेल पताल मे!
विकृत बना देल गेल आत्मा!
रच्छ रहल, भुवकंफ मे प्रकट भेल सत्य!
रहल गतिशीलता कहुना अविच्छिन्न!
जें कि एक बेर लेलहुँ फेर अडैठी-मोड़
लाल सूर्जक अरुण-किरण-आवरण-व्याख्या
रंगि देलक, पन्ना-पन्ना, पोर-पोर!
फेर बदलल गेल, प्रवाह के धारा!
अस्थिरता गँथायल सत्ता-वाण सँ
वर्त्तमान इतिहास बनैत, इतिहास सर्वहारा!
चलीसा पर चलीसा, लिखाइत दिशाहीन!
समकालीन सत्ता-विपक्ष
करैत अछि, अपना-अपना सौकर्ये,
अपना-अपना तरहक रूप-विधान!
अपना स्वार्थें शृंगार-चन्द्रमा
अपना स्वार्थें व्याख्या-दिनमान!
बोरल जाइ, मुदा, लाल रंग मे,
वा केसरिया, धानी, वासंती चोला,
मूल-स्वरूप कें सदा-सर्वदा–
बनल रहत सिरखार!
रही पवित्रा, अपना रंगक,
कलम लऽ अबैत अछि!
हमरा लए अपन साँच
बनाइये कऽ लबैत अछि!
अपना लेखनालय मे
बान्हि कऽ लऽ जाइत अछि!
पुरना पन्ना सभ कें
कुतरि-कुतरि खाइत अछि!

सत्ता-परिवर्त्तन सँ
गत्ता बदलाइत अछि!
दिन अबैए छोट-छोट
पहाड़ जकाँ राति अछि!
ओना त' कए सहस्राब्दीक
परीक्षा केने पास छी!
आश्वस्त रहू, हम शीत-ताप
नियंत्रक, इतिहास छी!

•

डिगडिगिया

डिगडिगिया... डिगडिगिया... डिगडिगिया...
आधुनिक किसान... उन्नत खेती... तरकारी खेती...
सरकारी बीया, उन्नत खाद-कृषि यंत्र!
बैंक एकाउन्ट मे डीजल अनुदान... माँटिक जाँच...
कृषि वैज्ञानिकक मङनियाँ सुझाओ!
डिगडिगिया... डिगडिगिया... डिगडिगिया...

पहिले बरख मे दुगुन्ना लाभ!
सोचलक किसान मोने-मोन!
मारू मुँह नौकरी केँ!
मूर पलटय त' नाचय साहु!
धनि फल्लां-सरकार! अइ लोक लए
पहिले-पहिल ईमानदार!
दोसर बरख मे कनियें मोन बढ़ल त'
खेते मे आँगन आ घरे मे
हरियरका रंग सँ फगुआ खेलेबाक
भेटि गेलै परमीशन-परोड़-रामझुमनी,
खीड़ा आ झिंगनी केँ...
पूँजी केँ तिनगुन्ना लाभ!
फल्लां सरकार केँ भोट देबाक सार्थकता!
जे ने करय कपार, से करय व्यापार!
उत्तम खेती, उत्तम वाण...
तेसर बरख मे त' भऽ गेल कम्माले!
भेटि गेलै सभ केँ जादूक छड़ी!
बजार मे तरकारीवला सिरिंज आ दवाइ!
काटय लागल लोक छाल्ही-मलाइ!
कोनो सरकार सँ पुछबाक
कोनो टा काज नहि!
लाज केनिहार लोक केँ कोनोटा लाज नहि!

पड़य लागल सुइया-सजमनि-कदीमा आ घिउरा मे!
तारभूज, गुर्मी आ फूटि मे... तड़ातड़ि...
रातिये-राति बच्चा फड़ होअय लागल
फूटि कऽ जुआन! पूँजी के पंचगुन्ना नफ्फा!
डंका बाजि गेल, तरकारी-किसान के
डिगडिगिया पूरा इलाका मे!
फल्लां गामक फल्लां महतो,
चिल्लां मियाँ, फल्लाँ चौधरी!
आधुनिक किसानी सँ नामवर-धनीक!
रचलनि इतिहास, अखबार मे, टी.भी. मे!

नाम गेलै पटना आ दिल्ली
भेटि गेलै राष्ट्रपति-पुरस्कार!
फेर डिगडिगिया-परोपट्टा मे!

डिगडिगिया... डिगडिगिया... डिगडिगिया...
सगर इलाका मे, कैंसर-कैंसर!
पेट मे, आँत मे, लीभर मे, खून मे
कैंसर, भाँति-भाँतिक कैंसर
तरकारी, भाँति-भाँतिक तरकारी
कृषि विकास योजना... भाँति-भाँतिक!
सुइया, बजार मे, भाँति-भाँतिक!
रंग आ खाद सेहो, भाँति-भाँतिक!
गन्ध आ स्वाद सेहो, भाँति-भाँतिक
नेत आ इमान सेहो, भाँति-भाँतिक!

सरकारी योजना, प्रगति मे!
लोकक कुकुरचालि, प्रगति मे!
समाज आ सभ्यता, प्रगति मे!
प्रकृतिक चालियो, प्रगति मे!
डिगडिगिया, प्रगति आ विकास के!
परोपट्टाक विकासक डिगडिगिया!

•

देसी स्वाद

देसी सरिसोक दाप निकलै छल
नाक, कान, आँखि आ
पाँचो ज्ञानेन्द्रिय, दसो कर्मेन्द्रिय दऽ कऽ!
नहि भेटैए से स्वाद आ दाप
संकर-सरिसो मे।
मोटका संकर-सरिसो के ई हाल,
त' जी.एम. सरिसो के की हाल?
संकर मकइ आयल, त' खा गेल
देसी मकइ-भुट्टाक स्वाद!
संकर चना-बदाम आयल,
त' खा गेल, देसी चनाक
अँकुरा आ ओड़हा!
बाधे सँ बिला गेल फकड़ा
'ओड़हा-डाही, सबहक साझी!'
खजबा को बनि आयल
संकर-कटहर, त' बिला गेल,
गाछी सँ मोंछीक झक्का!
गेल खेसारी, सागक संग
झक्को लेने गेल!
दुनू आँखि केँ दबने हाथ
फकड़े बिसरि गेल!

संकर-भाँटा गेन्द बनि आयल
भेल निपत्ता देसी भाँटाक
चोखगर चोखाक स्वाद!
गेन्दवला भाँटाक पेट मे
निचैन सँ बैसल गराड़ बाजय

'सेलखी चेड़िया, नह सँ नहसूर चीरब,
हम छी रोहीदास अही मे!
जखन संकर-भाँटाक ई हाल?
त' बी.टी. बैगन केँ की हाल?
थाइलैण्डी मुङरबा माङुर आयल
त' निपत्ता भऽ गेल देसी मङुरी!
ने त' ओकरा सँ मेरचाइवाड़ी मे
भेंट होइए
आ ने कटहलवाड़ी मे!
भेंटो हैत त' पँचसैय्या पर?
रग मे दम्म कतऽ?
'आन्ध्रक टाइप' सँ छापल मिथिला
मँछहट्टाक बीते-बीत!
आलू बरोबरि माँछक स्वाद!
विदेसी सरिसो सँ पूरा बेरबाद!

गोरका आलू आयल त'
आलू बनि गेल अल्हुआ!
बैलून-साइज टमाटर छपलक
देसी छोटकी पड़ायल!
पलाँकी बनि गेल पालक त'
ठढ़िया-गेनहारी नुकायल!
देसी दाप ने, पियाजु-लहसुन मे
आँखि ने कहियो नोरायल।
सभतरि भेटय 'सब्जी-मंडी'
पेठिया-हाट उसरि गेल!
ओल सँ बेसी लोके कबकब
मेरचाइ सँ कडू निपत्ता!

स्वाद लए जीह पनिछक्का चुआबय,

लोभ-लाभ केँ रीत!
संकर नेबो ने अम्मत लागय,
पटुआ-साग ने तीत!
रस सँ उगडग मोलही-सौंफक
छत्ता भेल निपत्ता!
रोपी गाछ, तेजपातक त'
भेटय इल्वीक पत्ता!
नगर-नगर आ डगर-डगर मे,
खोजी देसी स्वाद!
संकर-संकर, हाइब्रिड-हाइब्रिड!
देसी-स्वाद बेरबाद!

•

अकास निंहारैत अन्नदाता

असमाहि चिन्ता मे पड़ल
मथाहाथ धेने गरीबहा अन्नदाता!
सड़ल गर्मी सँ भरल, सुन्न अकास मे
निहारैत
नकली, तूरक फाहा सन-सन,
टुकड़ी-टुकड़ी मेघ
पल-पल उड़ैत
बिलाइत पल-पल!
कहियो मेघ कंजूस!
महाँजन मक्खीचूस!
सपना मे सरकारी लेमनचूस!
कहियो मेघ धैनुआर!
डूबल गलल बिराड़!
किरषी पदाधिकारी हुराड़!
सब लुधियाना फिरार!
अल्हुआ लत्ती रोपी त'
वनगदहा चरि जाइ!
चना टोभी कि आलू रोपी
त' लाही लागि जाइ!
कोबी-भाँटा-ठढ़िया-गेनहारी
पाड़ा-साँढ़ खा जाइ!
कमला बाढ़ि मे धान गलैए
अदहा बाध दहाइ!
अदहा रौदी सुखाइ!
डीजल के अनुदान सँ
मुखिया 'बड़का' कहाइ!
खाद-बीज के 'किट' सँ

जनसेवक 'सुखिया' कहाइ!
टेकटर-बोरिंग के सपना, सपने छै!
दमकल-थेस्सर, सपने मे, अपने छै!
बजार-समितिक रेट पिलपिलहा,
माँटि-जाँच फुसियाही!
खेते मे कुसियार सुखाइए
राटन-डेट फुसियाँही!

सालो भरि त' माथा धूनी
रौदी हएत कि दाही?
कत्तेक सुखाओन गेल?
कत्ते अग्गों कत लाही?
कपरेटी ऋण मे गेला पिताजी,
केसीसी, फसिल, ऋण तबाही!
हर साल बेरबादी, परता नै पड़ै छै।
फोंका मुट्ठी बारह, बरकति नै फड़ै छै!
कहाँ सँ कोसल?
आ कहाँ सऽ बैंक-बचत?
बेटीक विवाह कोना,
माय-बाप निमेरा?
चिन्ता बनतै चिता
जेबै उताने-खूड़!
तखने 'किसान' कहेबै
खेबै जखने 'माहुर'!

•

अनचोके मे

कहियो टंगा जायब, अचक्के मे,
देवाल पर, कलेन्डर बनि!
संकट आनल जायत योजना बना कऽ
अहाँ केँ हएत मुदा, अनचोके मे!

कहियो सूतले मे बहि जायब,
बाढ़ि मे, रातिये-राति, अनचोके मे!
कहियो सूतले मे, मचान पर,
फरीकक गुंडा-पूत, मारि देत गोली,
देसी कट्टा सँ। बहि जायब पेमाल बनि,
मचानक फट्टी सँ, माटि पर!
लहास बनि जायत, टंकारवला धनुष,
रातिए-राति!
अचट्टी मे, कहियो दिना-दिष्टी,
मारल जायब
डकैतक पुटपुटिया
सिक्सर सँ! आओत चोर बनि,
राति मे कहियो,
जगलौं त' बनि जायत डकैत!
चिन्हलौं त'
'जय-जय सियाराम'!
एक्कोटा डकैत ने पकड़ैतै, ने
हेतै चार्जशीट! चुटकी बजबैत
केस खतम भऽ जेतै!

चलती बस मे 'तड़तड़ा' देत आतंकी!
भेटि जायत 'तीर्थयात्रा मे मोक्ष',

रातिये-राति!
टकटक तकैत रहि जेतथि,
एक दिस बाबा अमरनाथ
आ माता वैष्णो देवी, दोसर दिस!
परिवार केँ भेटत लाखो वा नहि,
अहाँ केँ जरूर भेटत
एक सय श्रद्धांजलि!
घटना सँ पूर्व, कोनो टा
नहि व्यवस्था! घटना-काल मे
पूरा अव्यवस्था!
घटनाक बाद तँ, व्यवस्थे-व्यवस्था!
फूलमाला, धूपकाठी, शीशा भराओल
फोटो! जग्गह एक हाथक, देवाल पर!

यैह भेल जिनगीक सुरक्षा!
यैह भेल सामाजिक संरक्षा!
किछु नहि हेतै, अहाँक अपराधी-डकैत के !
कारबाइन लहराबैत रहत, आतंकी-नक्सली!
जरैत रहत अहिना रोम आ
नीरो अहिना बजबैत रहत बाँसुरी!
अपराधीए बनत फेर, कोनो-टा
दलक नेता! अहाँ बाँचब, तऽ बनब
फेर, ओकरे भोटर! ने तऽ गामक
'नाटक' मे, बनब विपटा-अभिनेता!
अन्यथा, हएत अगिलग्गी, फूस घर
खपड़ैल मे! भऽ जायब सूतले मे स्वाहा!
संकट आनल जायत अराधि कऽ,
अहाँ केँ, सभ दशा, अनचोके मे!

भागवन्त हैब, तऽ बनब अखबारक खबरि!

ने तऽ ओत्तहु लागि जायत,
'ब्यूरो-चीफ' के नजरि!
सभकिछु हएत, अनचोके मे!
माथ टिकटिकिया, अनचोके मे!
टंगायब देबालो पर एकदिन, अनचोके मे!
आश्चर्यक संग! चाणकक बात छिऐ,
मौअति अबै छै हरदम कहाँदन,
आश्चर्येक संग, अनचोके मे!

•

मुदा...

सभ माय तऽ माइये छलीह
छलीह तऽ सभ माइये!
मुदा, किनको छोटका बेटा केँ
आ किनको बड़का केँ
छलनि 'बेसी मानबाक' बदनामी!

भाँति-भाँतिक विभेद करएवाली
छलीह तऽ सभ माइये!

किनको छोटकी कनियाँ केँ
आ किनको बड़की केँ
नोन पढ़ा कऽ
खुअयबाक छलनि बदनामी!
पोखरिक दाउर, इनारक लहरा पर
गुण गबैत
अदगोइ-बदगोइ करैत
छलीह तऽ सभ सासुए!

आ सासु-माय मे कहाँदन
नहिऐ टा होइत छै
कोनो टा अन्तर! की?

क्यो पौत्र केँ बेसी 'मानलनि'
तऽ क्यो नाति केँ!
क्यो मैयाँ छलीह
तऽ क्यो नानी!

मुदा नातिन आ पौत्री सँ
तऽ रहलीह दुनू उदासीने!
छलीह तऽ सभ माइये!
भेल विभेद, पौत्र-पौत्री
आ नाति-नातिन मे!
भेल विभेद, पौत्र-नाति
आ पौत्री-नातिन मे!

भेल विभेद, बेटा-पुतोहु
आ बेटी-जमाय मे!
भेल विभेद, बेटा-बेटा
आ पुतोहु-पुतोहु मे!
बेटी-बेटी मे भेल विभेद!
ककरो खुएलनि कहाँदन
सुपारी-लौंग पढ़ा कऽ!
आ ककरो मोन 'मोहलनि'
...कहाँदन, कहाँदन कहाँदन!

लांछन लगबा लए कोनो
नहि बैसल जाँच-आयोग!
मुदा तखन कतय गेल
'मातृरुपेण संस्थिता?'
जखन एक आँखि दाबि कऽ
नेति-नेतिक कयल गेल विभेद?
गेल कतय पोखरि-इनारक पूर्बासय मे
'क्वचिदपि कुमाता न भवति?'
जखन एक आँखि खसाकऽ पिपनी
माता हन्यते सुपुत्रः!

छलीह तऽ सभ माइये!

सभ माय तऽ प्रणम्ये छथि!
सासु, माय, नानी, मैयाँ...
छलीह तऽ सभ माइये!
छथि तऽ सभ माइये!
सभ माय तऽ प्रणम्ये छथि! •

ब्रह्म मुहूर्त्त मे बसुलीक धुन

चारि बजे भोर मे
नवगछुलीवला कलम मे
कनियाँक साड़ा लग बान्हल मचान
पर बैसल, पैर लटकौने
बसुली बजा रहल छथि माखन जी!
अपन विधुर जीवनक दर्द
फुकने जा रहल छथि बसुली मे
नोरक टघार बहि रहल अछि
दूबगली बसोधारा
माखन जीक
डेढ़-बड़हा आँखि सँ,
नीज चारि बजे भोर मे!

चलि रहल छनि तिथि-छाया
मासे-मासे बेलमोहनवाली कनियाँक
आ बजा रहल छथि गरीब घटक केँ
मासे-मासे बबाजी कक्का
अपन वंश रक्षार्थ!

मुदा की हएत माखन जीक स्मृतिक?
जे कहियो पसर मे चरैत
महींसक पीठ पर बैसल
बसुलीक नोरायल धुन वसोधारा
भिजबैत अछि महींसक पीठ केँ?
वा बेलमोहनवालीक साड़ा पर खसैए
नोरक बुन्द
विरहाक धुन सँ?

ब्रह्म-मुहूर्त्त मे कोइलीक कुहकब केँ
बुझै छथि बबाजी कका वंश-वृद्धिक
संयोग,शृंगार
आर माखन जी
वियोग-प्रेमक उदात्त रूप! तकर
कारण, अपन-अपन पीढ़ीक छनि
दुनू बापूतक! आ अपने कारण छनि
ब्रह्म मुहूर्त्त मे महादेव-मंदिरक
घंटी बजेवाक
संताप-सीदित माखन जीक मायक!
असल मे ब्रह्म मुहूर्त्तक एक्कहिटा
सार्वजनीन अर्थ
भैए नहि सकैछ
सभ लोकक लेल ब्रह्म मुहूर्त्तक
फराक-फराक अर्थे हएब
मनुक्खक समक्ष, जीवन द्वारा
माटि फेकब थिक!

से माटि फेकि रहल अछि कुकूर
बेलमोहनवालीक साड़ाक, दुनू पयरें!
आ डूबल छथि बसुलीक विरहा तान मे
मदहोश माखनजी!
असोथकित, वंश-व्यथित,
बबाजी कका,
चौबीसो घंटा गोमुखी मे हाथ घोंसियौने
रहैत छथि जप मे लीन!
आ ब्रह्म-मुहूर्त्त बनल अछि पर्याय,
महादेव-मंदिरक घंटीक!
कोइलीक कुहकब

आर बसुलीक विरहा-तान केर!
पनिसल्ला सँ चूबैत रहैए टप-टप पानि
बेलमोहनवालीक साड़ा पर!आर माखनजीक
आँखि आ बसुली सँ!

•

ग्रामोफोनक रेकर्ड पर अटकल सुइया

माथ मे जँ नहि शोभैत
अछि चमेलीक तेल
तऽ माथ कहाँदन छुछुन्नरिक माथ
सन मानल जाइत अछि!
नारिकेल आ आदक कोनोटा
नहि लगैए स्वाद,
तँ कहाँदन वानर-कुलक संस्कार
आ सीमा आबि जाइत अछि!
जँ स्वभावक 'चुप्पा' भेलहुँ,
तऽ विचारोक भऽ गेलहुँ 'गंभीर'!
जँ छी चंचल स्वभावक,
तऽ विचारोक भऽ गेलहुँ 'हल्लुक'!
पयर मे कहियो नहि फाटल बेमाय,
तऽ किछु भऽ जाय, नहियेट्टा बूझि
सकै छी 'पीड़ पराई'!
नहि भेलहुँ कहियो घायल
तऽ कोनो घबाहक गति कोना बुझबैक?
जे नहि भेल दुखिया कहियो संयोगवशात्
से नहिए जानि सकैए, दुखियाक दुःख!
जकरा संग जे घटना हएत कहाँदन,
सैहटा आ वैहटा बूझत
तकर असली दर्द कहाँदन!
क्यो जन्मना दलित कहाओत,
भलें पीड़ित करए असली दलित कें
क्यो जन्मना ब्राह्मण कहाओत
भलें कर्मणा हो
कर्म-घट्टू, संस्कारहीन!
सार्वजनीन अनुभूति

भेल ग्रास, भोगल यथार्थक!
जँ नाम थिक 'नयनसुख' तऽ
अबस्से आँखिक आन्हर हएब-कहाएब!
आँखिक जँ भेलहुँ आन्हर तऽ
नाम 'नयनसुख' हेबेटा करत कहाँदन!
जँ भेल नाम दुर्गादत्त, तऽ निश्चिते
माय, करैत हएत अनकर कुटान-पिसान!
कहाँदन भेल ई त्रिकाल सत्य!
जँ छी आन्हर किन्साइत
तऽ भेबेटा केलहुँ 'सूरदास' कहाँदन!
एकटकही सिक्काक चोट सँ
कखनो स्वाभिमान 'टन्न' बाजि जायत!
'सूरदास' कें, देखाइत हो, अस्सी जोजन,
अन्तर्चक्षु सँ
मुदा समाज
कहावत पर चलैत अछि!
जँ भेलहुँ बहीर, तऽ आत्मा
वंचित भेल
ध्वनि-प्रतिध्वनि सँ पूर्णतः कहाँदन!
मुदा की संवेदना, सनकिरबो-चुट्टीक शरीरक
नहि अकानैत अछि आवाज?
जँ भेलहुँ बौक, तऽ की,
जीहे मानल जायत निष्क्रिय?
की इशारा मे, सीटी सँ वेशी
तीव्र आकर्षण आ संवेदना नहि अछि?
भाइ, एना कतेक दिन, ग्रामोफोनक रेकर्ड पर
अटकल रहत, सुइया एक्कहि ठाम?
एक्कहि गीत पर?
आ दोहरबैत-तेहरबैत-चौहरबैत
रहब 'प्राचीन गीत' कें?

•

स्वतंत्रता

कनियाँ माङथि अपना प्रति
पूर्ण समर्पण, से उचिते!
सद्‌गुरु माङथि अपना प्रति
पूर्ण समर्पण, से उचिते!
कुलदेवता सँ लऽ कऽ स्थान देवता धरि,
ग्राम देवता सँ लऽ कऽ इष्टदेवता धरि,
सभक्यो माङथि अपना
अपना लेल पूर्ण समर्पण, से उचिते!
मुदा, क्यो अपन निजी स्वतंत्रता केँ
कोना बन्हकी लगा सकैत अछि?

बाल-बच्चा माँगय समय
आ, पाइक ब्याजें
पूर्ण समर्पण!
से उचिते!
मित्रगण माँगथि अपन-अपन 'प्रोजेक्ट मे'
बिना शर्त्त सहयोग-समर्थन
से उचिते!
धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-सभ
माँगय शत-प्रतिशत
पूर्ण समर्पण, से उचिते!
मुदा, क्यो अपन निजी स्वतंत्रता केँ
कोना बन्हकी लगा सकैत अछि?

सर-सम्बन्धी माँगय
'समर्पित पैंच-उधार',
'कर लो दुनियाँ मुट्ठी मे

समर्पित हेबा लेल
चिकरय बजार!
डेग-डेग पर अपना लग
समर्पित हेबा लेल
अपना हिसाबें
शिकंजा कसय सरकार!
तखन क्यो अपन निजी स्वतंत्रता केँ
कोना बन्हकी लगा सकैत अछि?

साहित्य माँगय, पूरा-पूरी समय
समर्पण, से उचिते!
ईश्वर माँगथि, अपना प्रति
जनम-जनम के पूर्ण समर्पण!
से उचिते!
समय, समाज, दुनियाँ
सभ माँगय
पूर्ण-समर्पण, से उचिते!
मुदा, सभ आदर्शक बावजूद क्यो
अपन व्यक्तिगत स्वतंत्रता केँ
कोना बन्हकी लगा सकैत अछि?

दुनियाँ करय कनियाँक समर्थन!
कनियाँ करथि, अपन स्वतंत्रताक घमर्थन!
समाज करय, अपन नियम-अनुशासनक समर्थन!
सरकार करय, अपन सत्ताक घमर्थन!
आ एहि समर्थन-घमर्थनक गंडगोल मे
क्यो कोना करय विचारल समर्थन?
वा संतुलित समर्पण?
आ एना मे क्यो अपन निजी स्वतंत्रता केँ
कोना बन्हकी लगा सकैत अछि? •

ताजीवन हमर नहि

कुमारि मे व्यभिचारी-समाजक नजरि,
कहै छल-ई हमर थिक!
सारि बनलौं तऽ बहिनोइया-नजरि,
बाजल– ई हमर थिक!
विवाह भेल तऽ वर कहलनि
ई सभदीना हमरे टा थिक!
सरहोजि बनलौं तऽ
ननदोसिया नजरि बाजल
ई हमर थिक!
जन्म लैते अपन बच्चा, कहलक
ई हम्मल छी!
मुदा जहिया सँ डाक्टरनी,
कहलनि– 'स्तन-कैंसर'!
तहिया सँ हमर अपने टा
भऽ कऽ रहि गेल!
तहिये टा सँ,
'हम्मर अप्पन' भऽ सकल!

•

उत्थान-पतन-नियमक प्रक्रिया

हुनका जीवन मे अनचोके
'साहित्यिक अटैक' भऽ गेल छलनि!
ओ धड़ाम सँ
पोथीक बिछाओन पर खसलाह!

कथाक हैन्डबैग फेकलनि!
कविताक औंठी आँगुर सँ
निकालि-निकालि
यत्र-कुत्र फेकलनि,
उपन्यासक प्लॉट लीखल बुकलेट
जेबी सँ निकालि, पत्नी केँ धड़ौलनि!
एकांकी, नाटक आ महाकाव्यक माला
गरदनि सँ बहार कऽ फेकलनि!

ओ बामा हाथें
निबंधक जाजिम बकुटलनि!
दहिना हाथें
समीक्षाक गेरुआ केँ मचोरलनि!
फेर अपने छाती मे आस्ते-आस्ते
समालोचनाक मुक्का, मारए लगलाह!
एकहक बीत फनैत
साहित्यिक विवादक धड़कन,
आस्ते-आस्ते, शान्त होअऽ लागल छलनि!
हुनका बहुमुखी प्रतिभा सँ मुक्ति
भेटऽ लागल छलनि।
ओ सर्वप्रथम हृदयहीन भऽ
'हार्ट हटैक'क खतरा, नियंत्रित केलनि!

ओ पसेना पचा कऽ
आलोचक बनि गेलाह।

लोक हुनका सँ 'डेराय' लागल छल!
आ ओ पुरस्कार मे
'हेराय' लागल छलाह!
हुनकर 'जोगाड़ प्रौद्योगिकी' जूरी आ प्रतिनिधि केँ
चकचोन्ही लगबैत छल,
वस्तुतः आब आलोचना केँ
'हार्ट अटैक' भऽ गेल छलै!
आ ओ लेखन-विमुख भऽ कऽ
भाँति-भाँतिक क्रियाकलापक
आयोजन मे
व्यस्त आ मस्त भऽ गेल छलाह।

•

...आ ओ राजनीति मे उतरि गेलाह!

निरर्थक रहनि मित्रक हाहुत्ती!
मनुक्ख जकाँ भोजन केनाइ छलनि हुनका!
मुदा से मूलमंत्र ओ ताजीवन बिसरि गेलाह!
चाहक अग्नि-स्नान मे
माँछक कुट्टा, मासुक बुट्टा
रसगुल्लाक बरखा मे!
लीभर सँ आँत धरि, भऽ गेलनि झाँझड़।
भोगक अतिवाद मे
बिछाओन धरा गेलनि!
खट्टर ककाक 'तरंग' मे,
हरिमोहन झा हेरा गेलनि!

मित्र केँ सिखौने रहथिन विवाह-पूर्व,
भाउज सभ
आ बाद मे सरहोजियो
'ओरिया कऽ खायब, अधक्की नहि बनब!
भरि जीवन काज देत, बचा कऽ राखब!'
मुदा से बिसरा गेलनि
ताजीवन ओ बीज-मंत्र!
कनियाँ केँ भऽ गेलनि बच्चादानी
आ स्तन-कैंसर धरि!
अपलेशन-पर-अपलेशन, लाखक लाख गेलनि!
जान बँचलनि
मुदा स्वास्थ्य चलि गेलनि!
कनियाँ कहिया 'चुप' सँ
'वाचाल' भऽ गेलनि,
मित्र केँ किछुओ

पता नहि चललनि!

मित्र केँ कहने रहनि
शास्त्र-पुराण
अहंकार-क्रोध-माया-मोह-शमन हेतु!
मुदा ताजीवन बिसरि गेलाह
ओ मूलमंत्र!
तें पहिने लुप्त भेल
हुनकर 'बसुधैव-कुटुम्बकम्'!
तखन नव-पुरान
सर-कुटुम्ब भेल कात!
पुतोहु केँ जेवर छीनि भगौलनि
दहेजवला केस भऽ गेलनि!
अहंकारवश बेटीक मोन बहसौलनि!
जमाय सँ तलाक भऽ गेलनि!
मित्र
जतबे अपना मे सीमित होइत गेलाह
परिवार
ततबे हुनका सँ दूर होइत गेलनि!
मित्र 'धर्म-कर्म' मे डूबि
जेवाक लेल बाध्ये छलाह!
मित्रक ध्यान चलि गेलनि,
'आइली-बाइली' होइए नै? पूछएवला पर!
'आय सँ अधिक सम्पत्तिक' मामिला मे,
चल-अचल सभटा फंसि गेलनि!
आ अर्थ-कामक अतिवाद मे
धर्म-कर्म दुनू हेरा गेलनि!
नीकपनाक प्रति उत्साहे सेरा गेलनि!
लोक कहलकनि– थेथर नहि बनू,
संतुलित रहू!

मित्र सोचलनि– हम छाहरिए मे छी!
ओ हेहर सँ थेथर
आ थेथ्थड़ सँ
थुथ्थुड़ भेलाह पहिने!
...आ तखन फेर ओ
'राजनीति' मे उतरि गेलाह!

•

शाश्वत आकांक्षा

हमरा ऊघऽ दे रे भरिया,
ओही देस मे
जतऽ नीक परम्परा ऊघल जाइ छै
भार-दौड़ जकाँ।
जतऽ संघर्ष-संदेशक भार
पठाओल जाइ छै
बसुधैव कुटुम्बकम् के!
जतऽ शाश्वत-मूल्य ऊघल जाइ छै
पीढ़ी-दर-पीढ़ी
सीकी-मौनी, मुजेला मे
संरक्षित कऽ कऽ!
ततऽ हमरा उघऽ दे रे भरिया!
अपन भूखण्डक भार
अपन कालखण्ड मे!

हमरा चलऽ दे बटोही,
ओही देस मे
जतऽ दसो दिशा गुंजायमान हो!
'चरैवेति-चरैवेति' सँ!
जतऽ कैलाश-मानसरोवरक
अस्सी कोसक परिक्रमा करैत हो
सिद्धार्थक घायल राजहंस!
जतऽ गोवर्द्धन-परिक्रमा करैत हो
मूस-काछु
आ खलनायकी, देवेन्द्रक
खढ़िया बनि, हारि मानैत हो!
ततऽ हमरा चलऽ दे बटोही अनवरत!

जोजन-जोजन
भरि-भरि दिन!
जनम... जनम...

हमरा उड़ऽ दे रे पंछी!
ओही देस मे
जतऽ रंग-विरंगक विदेशी पंछी
अबैत हो नीक जलवायुक खोज मे!
जतऽ सभटा बाझल पंछी
उड़ि जाइत हो जाले लऽ कऽ!
आ ब्याधा तकैत हो
टुकुर-टुकुर, आसमान मे!
जतऽ चिड़ै-चुनमुनीक बिना
कहियो नहि लिखल जाइत हो पंचतंत्र!
जतऽ सतुआक पानि पिया कऽ
मैनाक बच्चा सिजौलिया केँ पोसि कऽ
पाँखि बनाओल जाइत हो!
जतऽ कहियो नहि कतरल
जाइत हो पाँखि, कोनो चिड़ैक!
जतऽ नर-मादाक प्रेम,
अस्तित्व-आधारित हो!
स्वतंत्र मन-बंध
पड़बाक खोप मे!
ततऽ हमरा ऊड़ऽ दे रे पंछी!
कल्प-कल्प धरि...
ओही देस मे...

•

तहियो, आइयो

खुरुड़बटिया पर
चलै छल जिनगी,
लटैत-बुरैत... टमटम-टायरगाड़ी!
आड़िये-धूरे-एकपेरिया,
पाँव-पैदल...टुकदुम-टुकदुम...
छिट्टा-पथियावाली...
खड़हीक बोझ तर दबल-दबल...
गरदनिक नस फूलल-फूलल!
सूखल शरीर, भोगैत यंत्रणा!
भरिदिना जोन, खेसारी-मड़ुआक
बोझक संग, उघैत जिनगी...!
...आब दौड़ैत अछि मृत्यु
मुदा एन.एच. फोरलेन पर!
धानक बोझवाली, गरदा-गरदा!
पिसीमाल खढ़क बोझवाला!
दसचकिया टरक सँ
एन.एच. फोरलेन पर
उड़ैत जिनगी!
बोलेरो पिकप वैन सँ,
उड़ि कऽ खसैत...
बलौकिया अस्पताल के गेट पर!
परमुख द्वारा वृषोत्सर्ग श्राद्ध मे दागल
साँढ़ के आगाँ मे... लसौना-लसौना...
खेसारीक घास भेल...

•

एक असम्भव दिन

भरि दिन मे एकटा फोन, नहि आयल कतौ सँ आइ!
कोनो धुन नहि बाजल एकोबेर मोबाइल पर!
भरि दिन कोना, शान्ति रहल डेरा मे आइ?

देसभरि मे एकोटा सलवार-सूट, ने साड़ी
फाटल आइ!
ने गैंग-रेप भेलै, ने मारुति-रेप!
साठि सालक वृद्धा कि तीन सालक बच्चियोक
कोनो नहि अयलै खबरि...
एक्कोटा बिजनेसिया केँ नहि भेलै अपहरण!
दिन बीति गेलै, एक्कोटा सरभिसिया केँ नहि
पकड़लकै रंगल हाथें, निगरानी दस्ता!
एक्कोटा खून नहि भेलै, दिन बीति गेलै!
आश्चर्य! आश्चर्य! आश्चर्य!
चौबिस घंटा मे... कोन्नोटा अखबार मे...
एक्कोटा घोटाला के नहि छपलै समाचार!
...आ ने कोनो न्यूज-चैनेल मे... अयलै एक्को
बेर... टू जी, कॉमन वेल्थ, चारा...

अइ बातक छगुन्ता, छगुन्ता, छगुन्ता!
एहेन दिन संभव कोना भेलै?
रोजीना नियम सँ दुर्घटना होइत छलै,
आइ की भऽ गेलै?
आउ, आइ अपने सभ 'नियम दिवस' छोड़ि
'अपवादे दिवस' मनाबी!

•

विडंबना काव्य

एक

लू छै तऽ
हमरे झड़केबा लेल!
शीतलहरि छै तऽ
हमरे गलेबा लेल!
जानि नहि
कोन राज मे जनम भेल?
जीवन छै,
बपलहरि लगेबा लेल!

दू

आइ कतेक लहास खसत
'गैरमजरुआ आम' लेल!
गैरमजरूआ-'आम' जमीन
गैर-मजरूआ 'खास' भेल
आइ कतेक 'वासगीत'
मुखिया के चास भेल!
आइ कतेक बिकौआ-भोटर
परमुख के दास भेल!

तीन

आइ, लोके बे-जुबान,
जेना, जमीन बे-लगान!
आइ, तमसगीरेक करमान,
जेना, तीर्थ भेड़िया-धसान!
आइ, गामे सुन्न मसान,
जेना, सभ्यता-अवसान!
आइ चारू भर बइमान,

जेना ककरो क्यो ने तकतान!

चारि

जे हुण्ड-मूर्ख-भट्टाचार्य,
से एमेले हएत!
जे गाँजा-सोंट लगाएत
से टरेनी मे लंडन जएत!
जे गप्पक खैनी लटाएत
से चारू टाइम खाएत!
जे चिकरि कऽ लोक जगाएत
से निश्चित चोरबा हएत!

पाँच

जे अनधुन लाठी चलाएत
से 'शान्ति-दूत' कहाएत!
जे भोग मे नाक डुबाएत
बैरागी-अवधूत कहाएत!
जे धर्मक मर्म गमाएत
से विश्व-विजय मे जाएत!
जे पापे-पाप कमाएत,
से 'बाबाजी' कहाएत!

छः

जे ओगरबाहि मे जाएत
से अनके जजात खाएत!
जे डूबि कऽ पानि पीयत
एकादशीक बाप कहाएत!
जे कम्मल ओढ़ि घी पीअत
से वैतरणी तड़ि जाएत!
जे भुसकौलक टाड़ी हएत
से अगबे टका कमाएत!

•

समकालीन साखी

एक
मुखिया ठाढ़ चौबटिया पर
लेने लुकाठी हाथ!
जे घर जाड़य पड़ोसिया केँ
चलय से हमरा साथ!

दू
प्रेम पार्क मे उपजय
मॉल, भी-मार्ट बिकाय!
भक्ति करय पोलिटिशियन
साधू डिस्को गाय!

तीन
ब्वाय-फ्रेन्ड, गर्ल-फ्रेन्ड सैकड़ा,
देखि कबीरा रोय!
एम.एम.एस. वायरल करय
लभ-चैम्पियन होय!

चारि
कबिरा ठाढ़ बजार मे
दर्जन एटीएम हाथ!
पर मुद्रामोचन करय
चलय से हमरा साथ!

पाँच
बाबा आश्रम हरि मिलय
तऽ सौ-सौ आश्रम बनाय!
हजार करोड़ चढ़ावा होय
स्वर्ग कबीरा जाय! •

मिथिला आ शंकराचार्य

शंकर तऽ केवल मोक्ष दैत छथि
देह-बन्ध सँ!
जगत! केँ 'माया' कहि ठकैत छथि!
'अद्वैत-अद्वैत' रटैत छथि!
के द्वैत-अस्तित्व गछैत अछि?
के दैत अछि जीवन?
सोलहो महाजनपद-आर्यावर्त्त
हिमालय-घाटी केँ?
जीवन केँ के करैत अछि मुक्त
अनावश्यक बन्धन-जाल सँ?
के छोड़ैत अछि जीवन मे
जिजीविषा केर मीठ-रस?
शंकर तऽ केवल मोक्ष दैत छथि
देह बन्ध सँ?
'वाणप्रस्थ संन्यास' रटैत छथि!
अनेरो यायावरी करैत छथि!
'अद्वैत-अद्वैत' भखैत छथि!
एकेश्वरवादक झोंक मे
जिबिते निर्गुण गबैत छथि!
आ सगुणोक स्तवन लिखैत छथि!

ब्रह्म-अंश जीवन-जगत्
हरियर-कञ्च, मनोहर!
सुन्दर रचना, धरिणी!
तखन जगत मिथ्या केना, माया केना?
दुनू सत्य, तखन अद्वैत की?
आ द्वैत केना नहि?

जगत् सत्य, तखने 'मंडन'!
...आ अदहा खंडन!
द्वैताद्वैत-विशिष्टाद्वैतक उपयुक्तता
अपन-अपन समाज आ
जीवन
निर्णय करैत अछि!
'सर्वतंत्र-स्वतंत्र' मीमांसा करैत
मंडन, अपना ब्रह्म-सिद्धि केर
विध्यर्थवाद सँ ब्रह्म-सिद्धि धरि
जीवन बाँटथि मिथिला-मंडन,
भामती-भारती आर कुमारिल!
ब्रह्मो सत्य! जीवन-जगतो सत्य!
अदहा-अदहा दू द्वैत संयोग
अद्वैत-मीमांसा-संगम, मिथिला केर!
'शंकर' तऽ केवल मोक्ष
बँटै छथि धामे-धाम!
चारू पीठ संन्यास बँटैत अछि!
गृहस्थ-धर्मी आर्यावर्त्त मे?
पीठाधीश्वर मोक्ष बँटै छथि
जीवन-जगत अवडेरि कऽ
सम्पूर्ण आर्यावर्त्त-हिमालय-क्षेत्र मे!

जीवन केँ के मुक्त करैत अछि
अनावश्यक बन्धन जाल सँ?
जीवन मे रहैत?
योगिराज बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईं?
देह अछैत विदेह
वीतरागी
गृहस्थ-संन्यासी राजा जनक?
के दैत अछि जीवन मे जीवन?

द्वैत-अस्तित्व केँ गछि कऽ?
शंकर तऽ केवल मोक्ष
दैत छथि
देह-बन्ध सँ?
नचिकेताक आत्मा-रहस्य-मंथन
चलैत अछि, अनन्त-काल सँ!
आत्मा-परमात्माक मीमांसा-मथैत
'अमरावती-उज्जयिनीक-कालिदास' केँ,
नहि फड़िछाइत छनि
विद्योतमाक प्रश्न-जाल!
जा धरि 'वारि मथैत घृत'
बहार नहि करैत छथि
'उच्चैठक कालिदास'!
तखन फेर माहिष्मती
मंडन करैत अछि
अपन दर्शन
आ जीवन-शैली केँ!
'भावना-विवेक' आ 'विधि-विवेक' सँ
द्वैत केँ संगम करैत अद्वैत मे!
अपना केँ अक्षुण्ण रखैत मिथिला
संगम करैत उत्तर-दक्षिण केर,
दैत अछि जीवन सृष्टि-मात्र केँ
दिव्य दृष्टि सँ
दिव्य-दृष्टि से!
शंकर तऽ केवल मोक्ष दैत
छथि– देह-बन्ध सँ!
बँटने घुरैत छथि मोक्ष
संन्यास मे धामे-धाम!
शंकर तऽ केवल परकाया
प्रवेशक कला जनै छथि?

कञ्चन-काया-मर्म कामिनी–
भारती-गृहिणी जानथि!
स्व-कीया, परकीया-नायिका-मर्म तऽ
विद्याक पतिए जानथि!
राधा-कृष्णक प्रेम-द्वैत
दैत अछि, जीवन-सृष्टि केँ
प्रकृति-पुरुष केर आकर्षण, जग
दीव्य-दृष्टि से!
जीवन-रस थिक विदेह-जनपद,
सहज-भाव मे!
शेष जगत केर दर्शन,
कहना थिक अभाव मे!
शंकर तऽ केवल मोक्ष दैत छथि
देह-बन्ध सँ!
गृहस्थ-धर्मक मर्म,
बँटैत अछि मिथिला!

•

कालचक्र बनैत विडंबना

जहिया अन्तरिक्ष मे टहललहुँ
आ पयर रखलहुँ चन्द्रमा पर,
अनघोल मचल दुनियाँ मे
आ बनलहुँ अखबारक मोटका आखर,
मुदा आइ इतिहासक पोथी मे
बन्दी बनल, देने छी पटोटन
विस्मरणक अन्हार घर मे!

जहिया अन्तरिक्ष मे अधिकतम समय
बितेबाक बनलहुँ प्रतिमान
कैप्सूल खा कऽ
अनघोल मचल दुनियाँ मे
आ यान घुरैत खकस्याह भेल
ऑक्सीजन-मंडल मे आबि
बनलहुँ अखबारक मोटका आखर!
मुदा आइ बन्दी बनल
इतिहासक पोथी मे
देने छी पटोटन
विस्मरणक अन्हार घर मे!
जहिया स्वदेश सँ विदेशी भगा
जीवन्त सिद्धान्त-शस्त्र-शास्त्र सँ
लैस कऽ समाज केँ, बतौलहुँ आदर्श-बाट!
अनघोल मचल दुनियाँ मे आ
बनलहुँ अखबारक मोटका आखर!
मुदा 'अपने' सँ 'अपन' हत्या कऽ
अपने पयर तरक जमीन गमा कऽ!
आइ इतिहासक पोथी मे बन्दी बनल

देने छी पटोटन

विस्मरणक अन्हार घर मे!
जहिया बनौलहुँ प्रक्षेपास्त्र
आ परमाणु संयंत्र,
मरुभूमि मे हरियरी आ
घरे-घर बिजली अनबाक लेल
चाबस्सी देलक सरकार समाज!
अनघोल मचल दुनियाँ मे आ
बनलहुँ अखबारक मोटका आखर!
मुदा ध्वस्त भेल सभ सँ पहिने
हमरे घर प्रक्षेपास्त्र सँ!
आ अपने विद्युतविहीन घर मे
हिरासति भोगैत हम
सभ राति देखलहुँ परमाणु बम
खसैत अपना फूसघर पर!
अपने घर मे नुकेबाक आ
मरबाक संकल्प लेने हम
नुकाओल गेलहुँ, विज्ञान-पोथीक
पन्ना मे!
आ आइ,
इतिहासक पोथी मे बन्दी बनल
देने छी पटोटन,
विस्मरणक अन्हार-घर मे!

हमर उपलब्धिक सभ उदाहरण
रहि जाइत अछि, व्यक्तिगत भऽ कऽ!
समाज करैत अछि उपयोग आ
चोला उतारि फेकैत अछि, बासि बूझि कऽ!
इतिहास आ समाज चलैत रहैत अछि

अपना-अपना गतिएँ!
कला-संस्कृति-विज्ञान
अपन-अपन स्थान बना
इतिहासक पन्ना मे
वायुमंडल मे, भऽ जाइत अछि विलीन!
नहि लेल जाइत अछि प्रेरणा
सभ प्रकारक इतिहास सँ!
बहुत रास ऐतिहासिक घटना
वा विचारक
लेलो नहि जाइत
अछि संज्ञान!
सभ वर्त्तमान इतिहास नहि
बनि पबैत अछि!
अतीत बनि व्यतीत भऽ जाइत अछि!
प्रतीत हेबाक योग्यता नहि रहैछ, ओकरा मे!
जे बनियो पबैत अछि इतिहास
से पोथीए मे सुरक्षित रहैत अछि!
उतरि नहि पबैत अछि जीवन मे!
विरलेक इतिहास दोहराइत अछि!
बहुत इतिहास विस्मरण लेल
होइत अछि अभिशप्त!
तात्कालिकता भविष्यक निर्माण
कऽ दैत अछि, चटपट मे!
इतिहास आ वर्त्तमान टकाटक
तकिते रहि जाइत अछि!
इतिहास नहि बनि पबैत अछि कालचक्र!
वर्त्तमान विलीन भऽ जाइत अछि
इतिहासक गर्भ मे!
नीक इतिहासक होइत अछि
गर्भपात, बेरम-बेर!

चक्रव्यूह मे
कालखण्डक चोट सँ!
यैह विडंबना मानव-सभ्यताक इतिहास
वर्त्तमान आ भविष्यो बनि जाइत अछि!
विडंबने कालदण्ड पकड़ने
बनि गेल अछि कालचक्र!
तेँ... दुनियाँ केँ सावधान हेबाक
आ करबाक
समय आबि गेल अछि!

•

नेपाली भुवकंफ 2015

भुवकंफ, नेपालक माथ आ भारतक हृदय मे!
दराड़ि मिथिलाक सामासिक-तंत्र मे!
भुवकंफ, उसरैत जीवनक मर्म मे!

दराड़ि, नेपाली राजनय मे!
तराइ आ पहाड़ी हृदयक बीचोबीच!
दराड़ि फाड़ैत, संविधान आ जनताक बीचोबीच!
दराड़ि, हिमालय आ कैलाशक बीचोबीच!
रिक्टर-पैमाना केँ करैत नंड-भंड!

दराड़ि, दू देसक बेटी-रोटी सम्बन्धक
पीठक रीढ़ मे
डाँड़ सँ सुषुम्ना-मेरुरज्जू धरि!
दराड़ि, पारगमन-सन्धि रखबाक
आ
तोड़बाक बीचोबीच! दड़कैत बेमाय जकाँ,
नेपाल-भारतक एड़ी मे!
दराड़ि, सुगौली-सन्धि रखबाक
आ
तोड़बाक बीचोबीच! चड़-चड़ फटैत! भारतीय
मिथिला-नेपाली मिथिलाक छाती मे!
टी.बी. जकाँ टहकैत! अलकतरा सन बरकैत!

दराड़ि, पहाड़ी आ तराइक सामाजिकताक बीचोबीच!
समरसताक राजमार्ग केँ करैत छहोछित्त!
सामूहिक बलात्कारवाली 'शरीर' जकाँ
रक्त-स्नान करैत, काठमाण्डूक अग्नि-कमल!

भुवकंफ, मिथिलाक पहचान आ प्रान्त-निर्माण मे!
वाराह-क्षेत्र मे चिरक्का लगबैत भुवकंफ,
वाराह-स्वामीक न्याय मे समानान्तर
डिरीर घीचैत, जल-क्षेत्र सँ पहाड़-धरि

भुवकंफ, नेपालक तमाकुल
आ मिथिलाक चून मे!
भारतक दालि-पियाजु-तेल मे भुवकंफ!
आ नेपालक नोन मे!
भुवकंफ, विराटनगरक रंगीन बीयर-बारक
उमकैत बीयर-फेन मे! पोखराक रंगीन
हिम-गृहक
बहकैत रंगीन मिजाजी मे!
भुवकंफ, बर्फक लहरि उठबैत
चीनी गुड़किल्ली मे!
भुवकंफ, संवेदनाक संचार करैत बेदिल दिल्ली मे!
ध्वस्त टावर-राजदरबार, लोक दस हजार ध्वस्त!
दराड़ि, काठमाण्डूक राजसत्ताक अवशेष मे!
दराड़ि, नरेश-हत्याक कथा-शेष-केस मे!
दराड़ि, दलाल-सत्तावाद मे!
दराड़ि, मोचंड बहुदलवाद मे!
दराड़ि, मिथिला-आबाद मे!
दराड़ि, बेरम-बेर, भुवकंफक लहरि मे चौड़ाइत!
भुवकंफ, बेरम-बेर, अनगिन दराड़ि मे हेराइत!

बलिदान लैत भुवकंफ, भितघरिया मे
डोमनी ऋखियासनक सतमस्सू गर्भक!
भुवकंफ, लगनी कनैत
हाथड़वला जाँतक कील मे!

भुवकंफ, पनिदुद्दुरवला पेटफुल्ला छौंड़ाक पेट मे!
असमाहि चिन्ता सँ दराड़ि फटैत
बुधनीक खोंता-माथ मे
बीचोबीच दराड़ि फटैत, मिथिलापुरीक समस्त
दलित-आवासक छत मे!

दराड़ि, मुआवजाक नोट मे!
दराड़ि, गरीबक भोट मे दराड़ि!
रिलीफक चिलम-सोंट मे! दराड़ि मैथिल पाग
आ दलितक सामाजिक सम्मानक, बीचोबीच!
दराड़ि, जानकी हृदय-मन्दिरक गर्भगृह मे!
सीता वनवासक दराड़ि! अयोध्या आ जनकपुरीक,
बीचोबीच मे! दराड़ि पशुपतिनाथक,
शंकराचार्जी-नाथपंथी-उग्रास मे!
पशुपतिनाथक पंडा-सेवक-समाज मे दराड़ि!
दराड़ि, भारु आ नेरुक अर्थ-तंत्र मे!
दराड़ि, तराइ आ पहाड़ीक मंत्र मे!
भुवकंफ, घुसकबैत हिमालय केँ, छऽ इंची उत्तर!
चढ़बैत कैलासक प्लेट-पर-प्लेट, छऽ इंची ऊपर!
छऽ इंची छोट करैत, धरती केँ भुवकंफ!
दराड़ि, भुवकंफ-रोधी तकनीक मे!
विज्ञानक अनुसंधान, भुवकंफ पर होइत
प्रयोगशाला मे दराड़ि! दराड़ि, प्रकृति आ
विज्ञानक नाताक बीचोबीच!
भुवकंफ, माटि फेकैत विज्ञान केँ!
भुवकंफ, विज्ञान आ ज्योतिषीय भविष्यवाणीक
सपना केँ छकाबैत! रिक्टर-पैमाना पर
'साँप-सीढ़ी' खेलाइत!
भुवकंफ, साँपक पोआ जकाँ ऐंचि कऽ चलैत!
भुवकंफ, जटा केँ माटि फेकैत

ऐंठि कऽ चलैत जटिन जकाँ!
भुवकंफ, गूँ...गूँ...गोंगियाइत!
आतंकित करैत, मानसरोवर मे चुभकैत
हंसक जोड़ा केँ! दराड़ि फाड़ैत, हंसक जोड़ाक हृदय मे!
भुवकंफ, हूँ...हूँ... हुहुआइत, चकभाउर लैत!
गाड़ैत विदेशी पर्यटक केँ
पोखराक हिम-नद मे!
भुवकंफ, सुनामी उठबैत, सुन्न-कोसी मे!
सप्तकोसी सँ वाराह-क्षेत्र धरिक अगम जल मे!
माँछ-काछुक नीलामी मे भुवकंफ!
भुवकंफ, मानवीयताक हास मे!
दराड़ि, न्यूनतमो नैतिकताक तंत्र मे!
दराड़ि, कैलास आ मानसरोवरक बीच मे!
दराड़ि फाड़ैत, उप-महाद्वीपक सागर-हृदय,
सागर-माथा मे! किलोल करैत कञ्चन-जंघा!
हिलोड़ मारैत हिन्द-महासागर मे सुनामी!
बीस फीट ऊँच लहरि सँ!
मारैत धक्का हिमालय मे!
लोक की करत? लोक की करत?
लोक खाली कार्बन-सम्मेलन करैत रहत?
कि मलबा मे जीवाश्म बनि
भावी-पीढ़ी केँ
'विज्ञान-संदेश' बाँटैत रहत?
लोक भुवकंफ सँ पहिनहि, नढ़िया आ पंछी-झुण्ड केँ
होइत 'पूर्वाभास' पर, प्रकृति मे किए नहि जाएत?
लोक पंचतंत्रक पंछीक झुण्ड जकाँ
शिकारीक जाले लऽ कऽ उड़ि नहि जाएत?
तऽ लोक आर की करत?

•

राग नेपाली

राजाक हिन्दू-देस अतीतक,
पहाड़ी-तराइ-प्रदेश!
नक्शा सँ बिलाइत मिथि-देस!
एक खीड़ा, तीन फाँक, छहोछित्त!
अधर मे लटकल, सृष्टि विश्वामित्रक!
त्रिशंकु! सकपंज! दू पाटक बीच मे!
अजगरक दक्षिण!
खंडित 'विदेह-जनपद'
दंश भोगैत!
सोमरस-चूड़ा-माँउस पर लट्टू!

नेता ठकैत पहाड़ी केँ!
नेता ठकैत तराई वासी केँ!
करैत नस्ल-भेद
संविधानक नाम पर!
धर्म-निरपेक्ष समाजक
दलान पर!
हजारो करोड़ सँ
बनल संविधान!
दशकक-दशक सँ
नरेटी मे सकपंज, प्राण!
आगि उगिलैत
ड्रैगनक चिनगोला सँ झड़कैत,
ल्हासा-लामा केँ उपमान
दिस अग्रसर,
हरियर सूगाक हरियर पाँखि!
बर्फिल चमचम देस
पघिलैत तापमान सँ!
शीलवन्त मिथिलाक करैत शीलहरण!

उर्दीवला मंगल भुटबाक
लिबिर-लिबिर पिपनी!
छोटकी-छोटकी आँखि!
खुखरी सँ डेराबैत!
समरस समाज केँ करैत
चिर्री-चोंत!
चीनी राइफल सँ निकसैत!
कान्छा-बुलेट, थापा-छर्रा!
करैत
सिद्धार्थक कपिलवस्तु केँ भकोभन्न!
लुम्बिनी-वन केँ करैत
आली रंग सँ सराबोर!
मैरुन रंग मे कुण्डाबोर!
राष्ट्रीय राजमार्गक दक्षिणे-दक्षिण,
बहैत धेनुआइरि नदी मे
तराइक आली-रंग
भोंटगर-कुण्डाबोर!
भरि दुनियाँ मे सोर!
तराइ-इनहोर-इनहोर!
नाकाबन्दी तेल-चाउर आ नोन!
नाकाबन्दी करैला आर परोड़!
सकलदेव यादवक दू कनियाँ मे,
कान्छी-कनियाँ नेताइन बनतै!
मैथिलानी कनियाँ अलोड़-बलोड़!
पसेना बहा फुलवाड़ी पटाओल,
से भेल आइ भदेस!
संकुचित मध्य प्रदेश!
हृदय तोहर संकुचित खुखरी,
तेँ धमन-भट्ठी तराइ-प्रदेश!
खुखरीक धार मिथिला देस!
की तोर, विश्व-सन्देश?
'जय हो', मिथिला देस! •

तराइ-स्वर

अप्पन देस, पराया विधान
हे भगवान!
संकट मे सीता-सन्तान
हे भगवान!
नेता-आदंक, तराइ अविचंक
हे भगवान!
हजार करोड़क खर्चा-अर्चा
हे भगवान!
अधिकार-वंचना, चर्चा-बर्चा
हे भगवान!
छमाही आ वर्षमाही सरकार,
हे भगवान!
जनता सब तरहें लाचार,
हे भगवान!
क्यो ने ककरो सुननिहार
हे भगवान!
जनते केँ सभ धुननिहार
हे भगवान!
दर्जन-गाही प्रधान-मंत्री
हे भगवान!
सपना-खंडित तराइ-प्रदेसी
हे भगवान!
सैंडविच बनल, स्वदेशे भदेस
हे भगवान!
ड्रैगन-चिनगोला, आन्दोलन भुमगोला
हे भगवान!
फोंकचा, शान्ति-वार्त्ता-सन्तोला

हे भगवान!
थकुचा, निर्धन तराइ-टोला,
हे भगवान!
मोआवजा लॉली-पॉप, चटौला
हे भगवान!
'धनुषा' के टंकार सुनय नहि,
हे भगवान!
परजा के चीत्कार सुनय नहि,
हे भगवान!
'सद्भावना-हंकार' लिअय नहि,
हे भगवान!
समरसता-पुचकार बुझय नहि,
हे भगवान!
चुनौती-ललकार सुनय नहि
हे भगवान!
विनतीयो सरकार सुनय नहि,
हे भगवान!
उत्तर सँ स्वाभिमान बचाबू
हे भगवान!
दच्छिन सँ सनमान दियाबू
हे भगवान!
पहाड़ सँ अपमान बचाबू
हे भगवान!
जीवन-दीप तराइ मे जराबू
हे भगवान!
कए पीढ़ी केँ भूखल पेट पलेती बारय,
रोजी, दाना-पानी लाबू
हे भगवान!
खलनायक नेता केँ उघारू
हे भगवान!

बदनेती केँ उठा बजारू
हे भगवान!
विषमता-भंजन मिथिला-देसक सपना छै
आगि विकासक तुरत पजारू
हे भगवान!
राजमार्ग केँ धुआँ-कुहेसा झंपने छै
सूर्ज किरण सँ फाड़ि भगाबू
हे भगवान!

•

इनार मे भाङ

गुन-गुन-गुन-गुन-गुन-गुन
घन-घन-घन-घन-घन-घन
सूट-पैजामा-धोती-कुर्त्ता
सनकल छै, हौ बाप!
कुर्सी होइते छै भङतरहा हौ बाप!
पावर बनि गेलै भङघोटना, हौ बाप!
एकटा एलै तऽ ताड़ीए फिरी कऽ देलकै
दोसरा एलै तऽ ताड़ीयो मना कऽ देलकै
दारूए पिया कऽ लेने रहै भोट! दारूए पर 'बेन्ड' लगा देलकै!
नोटे सँ भरि लेलकै, अपन-अपन कोट! के पैघ, के छोट?
क्यो इनारे मे, आबि कऽ, भाङ घोड़ि दै छै!
क्यो इनारे केँ आबि कऽ भत्थन कऽ दै छै!
आब तऽ नेपालीयो दारु ने आबऽ दै छै!
आ ने फेनहा 'एसकाइ-वाटरे' चीखऽ दै छै!
कहै छै, नीड़ा-चखना खो!
घरवाली के पाछू-पाछू, बैग उठा कऽ
बलौको मे नै जो!
पहिने परजातंत्र मे देलकै, मनमानी केँ
पूरा छूट! चसका लगलै चखना के
जहल मे पूरा खूट!
कसि देलकै शिकंजा, ठोकि देलकै हड़ी मे!
आनि देलकै बाढ़ि केँ,
नेपाल सँ, दू घड़ी मे!
पता नहि, नेपाल सँ पानि के बाढ़ि
आबै छै कि दारु के?
आ एकरा जे मङनीएँ मे देलिऐ भोट...?
आ ई जे एलै। तऽ राता-राती

हजारी-पंचसैय्या, गंगा मे गेलै!
खलबल-खलबल-खलबल!
बनियाँ-बेपारी खलबल!
पाकिस्तानी खलबल!
हिन्दुस्तानी हलचल!
बैंक-एटीएम दड़बड़!
आस्ते-आस्ते मुँह कोंचिया कऽ
बेलाउज-पॉकेट सँ
कनियाँ निकालय 'काला धन'!
आब कोन बैंक मे
लाइन लगेबै हौ बाप?

थड़थड़-थड़थड़-थड़थड़!
ज्जे घड़ी ने इनकम-टैक्स
फड़-फड़ फड़-फड़ फड़-फड़!
हनहन पटपट हनहन!
भित्तर सँ मन खनहन!
कुर्सी होइते छै सनकलहा,
हौ बाप!
गाम-नगर मे गन-गन!
नोट भरल जेबी मे पुरना
मोन मे अगबे टेन्सन!
खाली झोड़ा-ढनढन!
हनहन-पटपट-हनहन!
चुप-चुप-भट! मुँह-बन्हन!
तेहेन ने चाटी चलौलक मन्तरिया...
बहती गंगा मे कए पुश्त के
थैलीए गुरूकि गेलै!
बुझू जे दुर्वासा-मुनि एक्के चुरूक मे
पूरा सागरे के सुरुकि गेलै!

चाहेक कप मे उठा देलकै बिहाड़ि!
ठोर सँ सटतै की, निच्चाँ मे गुरूकि गेलै!
हनहन-पटपट-हनहन!
भूखल मे मन खनहन!
कुर्सी होइते छै सनकलहा हौ बाप!
पावर होइते छै भङतरहा हौ बाप!

•

नव वर्षक वार्षिक कार्य-योजना

नव वर्ष मे किछु विशेष उपलब्धिक प्रयास करी!
तार्किक सोचक अहंकार मे
धरती सँ एकार्णवा आकास करी! किछु फैशन
अंगीकार करी, नास्तिकता-निरंकार केँ
वा कऽ ली 'धांसू धर्म-परिवर्त्तन!'
अन्धविश्वास-उकन्नन के नाम पर
कोनो तेहेन फिलिम बनाबी, आस्था-विरोधी
जे चारि सय करोड़ कमाबी!
आस्थाक हिलाबी चूल आ
ईश-निन्दा करी जमि कऽ, नव-वर्ष मे!
'शैतानक कविता' लिखि कऽ
चारि विवाह कऽ कऽ
खूबे नाम कमाबी आ गारि पढ़ी 'पैगम्बर' केँ
चारि विवाहक लेल!
माथ पर फतवा निकलबा
सौभाग्य प्राप्त करी, सरकारी अंगरक्षकक
आउ, रामकृष्ण-भोलानाथ केँ
गारि पढ़बाक लेल
निकाली एकटा व्यंग्य-कार्टून-पत्रिका!
दिल्ली-मुम्बई सँ!
वा फ्रेंच पत्रिका मे छपाबी
व्यंग्यात्मक कार्टून पैगम्बरक!
किंवा बनाबी सरस्वती-देवीक निर्वस्त्र-चित्र
आ पठाबी अन्तर्जाल पर
मरहूम चित्रकार के नाम
निर्वासित देस 'इंगलैण्ड-ए-हयात'
केर पता पर!

किंवा एकोटा एलेक्शन पड़ि लगला पर
भोट-बिक्रीक रेट भऽ जाय, एक हजार!
वा आधुनिक 'लभ' के नाम पर
कोनो गर्ल-फ्रेन्ड सँ सेट्टिंग कऽ
जीवन मे शान्त करी यौन-पिपासा
आ 'बाइ-बाइ' कऽ भागी, नवकी लग!
किंवा विदेशी शराब आ बिन्दास स्त्रीगणक
सांध्य-गोष्ठी मे
खुशवंत सिंह-शैलीक
लिखी कोनो स्तंभ
कोनो तेहेन नामी अखबार मे!
रिमझिम 'स्कॉच-माल्टेड ह्विस्कीक मूड' मे!
वा कोनो 'पोर्नोग्राफी-पत्रिका' मे
छपबा कऽ फोटो
भऽ जाइ मालामाल!
किंवा कोनो विश्व-कप-धारी
क्रिकेट-टीमक समक्ष
बनि जाइ दिगंबरा झकास!
भऽ कऽ पूर्णतः वस्त्रहीन
बिन्दास! आबि जाइ कहुना
सिनेमा-सीरियल मे! वा रम के रमकी मे
समलैंगिकताक पक्ष मे
दायर कऽ दी याचिका
सर्वोच्च न्यायालय मे
वा ब्रा-बर्निंग-आन्दोलनक पक्ष मे
लिखि दी, कोनो अतिवादी लेख!
किंवा सोङर लगा जोगाड़ कऽ ली
पद्म-पुरस्कार वा अकादेमी-पुरस्कारक
करा ली अभिनन्दन आ... कहुना चर्चित भऽ कऽ
करैत रही दन-दन

नव-वर्ष मे!
वा गठन करी, कोनो 'बोको-हरम' सन
कलामी जेहादी-समूह!
आ इस्लामिक स्टेट केर स्थापनाक करी घोषणा!
अल्लाह आ कुर-आनक नाम पर,
कट्टर भऽ करी जेहादक बगदादी-शंखनाद!
नव-वर्ष मे चर्चित होइ कहुना
पिरथी उनटन कऽ कऽ !
कोनो कार्टून-पत्रिकाक दस-बीस
पत्रकार केँ उड़ा कऽ
वा कोनो मदरसा
दरगाह-मस्जिद कि सोना के मन्दिर मे
एके-सैंतालीस केर ढेर लगा कऽ
वा तालिबानीएक माय-बहिन-बच्चा केँ
ना-पाक सेना द्वारा उड़ा कऽ
वा सैनिक इसकुलक बच्चा सभ केँ
तालिबानी फरमान द्वारा उड़ा कऽ!
वा कोनो मलाला केँ धमका कऽ!
किछु विशेष उपलब्धि प्राप्त करी
चकाचौंधक बिजुरी छिटका कऽ!
पिल्ही चमका दी
समस्त संसार केँ!
तेले-कूटनीतिक ब्याजें वा परमाणु-निरस्त्रीकरण
वा कोनो सद्दाम आ बगदादीक बहन्ने
करी हवाइ हमला, कोनो तेसर दुनियाँ पर
ध्वस्त करी दादागिरी केँ
डॉलर-युद्धके रंगदारी सँ
'ई हाथ हमरा दऽ दे ठाकुर!'
ई तेल-कूप हमरा दऽ दे, सुल्तान!
अन्यथा सनका देबौ कोनो देस केँ

हथियार पठा कऽ!
आतंकवादी आ मानव-बमक फैक्ट्री बैसा कऽ
पड़ोसी देसक सीमा पर!
वा निर्याते करी, सांस्कृतिक आतंकवाद!
आ हिला दी कोनो आध्यात्मिक आस्था केँ!
तर्कवादी सोचक नाम पर
उच्च कोटिक
'सैम्पेन– सनक मिजाजी' मूड मे
बामियान मे तोड़ी बुद्धक मूर्ति!
आ गरिआबी गीता-कुरान केँ
मूर्तिपूजा केँ साबित करी अन्ध-विश्वास!
धर्म आ पंथक नाम पर
अस्तित्वे मेटा दी, कोनो-महिला-समुदायक
आ चलाबी कोनो 'बाबा-आश्रम'
दसो हजार करोड़क!
कीनी गोटेक फार्म-हाउस कहुना!
आ निजी हेलीकॉप्टर
छोटो-छीन एकटा
द्वीप, स्कॉटलैण्ड मे!
वा एक हजार प्रतिदिनक भाड़ा पर
बनी बाबाक लठिधर!
संत-समागम करी, एना भऽ कऽ जे
जिनगी बीतय-पंचसितारा होटल मे!
कोनो संतक डिस्को देखैत!
कतौ एको दर्जन विवाह करी, गुलाम-कान्या सँ
गुफा मे करी रंग-रभस
पाठी आ बाछी जकाँ!
बरू चर्चित होइ देसे-विरोधी नारा लगा कऽ
कौखन 'घर-वापसी' कौखन
'लभ-जेहाद' घोषित करी रंगबाजी सँ!

'सर-कलम' करी
विदेशी पत्रकारक, देसी कलम सँ
आ भीडियो लोड कऽ धमकाबी ओकरा,
जे धमकाबैत अछि
सगर संसार केँ!

नव-वर्ष मे उड़ाबी गुलछर्रा जमि कऽ
जिनगी आ साहित्य मे!
झाँपन दी अपना केँ आ
आनक व्यभिचारी-खिस्साक वर्णन करी
रस लऽ लऽ
आ रंगि दी राजनीति केँ!
आली रंग सँ, नव-वर्ष मे!
थड़थड़ा दी धरती केँ
बुलेट, रेखाचित्र वा कुच्ची सँ
कलम मे भरि दी
परमाणु सँ भेल विकलांग-मनुक्खक
शोणितायल रिफिल!
आ लिखि दी मानवताक
रक्त-रंजित इतिहास
नव-वर्ष मे!
एकार्णवा कऽ दी धरती सँ अकास!
तखनहि हएत सभ क्षेत्र मे
चरम-पंथक विकास
आ मानवक अति-रंजित उपलब्धि खास!

•

सियाचिन मे बर्फ सँ संवाद

पेट डम्फ अछि, तरेड़ा लागल
लघुशंका सँ!
बर्फक ढिमकाक ओट सँ
तानल अछि
'ए.के. छप्पन' हमरा पर
मुदा नीज आइये
तिला-संक्रान्तिक राति
तारा-मन्दिर मे
थाड़ मे सजाओल 'छप्पन-भोग'
नचैए हमरा
आँखि मे
बर्फ सँ करैत संवाद सियाचिन मे
हम सिपाही नम्बर दू सय तीन, अभिराम झा
कोना लियऽ
स्मृतिक आनन्द?
हमर आँखिक समक्ष तानल
ए.के. छप्पनटा
थिक हमर एखनुक यथार्थ!

अवगास नहि भेल दू दिन दू राति सँ
तरेड़ा फूलल
अछि पेट, डंफ भेल!
तानल अछि लघु-शंका
दीर्घ शंका पर
ए.के. सैंतालिस, सन सैंतालिस ईसवी सँ(?)
लेबऽ नहि दैए निसाँस
ना-पाक, चीनी इन्साँस!

गैसक बिरड़ो लऽ रहल
चकभाउर पेट मे!
आ छावनी मे उठल अछि बिरड़ो
एकटा चौकी गमेबाक!
बमगोला फूटि रहल, पेन्टक पाछू मे
आर सैनिक
चौकीक आगू मे
एक्कहि संग!
छी हम सियाचिन मे
दुश्मनमाक चौकी उड़ाबऽ मे
अपस्याँत! हमरा गामक चौकीक टुटलाहा पौआ मे
ठेकल पजेबा, भेल अछि पिताँट!
कटै छी खुरछाही
बर्फक सिल पर पछड़ैत-पछड़ैत!
सियाचिन के एक बजे राति मे
डंफ भेल पेट लेने
सिपाही नम्बर दू सय तीन
फल्लां रेजीमेंट, चिल्लां बटालियन
फल्लां प्लाटून
बर्फक कनियाँ संग
चलि रहल संवाद!
—'खुरछाही किए कटै छी
नवजात-शिशुक परिकरमा करैत
सुजनीक चारू कात
हमरा माइक 'प्रेम सुन्नरि'?
बिछाओन पर अहाँ कछमछाइत छी
कि छी अहाँ छिछियाइत?
बच्चा किए अछि चिचियाइत?
पता नहि चलैए
जे हम गलि रहल छी एतऽ

सियाचिन मे?
कि अहाँ पिघलि रहल छी
ओतऽ चारवला घर मे?
कमान्डो मे चुना गेलहुँ, यै प्रेम-सुन्नरि!
अपने हाथें करिया लपेटा
बान्हि देलक कमान्डर!
दहिना दिस धपाएल अछि वर्दीवला
आर वामा दिस, ओतुक्के आतंकवादी!
मुदा सीमा पर हमहूँ
किए रहब 'ठंढा गाँधीवादी?'
आब जे राम, से राम!
एकरा दुनू के पाड़िये कऽ
पेट केँ करब हल्लुक!
देखिऔ ने, कोना करैए दुन्नू हुल्लुक-बुल्लुक?
कोना बनल अछि
वनमुर्गी जकाँ वन-हल्लुक?
जेना, जिन्ना के बापक
जिरात होइ, ई मुल्लुक?
एक घोंट पानि के
तलास नहि करए दैए!
कखन सँ की-की लागल अछि
तरास नहि मारए दैए!

मुदा छोड़ू, सोना-बेटाक
की हाल अछि?
सामने दुश्मनमा आबि गेल
हमर आँखि लाल अछि!
एकटा खतम भेल
बर्फ खून सँ लाल अछि
सुजनी मे लपेटल सोना बेटाक

केहेन गुलाबी गाल अछि?
इजोड़िया मे चानी छिटकैए
एतऽ बर्फक सिल पर!
ए.के. छप्पन सँ, अगिनवाण जकाँ!
जेना पूर्णिमा रातिक जल-विहार मे
चमकैत रही अहाँ,
चान जकाँ!
जहिना तील चमकै छल,
अहाँक गोरका गाल पर!
तेना सियाचिन चमकैए
भारतवर्षक भाल पर!
खम ठोकैए, छावनी-चौकी
भारत-वर्षक लाल पर!
आब सम्हरम नहि रहल
यै हमरा माइक 'प्रेम-सुन्नरि'!
बैरक मे एसटोव पर
बर्फ पघिलौने बिना
एक चुरूक जल कतऽ सँ
आओत दीर्घ-शंका लेल?
तत्काल एकटा केँ उड़ा कऽ
सोचब कने लघु-शंका!
पेट तडेड़ा-डंका
बेपानि केने, दीर्घ-शंका!
अपन बैरक-छावनी बुझाइए
सात समुद्र पारक लंका!
असमाहि बर्फक देस मे
एक चुरूक पानि लेल बेलल्ला!
मुदा सीमाक अतिक्रमण करैत
दुश्मन पर
बर्फ सँ ठिठुरल

झाड़ीक पाछू सँ
फायरिंग-पोजीशन लेने, तड़तड़बैत
हम, कमाण्डो अभिराम झा
बिच्ची उनटैत बर्फ पर
पाछू सँ आगू... बहबैत
पेमाल बर्फ पर अपन खूनक
सुता देलयनि मुँहे भरें
एकक बदला, तीन-तीन सरबे कें!
ठामहिं बर्फक सिल्ली पर!
छपनियाँ चओरक सिल्ली जकाँ!
आब कानय कराँचीयो दिल्ली जकाँ!
जखन हमरा परिवार मे
सुख-सेहेन्ता गरगट!
तखन तोरो गाम मे
किएक ने उठय अनपट?

•

ब्रह्म-कुंड मे अस्थि-विसर्जन

'हर की पौड़ी'क ब्रह्म-कुण्ड मे
किए करू हम अस्थि-विसर्जन
हरि-द्वार जाकऽ, अपना पितरक?
ओना, हमरा पितरक अस्थि-कलश सँ
नहि लगैत अछि, कोनो खोम्ह-टाड़!

मुदा कत्तहु जयबाक
कोन बेगरता अछि हमरा?
मिथिलो-भूमि तऽ मुक्ति दैत अछि
कहै छथि, ऋषि-मुनि-शास्त्र-पुराण!

आ किएक एतेक तृष्णा
मोक्षेक अछि एतय?
अछिनरे भोगक उपरान्त?
एतेक बेसी चिन्ता किएक पुण्यक?
की अबैत-अबैत चारिमपन
भऽ जाइत अछि लऽत पाप-पलड़ा?
मिथिलाक जीवन मे, तें?

अर्थ-काम मे आकंठ डूबल मिथिला
'मोक्ष-मोक्ष' रटैत अछि!
पापक बोरी भरि-भरि मिथिला
मोक्षक कामना करैत अछि(?)
मिथिला, धर्म पर कोना चलैत अछि?
सरल नैतिकता किए छोड़ैत अछि?
कर्मकाण्ड-पाखण्ड किए गढ़ैत अछि?
धर्मक की अर्थ बुझैत अछि?

नैतिकताक जाल बुनि-बुनि कऽ
अपने चिड़ै बनैत अछि!
पाखण्डक व्यवसाय करैत
स्वर्ग-सीट आरक्षण लेल
कतेक टग हनैत अछि?
तें गंगा मे अस्थि-विसर्जनक
परम्परा-संरक्षण करैत अछि!

आयल कतय सँ अस्थि-विसर्जन परम्परा?
वाराणसी-हरिद्वार-बद्री नारायण सँ?
श्राद्ध-कर्म पद्धति वा गरुड़ पुराण सँ?
मिस्र-बेबीलोन चीन वा रोम सँ?
नागर-सिन्धु-सभ्यता सँ
'किं मुच्यते जन्तुर्जन्म संसार बन्धनात्'
पिंडदान, तर्पण, अस्थि-विसर्जन
कि ब्रह्म केर शाश्वत सुमिरन?

किएक नहि चाही मिथिला कें
शस्य-श्यामला धरा-धाम मे
पुनः आगमन?
सृष्टि-चक्र मे देबाक हेतु योगदान?
'हुनके' कृति जँ इहो धरिणी
जखन 'यस्य स्मरण मात्रेण...?
तखन जीवन-चक्र सँ मुक्तिक
छटपटी किएक एतेक?
कामनाक अम्बार आ कर्मचक्रप्रवर्त्तिनी सँ डर?
गूड़ खेबाक तृष्णा आ गुलगुल्ला सँ परहेज?
जीवन मे आनन्द-रस भरबाक
छटपटी कतय हेरा गेल, मिथिला सँ?

मानल, पितृ-पूजन परम्परित अछि
प्राचीन सभ्यता सभक अवशेष मे!
मानल, पितृ-मुक्ति प्रावधान
परम्परित अछि
मिस्रक मम्मी-पिरामिड मे!

मुदा जखन लहासो के
नोचि-नोचि कऽ खाइत अछि
माँछ-काछु, गंगा मे...
तखन अस्थि कड़कड़ाबय वला जीव
कोना नहि बसैत हएत गंगा मे?
जखन रंग-विरंगक जीवक
मनुक्ख कड़कड़बैत अछि हड्डी
तऽ जल-जीवे किए करत दया
मनुक्खक अस्थि पर?
तेहेन अ-सुरक्षित जल-राशि मे
पितृगणक अस्थि-प्रवाह कऽ
कोना घूरब हम घर मुँह विधुऔने
हे आदरणीय पितृगण?
हे हर-द्वारक
'हर की पौड़ीक' ब्रह्म-कुण्ड!
हम सोझे पितृगणक अस्थि-राख
अपना खेत मे किएक नहि छीटू जाकऽ?

पितृगणक राख सँ
निकलल पेंपी के
किएक नहि मानब नवकी पेंपी
पुरान पीढ़ीक?
नवका संततिक हुनकर योगदान
सृष्टि-चक्र-प्रक्रिया मे

थिक नव-सृजन!
तें माफ करू हे 'ब्रह्म-कुण्ड' हमरा!
ब्रह्म-योनि पर्वतक पिण्डदान सँ
हम नहि मोटायब पंडा-पुरहित केँ!
तर्पण करब हम हुनका नामे
अस्पताल-इसकुल बना कऽ!
तें माफ करू हे ब्रह्म-शिला!
ब्रह्म-योनि पर्वतक मोक्ष-वृक्षक
डारि सभ माफ करू!
माफ करू हे 'हर की पौड़ी'क
ब्रह्म-कुण्ड!

•

दीर्घ कविता

वाराणसी, कतऽ अछि मुक्ति-पथ

काशी

बसैत अछि मिथिलाक बाल-विधवा काशी मे!
जेना शून्य-संवेदना, दक्षिणक देवदासी मे!
दौड़ैत गंगा-घाट दिस
तरासल मुक्ति-कामी
वेश्या-मसोमात, ब्रह्म-मुहूर्त मे!
अरबों उठौने पियासलि बाछी
दागलि गाय!
खुट्टा-उपाड़ भगान भागैत
सोझे अस्सी घाट पर!
काम-अर्थ-विहीन, धर्म-मोक्ष लए लालायित
दगनियाँ-पावनि टीसैत
हेंजक-हेंज
मसोमात-हृदय, वेश्या-हृदय!
की सत्ते राँड़ सँ सायास बाँचऽ लेल
अपस्याँत अछि काशी?
की सत्ते साँढ़ बनल
नोकीला सिंगवाली ढहनाइत
बिसाँढ़ी गायक, भुक्खल हुरपेट्टा सँ
बाँचऽ लेल अपस्याँत
अछि काशी?
की सत्ते संन्यासीक त्रिशूल, कमण्डल आ चुट्टा सँ
जठराग्नि आ कामाग्नि छिटकबैत
नजरि सँ बाँचऽ लेल
अपस्याँत अछि काशी?
कहू त' कतऽ अछि राँड़-साँढ़-संन्यासीक

मुक्ति-पथ, काशी मे?
कहू तऽ, काशीक मुक्ति-पथ कतऽ अछि काशी मे?
कहू तऽ, धर्म-धकेल भेड़िया-धसान यात्रीक
मुक्ति-पथ कतऽ अछि काशी मे?
पाप-धोरिणी गंगा मे?
कि वस्त्र बदलैत नारी-देह
केँ निहारैत
टेढ़की नजरि मे?
नागा साधुक कर्मेन्द्रिय केर मुक्ति-पथ
बूझल छैक केकरो हौ बाबू?
नव-दीक्षित, बेल-मुंडी साध्वीक
ज्ञानेन्द्रिय केर
मुक्ति-पथ कतऽ छै?
से बूझल छैक केकरो?
कतऽ मदमत्त छै, काशी-कल्याण-मंतरी?
संकट-मोचन मे
कि मानस-मंदिर मे?
कतऽ बेमत्त छै, नारी-सुरक्षा-संतरी?
काल-भैरवक गली मे
कि गदोलियाक
कोनो होटल मे?
की सांसारिक मुक्ति-पथ केँ
आध्यात्मिक
मुक्ति-पथ नहि बुझैत अछि
काशी के कल्पवासी?
की कातिक-असनान मे
अछि मुक्ति-पथ?
कि माघी-असनानक
जट्ठर गंगाजल मे?
कोनो बलात्कृत-कथाक रस-वर्णना मे

अछि मुक्ति-पथ?
कि सारनाथक बुद्ध-उपदेश मे?
अओ काशी केँ कल्पवासी मासी!
भेटल आइ धरि, मुक्ति-पथ कतहु काशी मे?
जाउ जाउ, घाटे-घाटे बौआउ!
अहाँक मुक्ति-पथ अछि
दम्मा-टी.बी.क उकासी मे!
अहाँ अनेरो बौआइ छी काशी मे!

दशाश्वमेध-घाट

दस अश्वमेधक फलश्रुति समेटने
अछि कहाँदन दशाश्वमेध-घाट,
अपन संकल्प मे!
स्वयंसिद्ध संकल्प, जँ गंगाक माध्यमे,
पहुँचैत छनि विश्वनाथ धरि
तऽ नेहाल भऽ उठैत अछि, वाराणसी नगरी कहाँदन
कहाँदन, गंगा-आरती आ
विश्वनाथ-अभिषेक सँ
बनैत आ खसैत
अछि सरकार
दशाश्वमेध मे!
खसैत अछि, दशाश्वमेध मे, वाराणसीक
अंतहीन विकृति असंख्य नाला-नाली सँ!
तेँ कहाँदन दशाश्वमेधक संकल्प मे
एतेक वंचना अछि!
तेँ कहाँदन वाराणसी नगरी मे
एतेक वंचना अछि
दशाश्वमेद्य मे धरती नारंगी समान
गोल नहि

संकल्पक नारियल-समान
नमगर अछि!
एतय नारियल केँ हृदय मे जे गंगा
बहैत छथि संकल्पक
तिनको बना देल गेल अछि
विकृति सँ प्रदूषित!
विश्वनाथ-मंदिर सँ दशाश्वमेध-घाट
आ दशाश्वमेध सँ विश्वनाथ-मंदिरक
बेरम-बेरम संकल्प यात्रा मे!
तेँ वाराणसी नगरी केँ दूर केने छथि
विश्वनाथ
दशाश्वमेधक धार्मिकता सँ
तेँ गंगा नहि धो पबैत छथि
नगर-सामंत-सेठ-कोतवाल आ
नागर-जनक पाप
दशाश्वमेधक गांग-स्नान मे!
वाराणसीक विकृति सँ
दशाश्वमेधक तथाकथित
स्वयंसिद्ध-संकल्प केँ
नहि सिद्ध कऽ पबैत
छथि– गंगा आ विश्वनाथ!
की समस्त वाराणसी नगरी मे
पंडे-समाजक आबि गेल अछि-वंचनाक संस्कार?
तेँ एतेक वंचना राज करैत अछि
दशाश्वमेध सँ वाराणसी धरि?
तखन हम दशाश्वमेध मे
वंचना आ विकृतिक मध्य
कोना लियऽ संकल्प
व्यवस्था परिवर्त्तनक?
बिना विकृति-स्त्रोत बन्द केने?

कोना रंगि जाउ हम-दशाश्वमेधक परम्परा मे?
की विकृति-मुक्त अछि गंगाक हृदय-स्थली?
जे नाव सँ जा कऽ गंगाजल भरू?
मुदा की अहाँक हृदय
निर्मल अछि नारियलक हृदय जकाँ?
जँ वैतरणी मानियो लेल जाय गंगा केँ
तैओ, बाछीक रोइयाँ उड़ल
दर्द सँ पिड़ाइत नाङरि
पकड़ि कोना पार उतरब अहाँ
वाराणसी नगरीक जीवन सँ?
जखन काशी नगरी कहाँदन, शिवजीक
त्रिशूलक नोंक पर अछि, तखन कोना
ठहरैत अछि
नागर-समाजक विकृति
आ वंचना
त्रिशूलक नोंक पर?
मुदा दशाश्वमेध तऽ पावन गंग-धारा
आ विश्वनाथक त्रिनेत्रक समानांतर अछि कहाँदन!
तखन कोना दशाश्वमेध नहि बाँचल
अछि-नागर-समाजक विकृति-वंचना सँ?
मुदा दशाश्वमेधक विकृति पर कहाँ क्यो
कहियो-कोनो प्रश्न उठाबैत अछि?
कारण दशाश्वमेध तऽ
अपना-आप मे
एकटा संस्कृति थिक– जकर विकृति-वंचना
थिक मानव-निर्मित आ साध्य!
की दशाश्वमेध मे एकटा भेल बुद्धिजीवीक
मारल गेल छनि मति
जे हुनका
नजरि अबैत छनि– विकृतिए-विकृति आ

वंचने-वंचना
दशाश्वमेध मे?
दशाश्वमेधक धार्मिकता आ संस्कृति-प्रवणता
पर किएक नहि जाइत छनि हुनकर नजरि?
मुदा की अहाँ केँ, ई तथ्य सम्पुष्ट भेल अछि
जे दशाश्वमेध मे एकट्ठा भेल, संकल्प प्रेरित
बुद्धिजीवीक ध्यान विकृति आ
वंचना पर जाइतो छनि?
असल मे दशाश्वमेधक पंडा समाजक,
कहब छैक
जे एतय स्वयंसिद्ध अछि
धर्म आ संस्कृति दशाश्वमेधक संकल्प मे
से बातो स्वयं सिद्ध अछि! तें तर्कातीत मानै छथि ओ सभ
दशाश्वमेध केँ!
मुदा वाराणसी आ भारतवर्षक
कोनो परिवार कहाँ संकल्प लैत अछि
दशाश्वमेध मे सत्य आ धर्मक रक्षाक?
सभ अपन-अपन कल्पित कल्याणक
व्यक्तिगत संकल्प लैत अछि
दशावश्मेध मे!
आ बुद्धिजीवी तऽ सर्वदा
वाराणसी नगरीक तार्किक समाधान लेल
संकल्पक विकल्प खोजऽ मे छथि अन्वेषणलीन!
तेँ वाराणसी-नगरी आ दशाश्वमेधक
सह-अस्तित्व
समस्त नागर-वंचना आ
असहज शान्तिक मध्य-स्थायी आ
शान्तिपूर्ण अछि से सोचि सूति रहब की?
हे वाराणसीक नागर-समाज?

हरिश्चन्द्र-घाट

कहैत छथि विद्वान-लोकनि
सभ प्रकारक सत्य
निवासैत
अछि वाराणसी मे!
हरिश्चन्द्र-घाट
आन सभ घाट मे मिथ्या
निवास कइयो सकैत अछि
मुदा, एतय नहि!
वाराणसी नगरीक जतेक 'नागवंशी',
वाराणसीक जतेक 'रोहित' केँ
डंसैत अछि
सबहक क्रिया-कर्म
एत्तहि... होइत... अछि!
नहि होइत अछि– तऽ मात्र मलाह-पुत्रक!
मलाह-पुत्र केँ तऽ अइ पार, ओइ पार
नाह खेबिते स्वतः भइये
जाइत अछि 'गंगा-लाभ'
वाराणसी मे!
एतय अकाल-मृत राजपुत्र सँ लऽ कऽ
भूखमरी-मृत दरिद्र-नारायण-पुत्र,
बेमारी-मृत, अपहरण-हत्या आ
बलात्कृत पुत्री धरिक संवेदना
अबैत अछि
अगिनवाण छिटकबैत!

हरिश्चन्द्र-घाट पर स्वयं राजा सत्य हरिश्चन्द्र
रात्रिकालीन सत्र मे कर्त्तव्यस्थ

रहैत छथि हेड इंचार्ज बनि
जाग्रतः! उत्तिष्ठः!! जाग्रतः!! कहैत। सर्वसाधारण सँ
अन्त्येष्टि शुल्क असूलैत हरिश्चन्द्र-घाट
खादी धोती पैजामा-कुर्त्ता सँ
नहि असूलि पबैत अछि क्रिया-कर्मक शुल्क!
जखन कि सत्य आ धर्मोक भऽ जाइनि मृत्यु,
जाधरि कोनो भक्तराज 'सत्ते केँ'
नहि जमा करतनि शुल्क
संभव नहि छनि–'अन्त्येष्टि'!
मुदा वाराणसी सँ-से नियम-पालनक
कतऽ हेरा गेल परम्परा?
जखनकि सत्य-हरिश्चन्द्र-घाट
वाराणसी नगरीए मे अछि?
जखनकि सूर्यवंशी राजा सत्य हरिचन्द्र
वाराणसीए मे भेलाह?
जखनकि धर्मराज पराजित भेलाह
हरिश्चन्द्रक सत्य सँ एतहि!
से सत्य-परम्परा कोना विलुप्त भेल
वाराणसी नगरी सँ?
जखनकि
विश्वनाथ-धर्म आ सत्यक रक्षक
निवासैत छथि एतहि-कल्प-कल्प सँ?
जखनकि सदा सत्यक साक्षी
बनैत रहलीह-ए गंगे एतय?
जखनकि जनैत अछि वाराणसी
अपन इतिहास-सत्य
जे बेर-बेर
राजवंशक पतन एतय
धर्म आ सत्य
विमुखे भेला पर

भेल अछि?
तखन किएक नहि परचारैत अछि?
अपना नागर-जन केँ वाराणसी
सत्याभिमुख हेबाक लेल?
की बिसरि गेल अछि वाराणसी–
तारामतीक ओ करूण विलाप?
की समस्त नगरी मे साम्राज्य
अछि ना-ग-वं-शी-ए-क?
की वाराणसी मे वाराणसीक
कोनो टा रोहित अछि सुरक्षित?
की फिरौती दऽ कऽ महारानी तारामती केँ
मुक्त नहि करा रहल छथि
महाराज हरिश्चन्द्र– विश्व-मित्र सँ?
सत्य-हरिश्चन्द्र मे रूपांतरण
भेनाइए छनि– सूर्यवंशी राजाक?
आ भेनाइए छै पुनः पुनः
सत्यमेव जयतेक स्थापना?
मुदा कतेक यंत्रणापूर्ण आ कारूणिक
अछि– सत्यमेव जयतेक दूरी?
इन्द्र-परीक्षाक प्रक्रिया?
वस्तुतः वाराणसी नगरी सँ बहुत...
...बहुत दूर अछि-सत्य हरिश्चन्द्र-घाट!
तेँ भरिसक... सत्य-अन्वेषण-परम्पराक
मेटा गेल अछि स्मृतियो-वाराणसी सँ?
कम-सँ-कम सत्य हरिश्चन्द्र घाटक
अस्तित्व आ स्मृति-बाँचल रहय
वाराणसी मे?
पर्यटक आ विदेशी केँ तऽ अबैत
रहबाक चाही सत्यान्वेषण मे वाराणसी?
कम-सँ-कम सत्य हरिश्चन्द्र नाटक आ

कथाक स्मृतियो तऽ बाँचल रहबाक चाही
सत्य हरिश्चन्द्र-घाट आ वाराणसी मे?
सावधान-सत्य हरिश्चन्द्र घाट!
वाराणसी अहाँक स्मृति मेटाबऽ मे
लागल अछि! सत्य आ धर्म सावधान!
वाराणसीक वणिक-धर्म सँ सावधान!
वाराणसी-नगरी सावधान!
अपन नागर-समाजक पाप-धर्म सँ सावधान!
सावधान, सत्य हरिश्चन्द्र!
अहाँक सत्य-धर्मक लूटि भऽ
रहल अछि– वाराणसी मे!
अहाँक नाटकक पोथीक एक-एक प्रति
कएल जा रहल अछि विलुप्त!
वाराणसी मे निवासैत आर्यावर्त्त द्वारा!

मणिकर्णिकापुरम् आ मणिकर्णिका भगवती

अहर्निशि वाराणसी नगरी अबैत
रहैत अछि
मणिकर्णिका भगवतीक
देहरि पर
आ विश्वनाथक त्रिशूल पर
अवस्थित
नारायणक मणिकर्णिका-स्वरुपा
काशी मे! कहाँदन नारायणक मणिकर्णिका
पोषण दैत अछि– वाराणसीक धर्म, अर्थ, काम
आ मोक्ष केँ
जखनकि वैराग्य-स्वरूपा
आ संहार-प्रतीक
छथि मणिकर्णिका भगवती!

वाराणसी नगरी, काशी आ मणिकर्णिकाक
शरण मे
अबैत अछि मुक्ति आ पुनर्जन्म लेल
विध्वंस-प्रभारी, मणिकर्णिकाक मूर्त्ति मे
सद्यः विराजैत छथि– से वाराणसीक गंगा मे
अग्नि-स्नान आ शोक -विह्वल
टप-टप नोर सँ
प्रमाणित होइत अछि
नारायणक मणिकर्णिका मे
प्रतिदिन भगवती
मणिकर्णिका लग
वाराणसी नगरीक अकाल,
रौदी, भुखमरी, दुर्घटना
हत्या-शीलहरण
आ महामारी
मुर्दा रूप मे अबैत अछि
क्रन्दन आ शमशान-वैराग्य
थिक स्थायी-भाव!
आ मृत संवेदना थिक, शाश्वत सत्य
मणिकर्णिका भगवतीक
मणिकर्णिका घाटक
मणिकर्णिका-पुरीक आ काशी उप-नगरीक
वस्तुतः मणिकर्णिका-काली, छथि-शमशान-काली
वाराणसीक अहंकारक संहारक
मुदा वाराणसीक की थिक मूलभाव?
की वाराणसी अछि
वाराणसी मे?
की मणिकर्णिका अछि?
मणिकर्णिका मे?
वाराणसी कतय अछि

वाराणसी मे?
की काशी अछि
काशी मे?
काशी कतय अछि
काशी मे?
की पक्का वाराणसी मे विश्वनाथ आ
मणिकर्णिका मे मणिकर्णिका भगवती
बसैत छथि?
की सत्ते मणिकर्णिका
भगवतीक मूर्त्ति मे
मणिकर्णिका भगवती बसैत छथि?
की सत्ते विश्वनाथक त्रिशूल पर धारित
अछि नारायणक मणिकर्णिका?
तखन वाराणसीक मूलभाव
भुखमरी, छल, हत्या, मारुति-रेप,
गैंग-रेप, नाबालिग-बच्चा-वृद्धा-रेप
वेश्या-वंचना, ठकविद्या, माफियागिरी,
गोरख धंधा
कोना आ किएक अछि?
वस्तुतः वाराणसीक कवित्त आ
शहनाइक बिस्मिल्लाह
मणिकर्णिका मे
मणिकर्णिका लग
आबि कऽ समा गेल अछि
हुनके मे
तेँ विलुप्त भऽ गेल कवित्त आ
संगीत-नृत्य वाराणसी सँ?
तेँ वाराणसी नगरी मे राँड़-साँढ़
संन्यासी बसैत अछि-भूखल-प्यासल
तेँ कोलाहल आ नीरवता मे

बसैत अछि वाराणसी दिन-राति!
फेर गंगो तऽ वाराणसी मे
भागिरथ-युग सँ बसैत छथि?
तखन पवित्र केना नहि
भऽ सकल
वाराणसी-नगरी मणिकर्णिका मे
मणिकर्णिका भगवती लग तऽ
पवित्रता सँ अपवित्रता आ
अपवित्रता सँ पवित्रता धरिक प्रक्रिया
अहर्निशि
निरंतर चलैत रहैत अछि?
चिताक राख गंगा मे विसर्जन
आ गंगौटक माटि वाराणसी नगरीक
कुलदेवीक पीड़ी पर... निपाइत रहैत अछि...प्रतिदिन...
तेँ नगरी सँ मणिकर्णिका आ
मणिकर्णिका भगवती सँ वाराणसी नगरीक
बनल रहैत अछि शाश्वत तारतम्य
जनपद-युग सँ जनपद-युग धरि!
वस्तुतः सभ मनुष्य रहैत अछि
किछु दिन, अपन-अपन वाराणसी मे!
वस्तुतः सभ मनुष्य एक दिन
समाइत अछि अपन-अपन काशी मे!
अपन-अपन मणिकर्णिका मे
समाइत अछि एकदिन सभ मनुष्य
...सुमिरैत बाबा विश्वनाथ आ
सती माता मणिकर्णिका केँ
विश्वनाथक मुक्ति-नगरी
त्रिशूल-आधारित मणिकर्णिका-काशी मे!
वस्तुतः सभ तरहक मणिकर्णिका आ
सभ व्यक्तिक व्यक्तिगत मणिकर्णिका

आ वाराणसी नगरीक अन्तःसम्बन्ध
थिक एकटा विडम्बनापूर्ण सत्य...
शाश्वत-शाश्वत... जे बनल रहैत अछि
निरंतर विडम्बनापूर्ण...
मणिकर्णिकाक स्थायी शमशान-वैराग्य
वाराणसीक छाती मे धधकैत
स्थायी मूल-भाव थिक...
आदिकाल सँ अनादि-कालधरि!
तेँ काशीक मुक्ति-पथ रहस्यमय अछि!
कलजुग मे क्यो नहि जनैत अछि
कतऽ अछि, मुक्ति-पथ काशी मे?
रंडी-राँड़ी-निराशीक गर्भ मे?
कि नागाक इन्द्री मे पहिराओल औंठी मे?
वस्तुतः कतहु अछियो वा नहि?
समस्त काशी मे तऽ अछिये-अछिया अछि!
तैयो मुक्ति-पथ...?
अस्सी-घाट सँ, अस्सी योजन दूर?
फूला-विसर्जन कि तर्पण मे?
पिंडदान कि पार्वण मे?
ऊँ मधु मधु... मधुवाता ऋतायते मे?
वा मधु-क्षरन्ति सिन्धवः मे?
कतऽ अछि मुक्ति-पथ, काशी मे?

•

महा-विस्फोटक महा-प्रयोग

पृष्ठभूमि

जहिया विद्या अविद्या भऽ कऽ
चूकल-चेतना-सृजन मे,
कोनो महामहोपाध्याय स्व-मूत्र-पानक
आ कोनो संत-शिरोमणि, गो-मूत्र-पानक
महत्व बुझौलनि, अपना तरहें
गाम, परम्परा मे बोरऽ चाहलक,
आ नगर आधुनिक बनबैत-बनबैत
बनौलक वर्त्तमाने केँ विकृत!
प्राचीनता भेलो नहि छल
नेपथ्य गामी,
आधुनिक मूल्य
लेनहुँ नहि छल स्थापना पूर्णतः
कि बथा गेल
माथ पर उत्तर-आधुनिकता!
इतिहासक लोप आ सभ्यता-विलोपक
होमऽ लागल फूकोयामा-भविष्यवाणी,
नगर मे पहुँचल नीलवर्णी सियार द्वारा!
फेर देरिदाक विखंडनवाद
नढ़ियाक 'हुआ-हुआ' सँ
घोंसिया गेल व्यक्ति-परिवार मे!
लोक, असहज खिच्चड़ि केँ
घी-पापड़-अंचार मे मथि देल!
आ तीनूक सड़ल-गलल मूल्य सँ
इनार बनल पेट केँ, भथि देल!
तीनूक नीक मूल्य, गैस-ढेकार जकाँ

निकलैत रहल
आ लोकक पेट मे
मसल्लाक गाछ जनमलाक बावजूदो
लोक रहल हेहर बनल
'छाहरिए' मे!

भोगक अति सँ, अस्तित्व मे विस्फोट

सरकार गुटखा-सिकरेट आ
कनियाँगण तमाकुल मना केलनि!
तऽ डॉक्टर तेल-मसल्ला परहेज!
आ सन्तगण शाकाहारक महत्व बुझौलनि
उत्तर-आधुनिक समय मे!
कोनो खट्टर-कका, साकठ बना देल!
तऽ 'जगन्नाथपुरी-यात्रा' वैष्णव बना देल!
अवसरवादक कृपा सँ शास्त्र मे
तकाइत रहल संकल्पक विकल्प!
ने कंठी निमहल, ने बेमारी गेल!
ने तामस गेल, ने स्वास्थ्ये भेल!
भाग्यक महिमा-मंडन मे, कर्मे हेरा गेल!
दोष कोनो बुझौनिहारक नहि छल!
दोष स्व-विवेक-शयनक छल!
हरि-शयनी एकादशी सँ
घाट परहक एकादशा-सपिंडन धरि,
जठराग्नि मे होइत रहल,
माँछ-विवेकक हवन
हरिमोहनी द्वादशी धरि मे,
'वैदिक हिंसा, हिंसा न भवति'क
इष्टमंत्र देलनि विख्यात तांत्रिक
कामाख्या-सिद्ध बाबा!
दर्जन भरि भागवत-शिरोमणि

कथावाचकक
नारायणी-मंत्र सेहो
बनि कऽ रहि गेल
आस्था-विहीन यांत्रिकता!

छिछिऔनीक महा-प्रयोग

महाजनो येन गतः सः पंथाः
केर अनुसरण करैत
पहिने मोहक
पलाश-वन मे
भटकाव भेल लक्ष्यहीन!
फेर वासंती फुलवारीक विभ्रम पोसने
मरूभूमिए-मरूभूमि लागल रहल– छिछियौनी!
अति-भोगवाद केँ धर्म-विधान
सँ संगमक महा-प्रयोगक उपरान्त
वाणप्रस्थक आहट पाबि
संतुलनक
बेगरताक भेले छल अनुभूति कि
गार्हस्थ्य-गाड़ीक मादा पहिया लसकि गेल!

महाप्रयोगक अराजकता

दोष कोनो बुझौनिहारक नहि छल
विवेक-सम्मत रटैत-रटैत
विवेकहीन निर्णयक लागि गेल पथाड़!
विवेक, तहिया चेतन भेल
जहिया
विवेकहीनता सँ सभतरि
अराजकता पसरि गेल!

गौतमक न्याय तकैत रहल टुकुर-टुकुर
आ नव्य-न्याय-प्रवाह,
उकन्नन भऽ गेल
नवधा-भक्तिक
दुविधा मे!
समस्त जीवन उड़ैत चिड़ैक
आँखि चिन्हबाक होइत रहल
दाबी-पर-दाबी
मुदा नहि भेल
अंतिम साँस धरि-व्यक्ति-परिचय!

शब्द-ब्रह्मक अनुसंधान

शब्द-ब्रह्मक चलैत रहल अनुसंधान!
अर्थ, विलुप्त होइत रहल शब्द सँ!
अर्थ, भऽ गेल शब्दक अर्थ!
काम, भऽ गेल जीवनक अर्थ!
धर्म, भऽ गेल 'अर्थक' अर्थ!
मोक्ष, भऽ गेल पाप-आवरण!
पुण्य, भऽ गेल गौरवें आन्हर!
कर्म, भऽ गेल कपार आ श्राद्ध!
रुढ़ भऽ गेल शास्त्र आ
जड़ भऽ गेल जीवन!
पंथक पथाड़ लागि गेल!
भौतिकता, धर्म बनि गेल!
कन्या-दान, भेल 'धन-दान'!
वरक दान, महा-कल्याण!

शब्द-ब्रह्मक चलैत रहल अनुसंधान
एकादशी-यज्ञक उद्यापन मे!

उप-नयनक मड़बा पर
बरूआक कान मे
आचार्यक कनफुसकी-मंत्र द्वारा
वेदी तर, बीसलखिया वर द्वारा
तरंगल कनियाँक हृदय-स्पर्श द्वारा
नवग्रह-शान्तिक हवनक टीका मे
ब्रह्मक चलैत रहल अनुसंधान!

आत्म-परिचयक प्रश्नचेन्ह

मुदा आत्म-परिचय सम्पूर्ण ब्रह्म-परिचय थिक
कि कोनो एक मनुक्ख केँ
सम्पूर्णता मे जानब
जानब थिक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड केँ
तकर अभिज्ञान विरले
भेल कहियो-ककरो!
ज्ञान-ज्ञान होइत रहल अनघोल
भक्ति-भक्ति कीर्त्तन मे गर्दमगोल!
अष्टयाम-सँ नवाह धरिक यांत्रिकता मे
सपना भेल निष्काम भक्तिक आनन्द!
कर्म! कर्म रटैत-रटैत
बना देल कर्म केँ भाग्यक पर्याय!
योग योग रटैत-रटैत
ब्रह्म सँ वियोग
शरीर सँ संयोग!

'अमाशयक सामर्थ' सँ
छागर पिटाइत रहल!
फेर अल्ट्रासाउन्ड सँ
अमाशय, जँचाइत रहल!
नाना-कर्मकाण्डक
जड़िए जड़ियाइत रहल!

शरीर पोसेबाक भ्रम सँ पेटे भरियाइत रहल!
आध्यात्मिको भूख मे, पेट कुड़ियाइत रहल!
शिश्नोदरी-सभ्यताक प्रतापे
वैतरणी हेल
बनि गेल, नढ़रा-हेल!
गौदानक गाय-महींस जकाँ
छोड़-पठरू सहित, पानि मे गेल!
मुदा आत्म-परिचय नहिये भेल
दशक-पर-दशक बिति गेल!
शतक-पर-शतक लागि गेल!
पीढ़ी-पर-पीढ़ी आयल
गेल, चलि गेल!
संस्कृति सुखा गेल!
सभ्यताक रंग धोखड़ि गेल!
ई की भेल? ई कोना भेल?
जेहने कौआ, तेहने कौआक गेल्ह?

ब्रह्मक आखेट

सहज-भावक अभाव मे दूरे रहल
ब्रह्म, सभठाँ
सभ सँ!
ब्रह्मा-शब्द-ब्रह्म सँ दूर!
ब्रह्म-बुद्धि-विलासीक
मोट-मोट पोथी सँ दूर!
ब्रह्म, धर्म, पंथ, अध्यात्मक
संस्थानीकरण सँ दूर!
ब्रह्म सभ धर्मक शास्त्र-पुराण
पुजेगरी सँ दूर!
रुद्राक्ष-तुलसी-कंठी-गोमुखी सँ दूर!
ब्रह्म-सभठाँ, सभ सँ दूर!
अनुसंधाने मे हेरायल!

अनुसंधानक वस्तु बनल!
अंशक खोज मे ब्रह्म
ढहनाइत रने-वने!

अंशक पथ-विपर्यय

...आ भौतिक सुख-शयन मे
अंश निश्चिन्त!
ब्रह्म-बौआइत अंशक
भक्ति-जागरणक प्रत्याशा मे!
जंगल सँ मरुभूमि धरि!
सौर मंडल सँ आकाश गंगा धरि!
'ईश्वरीय कण' स्वयं छिछियाइत
निहारिका सँ ध्रुवतारा धरि!
अनुसंधानकर्त्ताक हृदय आ
भक्ति भावक खोज मे!
परमाणु संरचना सँ, परमाणु-विस्फोट धरि!
जनेबाक 'भू-तल-महा-विस्फोट' सँ
कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र धरि!
परखनलीक सृष्टि-निर्माण सँ
कृत्रिम हिम मानव आ
कृत्रिम डायनासोरक निर्माण धरि मे
होइत रहल महा-प्रयोग।

ईश्वर कणक खोज, आत्मा मे

नासाक प्रयोगशाला सँ जेनेवा के
भूतल-हाइड्रा-मशीन धरि मे
छिछियाइत 'ईश्वरक-कण'
आत्माक अतल गहिराइ मे, खोज 'ईश्वर कणक!'
चन्द्र अभियान सँ मंगल अभियान धरि
परिवार सँ व्यक्ति धरि

मे होइत रहल
ईश्वर कणक-खोजक संग
अहं आ भोगवादक महा-विस्फोट!
सरयू मे ठाढ़ लक्ष्मणक
फटैत माथ जकाँ!
विज्ञान सँ अध्यात्म धरिक झोड़ी भरि गेल,
महा-उपलब्धिक पद्म-विभूषण सँ!
दाबी-पर-दाबी होइत
रहल एवरेस्ट-विजयक!
अंशक खोज मे रने-वने
बौआइत रहल ब्रह्म!
...आ अर्द्ध-निद्राक मध्यान्तर
आकस्मिक चेतना मे,
वेदनाइत रहल अंश! चमकी बेमारी सँ
चमकबैत आँखि, मुँह, भौंह!

व्यक्ति-परिचयक मरीचिका

मुदा, मनुक्ख केँ मनुक्खक
व्यक्ति-परिचय नहि भेल!
आइंस्टीन नहि चीन्हि सहलाह,
अपन परमाणु बम केँ!
जापान नहि चीन्हि
सकल, अपन सूर्य केँ!
जर्मनी नहि चीन्हि
सकल मानव-रक्त केँ!
धर्म, राजनीति, व्यक्ति आ समाज
एक-दोसर केँ चिन्हिते रहि गेल!
सहस्राब्दी-सहस्राब्दी धरि!
सभ्यताक होइत रहल विकास आ विनाश!

लड़ल जाइत रहल मानवक छाती मे
कुरुक्षेत्र आ विश्व युद्ध!

अहंकारक विस्फोट आ कुटिलताक प्रयोग

मस्तिष्क बनि गेल कुटिलताक
प्रयोग-स्थली
आ हृदय
बनि गेल शमशान-शमशान!
पेट मे होइत रहल
गैसक महा-विस्फोट!
...आ मच्छड़दानी मे,
होइत रहल निचैन सँ
महा-दंशक मच्छड़-महा-प्रयोग
लेल जाइत रहल-विध्वंसक!
संस्कृति, सभ्यता, विज्ञान, अध्यात्मक
ककरो प्रगतिक बदौलत
कोनो व्यक्तिक
सम्पूर्ण व्यक्ति-परिचय नहिएँ टा भेल!
समय पर नहि उतरल क्यो
अपन छविक अनुकूल!
व्यवहार-शास्त्र आ मनोविज्ञान
अपन-अपन
व्याख्या प्रस्तुत करबाक लेल आइयो
कऽ रहल अछि
अनुसंधान-पर-अनुसंधान!
जे, जे छल
समय पर, से नहि रहल!
बहाना बना-बना लोक, काल केँ
दैत रहल-दोहाइ आ धिक्कार!

कएटा दुस्साहसी कालो सँ
लैत रहल होड़-पर-होड़!
कएटा शास्त्रार्थी 'कालो गच्छति धीमताम्'
पर चलैत
कखनो पराजित, कखनो अपराजित
काल-कवलित होइत गेलाह!
कएटा 'भोगेन्द्र' 'निद्रया-कलहेन वा'
मे खपैत गेलाह!
काल होइत रहल अपना गतिए
उत्तरायण सँ दक्षिणायन!
दक्षिणायन सँ उत्तरायण!
पंचांग छपैत रहल
शताब्दी-सँ-शताब्दी धरि!
ज्योतिष-शास्त्र होइत रहल
नेहाल-सँ-सनाथ!
ब्रह्मक होइत रहल अनुसंधान!

ब्रह्मक अंश खोज

ब्रह्म, अपन अंशक खोज मे
ढहनाइत रहल रने-बने,
...आ भूतल महाप्रयोगक गुफा मे!
सभ्यताक थुड़ाइ
करैत रहल असभ्यता!
तीन सय सरकारक संगठन,
शब्दकोश मे खोजैत रहल
'आतंकवादक' परिभाषा!
व्यक्ति चीन्हैत रहल
आन व्यक्ति
आ स्वयं केँ

सोइरी घर सँ, शमशान धरि मे!
सनातन अवतारवाद सँ
गौतम बुद्धक पुनर्जन्म
...आ कर्म-चक्र प्रवर्तिनी धरि मे!
मनुक्खक बनैत रहल वंशावली!
...आ इतिहासक चट्टानक तह मे,
दबाइत रहल– जीवाश्म बनि कऽ!

अंशक ब्रह्म खोज

अंश, ब्रह्म खोज मे भटकैत रहल
चारू धाम, सातो पुरी!
अमरनाथ सँ व्यास गुफा धरि!
झोड़ी टङने-लाठीक हाथे!
'मृग ढूढे वन-माँहि'
अर्द्ध कुमारी सँ वैष्णो देवी गुफा
आ भैरोनाथ धरि... बेदम-बेदम!
ब्रह्म खोज मे अंश बेदम!
कहियो चट्टान तर, कहियो
बर्फक शिला तर मे ब्रह्मलीन अंश!
पिचड़ा भेल
शिलाजीत-सेवनक बावजूदो
जीवाश्म बनैत अंश!

आत्माक महा-विलाप

शताब्दी सहस्राब्दीक युगीन सन्दर्भक
मरुभूमि मे भटकैत, समाजक आत्मा
'परमात्मा! परमात्मा!' चिचियाइत रहल!
आत्माक चिचियौनी आ छिछियौनी

जारी अछि मस्तिष्क सँ हृदय
आ हृदय सँ मस्तिष्क धरिक
विषाक्त रक्त-परिसंचरण मे सराबोर!
अमाशय सँ छाती धरि मे
जारी अछि– गैसक महाविस्फोट!
व्यक्ति आ परिवारक अस्तित्व मे
जारी अछि, महाविस्फोटक महाप्रयोग!

विध्वंस, सृजन लेल

माथ, हृदय आ पेट मे
चलि रहल अछि सौर-सुनामी!
वस्तुतः हजारो वैज्ञानिक जेनेवाक
भू-गर्भीय टनेल मे
'ईश्वर-कण' केँ
मुट्ठी मे पकड़बाक
कऽ रहल छथि प्रयास
हकोप्रत्याश!
...आ 'ईश्वर कण' हाइड्रा-मशीन सँ दूर...
बहुत-बहुत दूर... ब्रह्माण्ड मे...
उतफाल विध्वंस लेल,
संत कबीरक हृदय मे...
उतफाल सृजन लेल,
...उपला रहल अछि, आनन्द-विभोर!

मुदा

मुदा, सम्प्रति, ब्रह्म खोज
जारी अछि!
मुदा सम्प्रति अंशक आत्म खोज

जारी अछि!
मुदा सम्प्रति व्यक्तिक सम्पूर्ण
परिचयक प्रयास जारी अछि!
वस्तुतः जीवन मे
महा-विस्फोटक
महा-प्रयोग
अनवरत जारी अछि!

•

महाकविक संग सीता-गाथा-मंथन

छलाह ओ समकालीन अहाँक
तँ छलीह ओहो समकालीन!
घटित भऽ रहल छल
दुनूक कथा, एक्कहि संग!
मुदा नहि लिखायल समानान्तर सीतायण!
तोड़ि नहि सकलहुँ, तथाकथित मर्यादाक मोहपाश!
थिक स्थानीय मर्यादा
प्रधान आ उपमेय?
कि सार्वजनीन, विश्व-मर्यादा, अनुकरणीय?
किएक मानल जाय अवधक मर्यादा के,
समस्त आर्यावर्त, सोलहो महाजनपदक
मर्यादा सार्वजनीन
प्रणय-निवेदन तँ भेटल छल
दुनू भाइ के असुर-सुन्दरीक?
कहाँ कराओल, अगिन परीक्षा
दुनू भाइ केर?
की एतेक कठिन अछि जगन्माता आ
गर्भ-प्रसूता-माता बननाइ, एक संग
की एतेक कठिन अछि सहधर्मिणी आ
पटरानी-राजरानी बननाइ एक संग
की सोलहो महाजनपद मे
नारी-सौन्दर्य आ आदर्शक प्रतिमान
छलीह वैदेही
ताजीवन वनवासे योग्य?
छलाह तँ वैह गर्भावतरित
छलीह वैदेही
ताजीवन वनवासे योग्य

संतापमय?
कोनो मिथि-पुत्रीक बन्द भऽ गेल
परिणय अवध सँ?
सुनयनाक बुमफाड़ किलोल सँ?
कार्य-कारण-सम्बन्ध मे तँ
परिणामक कल्याण-भाव
करैत छल
औचित्यक निर्धारण तहियो
छल दर्शन, तर्कपूर्ण तहियो!
गढ़ि चुकल छल, रूप आर्यावर्त्तक
सदानीरा-क्षेत्र आ गंगा-घाटीक
आर्यीकरणक विदेहमाथव-उपमान
छल अहाँक समक्ष विद्यमान!
व्याधाक लोहाक तीर!
हे करुणा-कवि!
क्रौंच-वधक करुणा मथि देलक
एतेक अहाँक संवेदना केँ जे
करुण-रस-आप्लावित पात्राक
सृष्टि भऽ गेल अनायासहि?
कि त्रेता-नारीक चित्रण सँ
देखेबाक छल समाज केँ अयना?
वैदिक आर्ष ऋचा वा गार्गी, मैत्रेयी
लोपामुद्रा सन मंत्रपुत्रीक आदर्श केँ,
त्रिदेव पर अनुसूयाक नैसर्गिक
स्त्रैण- स्वरूपक विजयक बावजूदो!
देवी-भागवतक महादेवी-सन आदर्श केँ
'महाकाव्यो-युग' मे चित्रणक उदात्तता,
नायक-सन, नहि दऽ सकलहुँ हुनका!
जे छलीह
अहाँक परम-शिष्य विदेहक सुता

की सोलहो महाजनपद
नहि डूबल वैदेहीक नोर सँ?
सुनयनाक हिचकी आ
सीताक हृदयक दावानल सँ
खकस्याह नहि भेल स्व-विवेकी
अवध के अविवेकी लोक?
बहु-छोड़ा केँ कोना देल अहाँ
'मर्यादा पुरुषोत्तम' नाम!
ठीके परम-धाम-गमन-योग्ये
छलाह नायक अहाँक!
शस्य श्यामला धरती-माताक
कोराक स्नेह-सौजन्य-योग्य
गुणशील-निधान
तँ छलीह वैदेही-मैथिली!
अदौ सँ बँचबैत अयलीह
अपन स्वाभिमान आ नैहरक संस्कार मिथि-पुत्री!
आ यद्यपि लव-कुश सँ मातृ-करुण-गाथा
दरबार मे गायन करबा कऽ
वा तीर-सन्धान करबा कऽ
ओकाति बताओल
अहाँ मर्यादा-प्रतीक के!
मुदा...मुदा छलीह ओ...
श्रीमद्भागवत-कथा-विशारद व्यास-पुत्र
शुकदेव मुनि के ज्ञान-प्रदाता
देह-अछैत-विदेहक पुत्री!
देवासुर-संग्राम-विजेता दशरथ-पुतोहु
महालक्ष्मी स्वरूपा केँ
वनक पात तोड़बा देल!
अपना स्वाभिमान-रक्षार्थ
साग तोड़ि कऽ गुजर करबाक

परम्परा चलबा देल!
अहाँक एक कलम सँ थोपा गेल परम्परा
मिथिलापुरी पर
गौतमक पितृ-सत्तात्मक
न्याय आर धर्मशास्त्रक!
गृह-सूत्र, बनि गेल धर्म-सूत्र
आर ब्रह्म-सूत्र!
कारण, छलाह अहाँक नायक ब्रह्म-स्वरूप!
भेलाह याज्ञवल्क्य-मनु मिथिला-मध्य-प्रधान!
बंग-धन्य!
मिताक्षर मातृ-प्रधान! तखन
रक्ष रहल जे, मिथिला मे नव्य-न्याय-प्रवाह
सदानीराक प्रवाह मे नीर-क्षीर-विवेक गवाह!
जे तीरभुक्तिक घर-घर मे, उपजबैत अछि 'तुलसी'
बिना ककरो 'दास' बनने!
शिव केँबनय पड़ैत छनि, 'शाक्त' एतय
अपन कृष्णा-श्यामा के पैर तर
निस्पंद पड़ल
देखने छलाह काली-लोक मे वेद-व्यास
महादेवीक तड़बा मे अंकित
श्रीमद-देवी-भागवत-कथा!
आ छलीह काली-स्वरूपा, जानकीए माता!
महाशक्तिक इच्छानुसार
लेने रहथि शिव राधावतार!
आ बनल छलाह स्वयं काली,
भगवान कृष्णा!
मुदा तकर ज्ञाता
जँ भऽ सकैत छलाह वेद-व्यास,
तँ अहाँ किए नहि हे महाकवि!
ई कोन चला देल परिपाटी

नायक चरण-रज-पूजनक, हे करुणा-कवि?
विचलन कोना भऽ गेल,
क्रौंच-वध-उत्पन्न करुणाक, राम-कथा मे?
आयल कहाँ रमणीक काव्य
सीतागाथा मे?
भरि देल कारुणिक विलापे-विलाप
सीताक हृदय
आ आँखि मे जीवन मे?
सुझावे छल नारद-मुनिक 'राम-निष्ठ'!
कऽ देलनि ओ परब्रह्ममक
लिंग-परिवर्तन रामावतार लेल!
संन्यासी केँ गृहिणीक शक्ति-अवतार
नहि छल मंजूर!
नारद-मुनिक शक्ति-निष्ठ सुझाव सँ
रहितय स्वरूपे दोसरे आइ,
अहाँक महाकाव्यक!
रहितय जीवन दोसरे आइ
मैथिली आ मैथिलानीक!
विचलन-दोषी नारद-मुनि,
तऽ सर्जक सेहो दोषी!
कोना नहि पठाओल सर्जक, सुनयना-विदेहकें
'जिज्ञासा' मे सीता केर?
वन केर 'अप्पन गुरुदेवक' आश्रम मे?
...तखन, जनैत अछि मिथिला अपने,
अपन गोसाउनिक-गौरीक पूजन!
होइत छै, तकर उपरान्तहि
गामक डिहबारक पूजन!
तेँ एखनहुँ नहि व्याहल जाइत छथि
कोनो मिथिलापुत्री अवध मे
करय अवध गल्ती-स्वीकार!

सुनयनाक नोरक संतापेँ
वंचित अछि अवध
मिथिलाक संस्कारी पुतोहु सँ
वस्तुतः बहुत छैक दायित्व!
साहित्य सृजन
पात्र आ चरित्र-सृष्टि-निर्वाह मे!
काल-निर्णय
प्रायः नहिएँ होइत छै समकालीन!
कए कल्पक बादेक पीढ़ी
प्रायः मूल्यांकन मे
रहैत छै, कड़े-कमान!

•

चन्दन-वन मे साँप

मोहन-जो-दड़ो भेल करैत छल-मुर्दाक ढिमका!
नाम पड़ि गेल छल-एकटा स्थानक!
मुदा शब्दक अर्थान्तरन्यास होइत-होइत
भऽ गेल स्थानक नाम सभक स्थान-विपर्यय!
मोहन-जो-दड़ो नहि रहल
मोहन-जो-दड़ो मे!
हड़प्पा नहि रहल
हड़प्पा मे!
प्राचीन सभ्यताक अवशेष सभक
भऽ गेल अर्थान्तर न्यास सँ स्थान विपर्यय!
सभ मिलिकऽ समेकित रुपेँ
बनि गेल केदार-घाटी आ बद्री-खण्ड!
सभ मिलिकऽ समेकित रुपेँ
बनि गेल कश्मीर-घाटी!
कोनो 'प्रकृति-कोप' सँ आयल छल!
कतहु 'मानव-कृपा' बथायल छल!
'मुर्दाक देस' बनि गेल
केदार-घाटी!
कश्मीर-घाटी बनि गेल
मोहन-जो-दड़ो!
मोहन-जो-दड़ो सिन्धु घाटी सँ उठि कऽ
आबि गेल झेलम-घाटी मे!
हड़प्पा,सिन्धु घाटी सँ उठि कऽ
आबि गेल केदार-घाटी मे!
मुर्दाक ढिमका सभ
बद्री-खण्डक पहाड़ी बनि गेल!
मुर्दाक देस बनि गेल

अतीतक आर्यावर्त्त सँ
वर्त्तमानक भारतवर्ष धरि!
साधो, ई मुरदा केर देस!
साधो, ओ मुरदा केर देस!
साधो, सभ मुरदा केर देस!
बद्रीखंडक बैरक वन मे
धर्मक लहास फड़ैत-फड़ैत!
केदारनाथक नोर सँ रुद्राक्ष नहि
लहास झड़ैत-झड़ैत!
बद्री-नारायणक विराट-रुप मे
नर-नारी ग्रास बनैत-बनैत!
केदार-खण्ड आ सप्रसैंधव मे
केदार हिम-नद, तांडव करैत-करैत!
मन्दाकिनी-अलकनंदा सँ हिम-गिरि
'झेलम-झेलम' खेलाइत-खेलाइत!
राजनीति अनदीनो दीपावली
मनबैत-मनबैत!
कूटनीति शोणित सँ
दीया बारैत-बारैत!
प्रशासन अपन 'सहस्रबाहु' सँ
विकासक नामें विनाश करैत-करैत!
ऊखी-मठ सँ जोशी-मठ धरि
गौरी-कुण्ड सँ रामबाड़ा धरि
नोर जमि कऽ बर्फ बनैत-बनैत!
गंगोत्री सँ यमुनोत्री धरि
बर्फ गलि कऽ नोर बनैत-बनैत!
अनाथक थाड़ी मे सहानुभूतिक
बर्फ सँ सनाथ करैत-करैत!
मसोमातक थाड़ी मे पुनर्वासक सपना
बर्फ-बर्फ!

परिवार-उकन्नन मे, खड़ाँतक सपना
बर्फ-बर्फ!
संयोगवश बाँचल,एक अभागलक कटोरा मे
भाषणी मुआवजाक बर्फ-बर्फ !
बर्फक शिला सँ पिचड़ा-पिचड़ा
हेमाल-हेमाल मानवक वंशज!
हनुमान-चट्टी सँ रामबाड़ा धरि
हिम-नद मे बहैत धर्मार्थीक वंशज!
फाटा सँ उड़ैत, अलकनंदा मे खसैत
अलकनन्दा मे हेलैत, मन्दाकिनी मे डुबैत
ऋषिकेशक लक्ष्मण-झूला मे अरड़ा लगैत
मोक्ष मंगैत हरि-द्वार मे!
देवभूमि मे धर्मक पथ पर
किलोल करैत प्रेतात्मा !
प्रेतात्मा किलोल करैत
पितरात्मा मे रुपान्तरण लेल!
पुण्यात्मा द्वादशा बिना बनि गेल
माँछ-मासु
झमैया खसैत श्वेतवर्णी
कुकुर-कौआ आ गिद्धक!
श्वेतवर्णी कुकुर-कौआ आगिद्धक
मंत्रिमंडल के बैसार केदारनाथ-प्रांगण मे!
श्वेतवर्णी नागवंशीक आमसभा
श्रीनगर मे, झेलम-तट पर!
कतहु बदलल कुर्सी, कतहु नहियो
कतहु हिलिकऽ रहि गेल, कतहु नहियो,
ने बदलला सँ अन्तर पड़ल ने हिलला सँ
ने गंगा-युमनाक फराक-फराक
उद्गम सँ पड़ल अन्तर!
आ ने प्रयाग केर संगम सँ!

शाही इमाम आ शंकराचार्यक
निकलैत रहल फतवा आ फरमान!
उत्तराखण्डक श्रीनगर हो वा कश्मीरक
लागैत रहल मुर्दाक करमान!
नदी-घाटी-सभ्यताक विनाशक
होइत रहल अनुसंधान!
झेलमक ललका पानि सँ
सैंधव-नोनक होइत रहल निर्माण!
नदी-घाटी-सभ्यताक
होइत रहल अवसान!
सभ सरकार एके रंग
करैत रहल
आपदा प्रबंधन विभागक कल्याण!
मोहावरा, केदार-घाटी! मोहावरा, बद्री-खण्ड!
मोहावरा, कश्मीर-घाटी!
मोहावरा, श्रीनगर खण्ड!
मोहावरा, कार्बन-उत्सर्जन!
मोहावरा, हरियर-घर-प्रभाव!
मोहावरा, पर्यावरण-सम्मेलन!
मोहावरा, तेसर दुनियाँक अभाव!
मोहावरा, खाद्य सुरक्षा अधिनियम!
मोहावरा, भरि पेट भोजन!
मोहावरा, गरीबक जीवन!
मोहावरा, तीसीक तीमन!
मोहावरा, शेयर-सूचकांक!
वस्तुतः मानव विकलांग!
मोहावरा, जन्म-दर-नियंत्रण!
वस्तुतः मृत्यु-दर-निमंत्रण!
मोहावरा, अलख निरंजन!
मोहावरा, सब दुःख भंजन!

उत्तराखण्डक चन्दन-वन मे
साँपे-साँप
बाप-रे-बाप!
धरती-स्वर्गक चीरक वन मे
साँपे-साँप! बाप-रे-बाप!
झेलम-मन्दाकिनी-अलकनन्दा मे
पनियाँदराध! बाप-रे-बाप!
उजरे रंगक सोंस-घड़ियाल आ
पनियाँ-दराघ! बाप-रे-बाप!
कूदि-कूदि कऽ नदी-नदी केर, धारा टपैत
उजरा साँप! बाप-रे-बाप!

'अहि चन्दन लपटाय रे!
तैओ की तकर गुण जाय रे?'
साँप-नन्दन-वन सँ
चन्दन-वन धरि, क्रन्दन गढ़ैत!
साँप-घर-आङन सँ
तन-मन-धन धरि, सबिक्ख करैत
साँप-उद्योगक सड़ाँध
हिम-नद मे बोकरैत!
साँप-उजरा केंचुआ मे
पवित्र हृदय लग बोकराती छँटैत!
साँप-अपन वज्रदंत सँ,
चन्दन-वृक्ष पर
कुरहड़ि बजारैत-ठाँय! ठाँय!
साँप-झमैया खसैत वन-पंछी केँ
खलिया बन्दूक सँ
डेरबैत-धाँय! धाँय!
साँप-चन्दन-वन मे दावानल
केर निविदा लैत-हाँय हाँय!

साँप-विदेशी-बैंकक सुआदो लैत
आ पेट कुड़िआबैत-खाँय-खाँय!
साँप-समस्त प्रदूषणक थल्ला लगबैत
चन्दन-गाछक जड़ि मे!
साँप-ढोंढ़िया-धामन-जेड़ पसारैत
बड़द-गाइक थड़ि मे!
स्वदेशी साँप विदेशी साँप!
प्रजाति-प्रजातिक साँप!
साँप-जाति आ धर्म-प्रजातिक!
साँप-कुल आ मुलगाइनि प्रजातिक!
साँप-भूमंडलीकृत
उत्तर-भूमंडलीकृत!
केंचुआ उतारैत, चोला बदलैत!
रंग-विरंगक!
साँप-बगुला-वर्ण मे सह-सह करैत!
साँप-मूसक बिल दफानि कऽ वास करैत!
साँप-'पातालक पानि पियाबैत' धरती केँ!
साँप-गगन-विहारी बनि
धरती पर शासन करैत!
साँप-विक्ख सँ चन्दन-वन केँ
सबिक्ख करैत!
साँप-बिक्खे सँ
नन्दन-वन केँ भस्मीभूत करैत!
साँप-आर्य-अनार्यक माला जपैत!
झगड़ा फंसबैत-दंगा करबैत!
साँप-अप्पन गोटी सुतारैत
उत्तराखण्ड सँ कश्मीर धरि!
केदारनाथ-भाल-अवस्थित-हिम-सरोवर सँ
गोमुख आ गंगोत्री धरि!
साँप-सरस्वती-उद्गम, व्यास-गुफा सँ

झेलम-सप्तसैंधव-प्रदेश धरि
अपन गोटी सुतारैत
जेहाद आ अजानक नाम पर!
हिन्दू आ मुसलमानक नाम पर!
हदीस-कुरान आ वेद-पुराणक नाम पर!
सप्तसैंधव आ केदार-खण्डक हिम-नद मे
'संखिया'-माहुर उगिलैत-कारी-कारी!
लोक-निर्माणक नाम पर !
अल-हिन्द-संतानक नाम पर!
केदार-खण्डक हिम-नद ढिमका
बनि गेल मुर्दाक टीला!
सर्द नरक भेल, धरतीक स्वर्ग!
रौरव-नरक, बनल देवभूमि!
मोहन-जो-दड़ोक, होइत-होइत अर्थान्तरन्यास
स्थान-विपर्यय भऽ गेल हड़प्पाक!
कालीबंगा आ लोथल
नहि रहल अपना ठाम पर!
देवभूमि आ स्वर्ग-भूमि मे
डूबि गेल सभ्यताक अवशेष!
पनिबिजली-परियोजनाक, जल-भंडार मे
चन्दन-वन केर चन्दन-वृक्ष सभ
भेल सबिक्ख
स्याह-स्याह!
नन्दन-कानन, नागवंशीक गछाड़ मे
छट्ट-पट्ट करैत रहि गेल
शताब्दी चलि गेल!
कोनो साँप नहि सुधरल
चन्दन-वनक सुवास सँ!
पिबैत रहल, चन्दन-वनक सुवास
आ छोड़ौत रहल, बिखाह-वायु!

बिखाह वायुक रक्तचाप सँ
मारैत रहल लकवा-पक्षाघात
नन्दन-वन सँ चन्दन-वन धरि!
सप्रसैंधव सँ पंच गांगधारा धरि!
के वीर नोति आनत
गरुड़ महाराज केँ?
गरुड़े महाराज केँ
कोन व्यग्रता छनि
नागवंशी सँ अराड़ि मोल लेबाक?
लोक-चन्दन-वृक्षक-तस्करीक संस्कार सँ
ग्रसित अछि-मुर्दाक देस मे!
तेँ साधो, ई मुर्दा केर देस!
तेँ, क्यो गरुड़-सन्धान मे
छिछियायत किएक आसमान मे?
संभवतः लेताह नारायण
कोनो अवतार कहियो!
ताही भरोसे निश्चिन्त अछि लोक
नन्दन-वन मे!
चन्दन-वन मे!
देवदार आ चीरक वन मे!
धरती पर उतारताह, स्वर्ग कहियो
केदारनाथ-बद्री-नारायण!
ता... ठिक्के छै!
की भाइ?

•

क्षत-विक्षत-अस्मिताक महाद्वीप

कटु यथार्थ

व्यंग्य करैए, 'उत्तर-भर'(?)
लंके-लंका 'दक्षिण भर'(?)
नीक लोक कतौ करय कुटमैती
'दक्षिण भर'?
'पंचकोसी-दसकोसीक छान-पगहाक
अभिजात-गछाड़ मे छड़पटाइत
अछि मिथिला-समाजक लोक
से सोचय, बरमहल 'दक्षिण भर'!
अधखिज्जू डाइनि जकाँ बड़बड़ाइत
गुनझिक्कू 'उत्तर भर! उत्तर भर!'
नेपाल कहय-'हम सभ सँ उत्तर!'
पूरा तथाकथित मिथिला
हमरा सँ दक्षिण!
तेँ आजुक तथाकथित मिथिला भेल
'दक्षिण भर-दक्षिण भर!'
'दक्षिण मिथिला' टनकि केँ बाजय
'हम बड़हिया-अंग सँ उत्तर!'
'तेँ हम उत्तर भर! उत्तर भर!'
हमरा के उत्तराहा
बोलतै दक्षिण भर?
हम्में कोनो मुडेरिया छिकियइ?
गंगा मइया पाप-धोरिणी, दक्षिण भर?
हमरा सभक कुटमैता
सभ्भे उत्तर-भर? तखनी हमरा
के सभ बोलतै, दक्षिण भर?

सामाजिक सरोकार

मधु-वन(?) बुझैए यथार्थ, द्वार-बंगाक(?)
द्वार-बंगा(?) बुझैए यथार्थ
'मधु-वनक' गौरव-बोधक(?)
ओना दुनू ठामक
बुद्धिजीवी छथि बारल
अपना-अपना ठाम मे
अपन-अपन समाज सँ
अपने समाजक कारणें!
हमर बाट भंगा
हम नहि द्वार-बंगा!
हम भंगक रंग तरंगा
हमरा लस्सीक गिलास मे रंगीन गंगा!
पाल-नरेश के 'द्वार-बंगा'
ने बंगक द्वार बनल कहियो!
'काबिल-गाम के काबिल सभ
कबिलैती छाँटय
अपने गट्टी, भरि पनबट्टी!
मिसर-गच्छ मे मिसरी-ढेपा'।
धनि द्वार-बंगा, दोहरी अंगा!
दिल्ली सँ गुड़किल्ली आयल
समस्त मिथिला-समाज 'घायल'!
एकटा गाम 'सुभंकर' बूझय
ओलंपिक केर अपना के!
आफन तोड़ैत दिल्ली-पटना
मिसरी-ढेपाक सपना मे!
तरू-वनक 'बाबू-भैयाक' की हो गप्प?
'यात्री' केर चर्चा नदारद,
राइफल-सलामी 'नाग-अर्जुन' केँ!

तिनका 'ग्राम-गौरव' कहि
भजेबा मे कोन हर्ज? 'शास्त्र-भ्रष्ट-कवयोः बदन्ति'
पावर-पाइ मद-मत्त गाम मे
ककरा कोन छै गर्ज?
विद्रोह-परंपरा 'ध्वस्त'
'जगतारनि' आइयो पस्त!
'तरू-वन' मस्त!
बाँकी सभटा 'ग्राम्य-दोष'
ओहिना-केँ-ओहिना!
तहिना छल-प्रपंच-मोकदिमा
'एडभान्स-गाम' फल्लां मे!
भोरे-भोरे कहू 'चिल्लाँ' गामक
नाम लेल जाय?
'गजपटहा' गामक नाम लेने'
अन्न-जल कहाँ, सूर्जनरेन अछैत?
फल्लाँ-गाम, भुस्सावल्ला गाम!
रामहि जी राम!
चिल्लाँ-गाम त' छोटी-पटना!
छोटकी मुम्बई!
फल्लाँ गाम त' 'राधे-राधे'!
दिना-दिष्टी 'बाधे-बाधे'!
चिल्लाँ-गाम, एक सय एगारह
नंबर केँ चानन
जय श्री कृष्णा! जय श्री कृष्णा!
गरा मे कंठी, तुलसी-माला!
घराड़ी कब्जा, हाथ मे भाला!
फल्लाँ गाम, बड्ड एडभान्स!
जँ भेल विवाह तऽ ओतय
बोझ संग भेटत आँटी!
सपनो मे चिचिऐब–

हमर अछि, 'खाँटी-खाँटी'!
पूर्वाग्रह-पर-पूर्वाग्रह!
आकंठ डूबल कु-धारणा मे,
समस्त मिथिला-समाज!
भनहिं विद्यापति, सुनू शिव जोगिया,
भौतिक सुख सँ काज!
स्वार्थेक सगरो राज!
हमरा रस केर यारी नामी
हमरा चाही रसक इयारी!
हम्मर सगरो 'डाक' बजैए
हम अपने मे 'टर्र'!
'मिथिला-राज' वला, फल्लाँ झा के? मर्र!
मुदा ग्राम-गौरव-गाथा(?) मे
हुनका अप्पन मानी!
मूल-गोत्र, बेटा-टाका मे
खाली बस्स हम जानी!
पाँजि-गोत्र-कुल-मूल
केर गेंठ बन्हैत
हकोप्रत्याश सोलह-संस्कारक भोज-प्रधान
सड़ल पोथाक लुगदी-लुतड़ी
हरिसिंहदेवीक पन्ना
खण्ड-खण्ड सामाजिक सूतक
मैथिल फसल मरहन्ना!
की कहियऽ हौ जग केँ वासी!
सुन्नर हमरे गाम छै!
हम्मर इतिहास छै, छल-प्रपञ्चमय!
घेंट-कट्टा-कट्टी, टंग-घिच्चा-घिच्ची
महान छै!
जड़-कालीन सामाजिक शोषणक
तानी-भरनी मे

गछाड़ल आधुनिक संस्कार!
'उत्तर-आधुनिक' माला जपैत
नव-सामंती जन-संहार!
वैज्ञानिकता स्वाहा करैत
लेभी लगबैत नक्सल-सरकार!
हे महान मिथिला समाज
हे महान मैथिली समाज
यैह थिक अहाँक सामाजिक सरोकार?...?...?

पंचकोसी-दसकोसीक टिरबी

अपन खूनी वीरगाथा बखानैत
लठिधर-भाला-गड़ाँस-हँसेड़ीवला गामक-गाम!
'सोनदाइ क' चिट्ठीक हरियर आखरक
स्वादहीन रसपान करैत गामक-गाम!
वंश, खूट-मुलगाइनक मैथिल अतिवाद
मे ओझरायल
मधुर-राग लए लालायित
नीरस गामक-गाम!
सभ चुनाव मे खोजैत अछि-स्वजातीय नेता!
राजनैतिक ठिकेदारी सँ
बनल नव-सामंतक हाथें
मेंह मे हाथी बान्हल जेबाक
दंभ सँ सकनाचूड़! मिझायल छाउरक तर मे पायब
कह-कह आगि भुम्हूर!
कनहा नक्षत्र मे फुलकी उड़ैत
सपना सिम्मरक तूर!
बाबूए साहेबक हाथीक सूँढ़ सँ
पंजी-प्रबंधक संवर्गीय पन्ना सभ केँ
फाड़ि-फाड़ि कऽ उछालैत आसमान मे

बाङक रूइया बनल-मकठी-मकठी!
हवा मे ओझड़ाइत
हवे मे उड़ियाइत
गुदड़ी-चेथड़ी पन्ना! पन्ना!! पन्ना!!!
फल्लाँ ड्यौढ़ी, ऐंठल-जूठल जुन्ना!
छँटैत बाबू साहेबी ठाठ!
दही-चूड़ा, तसखेली
खैनी-गुटखा पर
भोतिआइत बाट!
पंचकोसी-दसकोसीक सम्भ्रान्त-समाज
नितराइत-नितराइत भऽ गेल अतीतजीवी!
बिसरि कऽ नैयायिक
महामहोपाध्यायक सामासिक-तंत्र
भऽ गेल चिहुँटल परजीवी!
'टिरबी' मुदा आँखि केँ झँपने
हम फल्लाँ झाक पाँजि! बड़का धाड़े झा!
हम छी चिल्लाँ गाम!
जाह एकैसमो शताब्दी
अपने रस्ते, ग्लोबल ग्राम!
'पिजड़े मे सूगा'—सीताराम!
महाराजाधिराजक तथाकथित गौरवक(?)
स्मृति-चेन्ह-पर्यन्त मेटा गेल!
विकृत वायुमंडलक प्रदूषण सँ!
संग्रहालयोक चिन्ता नहि
कोनो वंशज मे वा अपन-परार!
ने नव-सामंत, ने कोनो मुखमंतरी मे
जनमानसक चिन्ताक प्रतिकार!
मुदा आयाराम-गयाराम दशकक-दशक!
अनेरो बरसाती बेङ जकाँ
टर्र-टर्र करैत

दर्जनक-दर्जन, ठप्पामार सरकार!
पंचसैय्या पर, बिकाइत भोटर!
परिवारक परिवार, ताड़ी-खैनी-चिलम पर
खसैत-बनैत गेंठबन्हन-सरकार!
भनहिं विद्यापति सुनू हे
ओहीठामक ओहीठाम, जड़ समाज!
ककरो ने कोनो टा लाज!
खाली अपने स्वार्थ, अपने टा काज!
जाथु मिथिला-देसम गताल खाता मे!
जाथु मैथिली-समाज तेलहंडा मे
की गौरव? कथीक टिरबी?
सबसँ सुन्दर हमरे गाम(?)
सबसँ सुन्दर पहुन-पदौने आम?
सगरो गाम मोकदिमेक मचान!
मसोमातक 'घराड़ी' आ
'इज्जति' पर नाच-गान!
पंचकोसी(?) दसकोसी(?) सम्भ्रान्त समाजक(?)
कौलिक गौरवक(?) टेढ़ी(?)
घोंसरि गेल, अन्तर्जातीय विवाह मे!
घोंसरि गेल, अन्तर्धामिक विवाह मे !
मुंडन-उप-नयन-एकादशी-यज्ञ!
रसगुल्ला-लालमोहन-भोजे-भोज!
श्राद्ध बनल कर्त्ता-पाचकक
परिवार-उकन्नन, सोझे-सोझ!

मिथिला-देसक दशा-काल

'ग्राम्य-गौरवक' टेढ़ी(?) खपि गेल!
'ग्राम्य-दोष'क अम्बार मे! जातिवादी-चुनावक जलसा
नेपालक बीयर-बार मे!

फल्लाँ-न्याय मे! चिल्लाँ-वाद मे!
नव्य-न्याय मे, मत्स्य-न्याय!
आब कहाँ जाउ, भाइ यौ भाइ!
मीनाक्षीक रूप निंहारिते रहि गेला
राजा फल्लाँ सिंह!
आँचर घीचि कऽ लऽ पड़ायल
गुण्डा जम्बो खान!
विकासक होइते रहि गेल
अनुसंधान-पर-अनुसंधान!
किर्री कहाँ बनल फोंका मखान?
जेबी आ गलफड़ फाड़ि गेल
बंगाली-पत्ती मीठा-पान!
विकासक कुञ्जी लऽ पड़ायल
कौआ सबहक एम.पी.एमेले!
सभ अपने मे नितराइत!
छुच्छ नखड़ा बतियाइत
जाति-पाति केँ छिटकी पेंच-विशेषण-बेलगाम!
मिथिला केर मिथिलाम!
गीदड़क चाभल मह-मह आम!
मिथिला भेलीह शिथिला!
सिङार-पेटार गेल तेलहंडा
अयना चूड़म-चूड़!
काल्हुक मेंहीदाना लड्डू
मुङबा-मोतीचूड़!
आजुक पीढ़ीक आक्रोश लह-लह!
कह-कह आगि भुम्हूर!
गौरव मातल, स्मृति-भासल!
अनगिन गाम, भोजने मे नेहाल!
अपने-अपने लत्ती-फत्ती मे बेहाल!
नव-नव सरंजाम गढ़ैत

नव नोंतक इंतजाम करैत
माँछक कुट्टा, मासुक बुट्टा
रसगुल्ला-टाका-बेटा मे
मदहोश!
इनभर्सिटी गेट पर भाङक
रंगीन लस्सी मे बेहोस!
'बूड़ि'-विशेषण सँ पीड़ित!
कनियाँक गुटखा, बेटाक ताड़ी नीरा
नेपाली-बीयर-प्रेम सँ उत्पीड़ित!
गंजी खोलि, पाँत मे बैसल, घंटाक-घंटा
भोजन-भट्ट-बबुआन!
अभिजात ब्रिटिश सरकार!
बाइस गामक जयवार!
'माँछ-मासुक' पराते
खेत लिखौनिहार!
हाथी चलि गेल, सिक्कड़ बकुटने
नव-सामंतक जन-तंत्री-सरकार!
ने ओ देवी, ने ओ कड़ाह, सभ सुड्डाह!
ई ड्यौढ़ी, ओ ड्यौढ़ी, ओ राज-परिवार!
ने 'सिंहक' कतहु 'बाड़ा'— सिंह-बाड़ा! ने गोनू-गप्प-वीर,
आ ने भट्ट-वीरक अखाढ़ा-भर-बाड़ा!

अतीत-गाथा बनाम वर्त्तमान-कथा

ने मिथिला-राजक 'प्रसाद' बिलहैत
'जानकी-नगर'
ने तऽ मधु सँ भरल
माधवक मधुपुर-गाम!
ने तऽ 'सिंह-नाद' करैत
बाबू फल्लाँ नन्द सिंह!

ने तऽ मेघ-मल्हार गबैत
कुमार फल्लाँ नन्दन सिंह!
राग बागेश्वरी केँ खेहारैत
राग भैरवीक उदास पराती!
'कखन हरब दुःख मोर?
कनैत, स्वयं भोलानाथ!
भोर-साँझ, मिथिलाक
गामक-गाम! हे राम, हे राम!
दिशाहाराक रक्त सँ दुलेब रंगल
किला सभक 'मैरून' रंगक देबाल! रक्तवर्णी
शीश-महल मे सजायल
शिकार कएल बाघक खोल मे
कस्सल भुस्सा जकाँ आम जन!
कए पीढ़ी सँ, कए कल्प सँ!
बाघक पेट मे औनाइत, कए मन्वन्तर सँ!
सनगोहिक 'दहेज-पेट्टा' मे औनाइत
सौराठ-सभा-गाछी
शिव-मन्दिर पोखरि!
किला सभक कत्थइ रंगक देबाल
दकचल-दकचल!
चम्पावतीक चम्पा फूलक
पंखुड़ी, कपचल-कपचल!
श्रीहीन नगरक
श्री-महलक भग्नावशेष!
नौलक्खा-राजमहलक सिंह-द्वारि पर
हाथीक पद-चाप तर, शोणित बोकरैत
राज-मैनेजर!
राजा बहादुरक विदेसी
बन्दूक सँ सिल्ली बनैत
कए पीढ़ीक जुआनी! गढ़-ध्वस्त फल्लां-राजक

अवशेष मे चिचियाइत आइयो
'मरीचिका-भ्रमित', राज-पीड़ित
एक महारानीक प्रेत-छाया!
शीश-महल केर भाङल शीशा
अनगिन रानीक, अनगिन खंडित चेहरा!
गंगासागर पोखरि, पानि-विहीन, कुंभी-पीड़ित!
दिग्धीक पानि प्रदूषित
खौलल-खौलल इनहोर!
हजारो 'रजोखड़ि' भत्थन 'पोखड़ा'!
लाखो शिवसिंह, पथभ्रष्ट छोकरा!
समस्त मिथिलांचल मे बजार खोजैत
छिछियाइत फोंका-मखान!
अपन भावक अभावें
चिचियाइत 'गिलेसन बजार' मे!
औनाइत नव-रात्रि-सँ-नवरात्रा धरि!
छिछियाइत चतुर्माष्या धरि!
बलि-प्रदान सँ बलि-प्रदान धरि!
कोजागरा सँ कोजागरा धरि
गुदड़ीए-गुदड़ी ढहनाइत
बेचारा देसी-पत्ता, कुड़कुड़ छोटका पान!
मैथिलक मुँह सँ, झूठक संग
बाहर फेकेबा लेल आतुर, जर्दा-पीक!
बजार छेकने नितराइत, मीठा-पत्ता पान!
कमला-कोसीक काते-काते
पड़ाइत देस-विदेस
भाव खोजैत, पेठिया-पेठिया!
मिथिला-मधु-वन-पेंटिंग
साग-भाँटाक दाम!
हा हन्त, हा राम! हा हन्त, हा राम!

विकृत दंभ

समष्टि सँ वंचित, व्यक्तिपूजक समष्टि-पुर!
अपने लोकक नर-हन करैत
गंगा-कड़ेह-प्रक्षेत्र!
'अलंकार तत्सम' मे साहित्य(?) सजल-सजल!
संस्कृत-शास्त्रीयता सँ जन-वाणी
विकल-विकल! जीर्ण-काव्य-परंपरा मे
गंथैत तुकबन्दी महकारी! आ तत्सम-गुल्लड़ि
फोड़ने, बीया कारी!
जीवन-काव्य-प्रवाहक गरदनि मोकैत
लोक-धारा केँ ग्रसैत
जड़मति काव्य-शास्त्री!
अर्थहीन तुकबन्दी सँ, अर्थोपार्जन करैत
कविकाठी-भाट-रसशास्त्री(?)
स्थानीयताक दंभ सँ रूग्ण!
मिथि-ग्रामक निवासी!
व्यवसाय-गीत आ छन्द-बन्ध
सँ ठकैत, सोमरस मातल
तथाकथित दक्षिण-मिथिलाक'प्रवासी'!
कए दशक केँ, तमाकुल जकाँ
ठोर तर दबने
राजनीतिक प्रतिनिधिगण!
कए दशक केँ, काँख तर दबने
तिकड़म रचैत
साहित्यिक प्रतिनिधिगण!

आत्म-गौरवक भ्रम-जाल

कोसिकनहाक(?) अलगेवितान!
हमर दर्द के बूझत? कोसी-बान्ह?

कोसी-धांगल बाध-मचान!(?)
मुदा हमर शास्त्रार्थ(?) विश्व मे नामी!
चुप माहिष्मती! हम चौगमियाँ कलामी!
चुप! शास्त्रीयता, कर्मकाण्ड हमर!
अद्वैत आर मीमांसा हमर!
मंडन आर भारती हमर!
घंटा आर आरती हमर!
ब्रहम-सिद्धि
विधि आ भावना-विवेक हमर!
तारो माइ हमर! बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईं हमर!
लोड़िको हमरे! हम्मर परतर के करत?
हमहीं माहिष्मती, हमरे वन के गाम!
कारू खिड़हड़ि हमरे! बजलें एक शबद?
बौद्ध-सर्किट, गाँधी-पथ हमरे!
माङनि खबास हमरे!
कोसीयो महासेतु हमरे!
ई हमरे, ओ हमरे!
ओहो हमरे, सेहो हमरे!
चम्पावतीक हजार शिकार-कथा हमरे!
'वेदानन्द विनोद' हमरे!
संगीत-चैम्पियन हमरे!
सभ किच्छु हमरे! हमरे-हमरे-हमरे!!!

उतरा-चौड़ी

हम डीही, तोँ पाही!
तोँ गंडा, हम गाही!
तोँ सेर, हम सवा सेर!
तोँ कूड़ी, हम ढेर!
इह, बड्ड भेलाहए, कोसी के ओइ पार!

इह हम्मर परतर करता, कमला के अइ पार?
हम झाँपल, तोँ उघार!
हम दियाद, तोँ भगिनमान!
तोँ तरेगन, हम दिनमान!
हम पुरबाहा, तोँ पछिमा!
हमहीं संकल्प, हमहीं दक्षिणा!
हम शुद्धा, तोँ प्रपंच रचनिहार!
तोहर विशेषणक, हमही टा आधार!
लेलही तऽ आरक्षण बच्चा!
आब दलित, महा-दलित दू टूक!
हम 'सरकारी जाति', तोँ शंख फूक!
हम पावर मे, तोँ बधिर-मूक!
हम टिटही सन, टेकल अकास!
तोँ भगजोगनीटा के प्रकाश!
हम मंतरी, तोँ संतरी!
हम ज्योतिषी, तोँ तांतरी!
हम हवाक रूखि के जानी,
तऽ तोरो 'अपने' मानी!
हमरा मे अमृत जोग!
तोँ खटहा, हम कृष्ण भोग!
तोँ बाहा-पह, हम गंगा!
तोँ गंजी-तंजी, हम अंगा!
हम सह-रसा, तोँ द्वार-बंगा!
हम द्वार-बंगा, तोँ सह-रसा!
तोँ कालापानी, हम अगरजानी!
हम दीदी-दादी, तोँ दूरक नानी!
हमर अयाची, गौतम हमरे!
वाचस्पति-उमापति-भामती हमरे!
याज्ञवल्क्य-विद्यापति हमरे!
राजा सलहेस-दीना भदरी हमरे!

कालिदास हमरे, गोनू झा हमरे!
तोहर के? तोहर के?
जेहो भेलखुन, 'तेहनाहे' सन!
कोनो 'तेहेन' सन नहि!

विकृतिक चरमोत्कर्ष

आत्म-गौरव मे लीन समाज!
'गौरव-बोध' सँ 'ग्रस्त' समाज!
क्षेत्र-स्थानीय रोग सँ
रूग्ण समाज!
आत्म-निरीक्षण
आत्म-मूल्यांकन सँ दूर!
आत्म-प्रशंसा सँ
ततबे मजबूर!
'अहोरूपं महो-ध्वनि'!
'एकोहं द्वितीयो-नास्ति!'
आत्म-मुग्धताक
बाढ़ि सँ भरपूर!
आत्मा लोचन सँ
ततबे दूर! ततबे दूर!
आत्म-स्थापना मे
लीन-साहित्यिक संवर्ग!
आत्म-विवेक सँ दूर
बुद्धिजीवी-वर्ग!
परम्परा केँ अपना स्वार्थें
शोषण करैत!
अनकर धन-बीत सँ
अप्पन कोठी भरैत!
एकटा डूबैत भूखण्डक

पतित लोक-हुजूम!
विद्या केँ भजाबैत
गप्प केँ
शिखर गुटखा जकाँ चिबाबैत
खट्टर ककाक कठपिंगलवाद मे
हरदम पेटे कें भजारैत
अपन फरीक केँ टाङ
घीचि कऽ बजारैत
छिटकी आ 'धोबिया-पाट'-प्रेमी
हम मैथिल महान!
हमर मिथिला महान!
सय मे नब्बे बइमान!
दाग लागल चौठी के चान!
हम छी भौगोलिक-राजनैतिक
अस्मिताक लेल, हाकरोस करैत
कोनो उद्धार-कर्त्ताक बाट जोहैत
क्षत-विक्षत अस्मिताक-महाद्वीप!

•

औपचारिकताः लेखकीय नेत, कोनो समुदाय, क्षेत्र, व्यक्ति, गाम, आदिक भावना केँ आहत करब नहि थिक। कविता मे प्रयुक्त नाम, मोहाविरा, फकड़ा, कहावत आदि जनमानस मे, पूर्व सँ स्थापित पूर्वाग्रहक, संकेतक थिक।